

शोधनिर्देशक  
रामप्रसाद गुरागाई  
उप-प्राध्यापक

## के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र  
सङ्कायअन्तर्गत महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम

नेपाली विभागको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको

दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि

प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी

रामकला कार्की

क्याम्पस द.नं ०६५/०६७ (२००८ई.सं.)

परीक्षा क्रमांक १०००९/२०६९ (२०१२ ई.सं.)

त्रि.वि.द.नं ६-१-२०१-३३-२००३

महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस

नेपाली विभाग, इलाम

२०७१

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय

महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम

## स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय अन्तर्गत महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम, नेपाली विभाग, छात्रा रामकला कार्कीले स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि तयार पार्नुभएको के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान शोधपत्र सोही प्रयोजनका लागि स्वीकृत गरिएको छ ।

### मूल्याङ्कन समिति

| क्र.सं. | नाम  | हस्ताक्षर |
|---------|--|-----------|
| १.      | श्री रामप्रसाद गुरागाई<br>विभागीय प्रमुख, नेपाली विभाग | .....     |
| २.      | श्री रामप्रसाद गुरागाई<br>शोधनिर्देशक                  | .....     |
| ३       | .....<br>बाह्य परीक्षक                                 | .....     |

मिति : २०७१-०९- (वि.सं.)

..... २०१४ (ई.सं.)

## शोधनिर्देशकको मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलामको नेपाली विभाग अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि शोधार्थी श्री रामकला कार्कीले के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान मेरो निर्देशनमा तयार पार्नुभएको हो । परिश्रमपूर्वक तयार गरिएको शोधकार्यबाट म सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलामको नेपाली विभाग समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७१-०६-०८ (वि.सं.)

२४-०९-२०१४ (ई.सं.)

.....

(शोधनिर्देशक)

श्री रामप्रसाद गुरागाईं

उप-प्राध्यापक

नेपाली विभाग

महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस

इलाम

## आफ्नो कुरा

श्रद्धेय गुरू रामप्रसाद गुरागाईको निर्देशनमा रही मैले यो शोधपत्रमा तयार पारेको छु । शैक्षिक व्यस्तता र व्यावहारिक समस्याले व्यस्त रहँदा-रहँदै पनि ज्यादै स्नेहपूर्ण सुभावा र अमूल्य सहयोग प्रदान गर्नु हुने मेरा श्रद्धेय गुरुवर रामप्रसाद गुरागाईप्रति हार्दिक आभारी छु । अध्ययनका लागि शैक्षिक वातावरण तयार पारिदिन सधैं हार्दिक व्यावहार प्रकट गर्नु हुने श्री यादवहादुर खड्काप्रति पनि आभार व्यक्त गर्दछु ।

यो शोधपत्र तयार पार्ने क्रममा सामग्री सङ्कलन तथा अन्य विभिन्न स्नेह पूर्णसहयोग र सुभावा प्रदान गर्नुहुने दाजु श्री के.पि. राईप्रति आभार व्यक्त गर्दछु । मेरी ममतामयी लक्ष्मीमाया कार्की, आदारणीय दिदी श्री तुलसा कार्की तथा सङ्गीता थापाबाट प्राप्त स्नेह, पूर्णआर्थिक सहयोग र समय मेरा लागि अति नै महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान रहेको छ ।

साभ्ना पुस्तक पसल, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पसको पुस्तकालयबाट यो शोधपत्र तयार पार्दा ठूलो सहयोग पाएकी छु । यसै गरी यो शोधपत्र तयार पार्दा मलाई प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग गर्ने सम्पूर्ण गुरुजन, मित्रजन तथा हितैषीहरू र विशेष गरी श्रद्धेय गुरुहरू मुकुन्द गुरागाई र रोमनाथ आचार्यप्रति म आभारी छु ।

अन्त्यमा यो शोधपत्रको भाषा सम्पादन गर्न सहयोग गर्नुहुने वरिष्ठ पत्रकार श्री किशोर शर्माप्रति म विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु । साथै अन्तिम मूल्याङ्कन परीक्षाका लागि नेपाली विभाग म.र.व क्याम्पस इलाममा पेश गर्दछु ।

मिति : २०७१-०६-०८ (वि.सं.)

२४-०९-२०१४ (ई.सं.)

.....

रामकला कार्की

शोधार्थी

महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम

नेपाली विभाग स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्ष

परीक्षा क्रमांक १०००९/२०६७ (२०१२ ई.सं.)

क्याम्पस द.नं ०६५/०६७ (२००८ई.सं.)

त्रि.वि.द.नं ६-१-२०१-३३-२००३

## विषयसूची

|   | पृष्ठ |
|---|-------|
| परिच्छेद एक                             |       |
| शोधपरिचय                                | १-६   |
| १.१ शोधपत्रको शीर्षक                    | १     |
| १.२ शोधपत्रको प्रयोजन                   | १     |
| १.३ विषय परिचय                          | १     |
| १.४ समस्याकथन                           | २     |
| १.५ शोधपत्रको उद्देश्य                  | २     |
| १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा                | ३     |
| १.७ शोधकार्यको औचित्य, महत्व र उपयोगिता | ४     |
| १.८ अध्ययनको सीमाङ्कन                   | ५     |
| १.९ सामग्री सङ्कलन                      | ५     |
| १.१० शोधविधि                            | ६     |
| १.११ शोधपत्रको रूपरेखा                  | ६     |

## दोश्रो परिच्छेद

साहित्यकार के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को जीवनी, व्यक्तित्व र  
कृतित्वको संक्षिप्त अध्ययन

|                               |    |
|-------------------------------|----|
| २.१ पृष्ठभूमि                 | ७  |
| २.२ वंश परम्परा               | ७  |
| २.३ जन्म र जन्मस्थान          | ८  |
| २.४ बाल्यकाल तथा शिक्षादीक्षा | ८  |
| २.५ पारिवारिक स्थिति          | ९  |
| २.६ पेशा व्यावसाय             | १० |
| २.७ व्यक्तित्वका अन्य पक्षहरू | १० |
| २.७.१ शारीरिक व्यक्तित्व      | ११ |

|                             |    |
|-----------------------------|----|
| २.७.२ स्वभाव एवं रूची       | ११ |
| २.७.३ साहित्यिक व्यक्तित्व  | ११ |
| २.७.४ साहित्येतर व्यक्तित्व | १२ |
| २.८ पुस्तकाकार कृतिहरू      | १३ |
| २.९ निष्कर्ष                | १३ |

### तेस्रो परिच्छेद

|   |       |
|---|-------|
| उपन्यासको सैद्धान्तिक मान्यता र परम्परा | १४-३८ |
| ३.१ उपन्यासको उद्भव                     | १४    |
| ३.२ उपन्यासको परिभाषा                   | १५-१८ |
| ३.३ उपन्यासको विधागत स्वरूप             | १८    |
| ३.४ उपन्यासका आधारभूत तत्वहरू           | १९    |
| ३.४.१ कथावस्तु                          | १९    |
| ३.४.२ चरित्रचित्रण                      | २०    |
| ३.४.३ परिवेश                            | २०    |
| ३.४.४ भाषाशैली                          | २१    |
| ३.४.५ द्वन्द्व                          | २१    |
| ३.४.६ दृष्टिविन्दु                      | २१    |
| ३.४.७ कौतूहल                            | २२    |
| ३.४.८ उद्देश्य                          | २२    |
| ३.४.९ कथोपकथन वा संवाद                  | २२    |
| ३.५ उपन्यासको प्रकारगत वर्गीकरण         | २२    |
| ३.५.१ कथानकका आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण | २३    |
| ३.५.१.१ घटना प्रधान उपन्यास             | २३    |
| ३.५.१.२ चरित्र प्रधान उपन्यास           | २३    |
| ३.५.१.३ घटना र चरित्र मिश्रित उपन्यास   | २४    |
| ३.५.१.४ प्रणय प्रधान उपन्यास            | २४    |

|  |       |
|--|-------|
| ३.५.२ शैलीका आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण               | २४    |
| ३.५.२.१ वर्णनात्मक उपन्यास                           | २४    |
| ३.५.२.२ आत्मकथात्मक उपन्यास                          | २५    |
| ३.५.२.३ पत्रात्मक उपन्यास                            | २५    |
| ३.५.२.४ डायरी उपन्यास                                | २५    |
| ३.५.२.५ चेतन प्रवाह शैलीका उपन्यास                   | २५    |
| ३.५.३ विषयवस्तुको स्रोतको आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण  | २६    |
| ३.५.३.१ साहासिक तथा जासुसी उपन्यास                   | २६    |
| ३.५.३.२ पौराणिक तथा मिथकीय उपन्यास                   | २६    |
| ३.५.३.३ ऐतिहासिक उपन्यास                             | २६    |
| ३.५.३.४ सामाजिक उपन्यास                              | २७    |
| ३.५.३.५ आञ्चलिक उपन्यास                              | २७    |
| ३.५.३.६ मनोवैज्ञानिक उपन्यास                         | २७    |
| ३.५.३.७ विज्ञानमूलक उपन्यास                          | २७    |
| ३.५.३.८ जीवनीमूलक उपन्यास                            | २८    |
| ३.६ उपन्यासको महत्व                                  | २८    |
| ३.७ नेपाली उपन्यासको विकासक्रम र धारागत प्रवृत्तिहरू | २९    |
| ३.७.१ नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमि                     | २९    |
| ३.७.२ प्राथमिक काल (वि.सं. १८२७-१९४५ सम्म)           | २९    |
| ३.७.३ माध्यमिक काल (वि.सं. १९४६-१९९० सम्म)           | ३०-३२ |
| ३.७.४ आधुनिक काल (वि.सं. १९९१ देखि हालसम्म)          | ३२    |
| ३.७.४.१ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा                  | ३२    |
| ३.७.४.२ स्वच्छन्दतावादी धारा                         | ३३    |
| ३.७.४.३ सामाजिक यथार्थवादी धारा                      | ३३    |
| ३.७.४.४ ऐतिहासिक यथार्थवादी धारा                     | ३३    |
| ३.७.४.५ अतिथार्थवादी धारा                            | ३४    |

|                              |       |
|------------------------------|-------|
| ३.७.४.६ आलोचनात्मक धारा      | ३४    |
| ३.७.४.७ नारीवादी धारा        | ३५    |
| ३.७.४.८ प्रकृतवादी धारा      | ३५    |
| ३.७.४.९ मनोविश्लेषणवादी धारा | ३६    |
| ३.७.४.१० विसङ्गतिवादी धारा   | ३६    |
| ३.७.४.११ अस्तित्ववादी धारा   | ३७    |
| ३.७.४.१२ प्रयोगवादी धारा     | ३७    |
| ३.७.४.१३ प्रगतिवादी धारा     | ३८    |
| ३.७.४.१४ मिथकीय धारा         | ३८    |
| ३.८ निष्कर्ष                 | ३८-३९ |

### चौथो परिच्छेद

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन, प्रवृत्ति,

योगदान र उपन्यासकारिता

४०-६०

|   |    |
|---|----|
| ४.१ आमुख  | ४० |
| ४.२ साहित्य लेखनमा प्रेरणा र प्रभाव                         | ४० |
| ४.३ साहित्य लेखनको थालनी                                    | ४१ |
| ४.४ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्य यात्राको चरण विभाजन | ४२ |
| ४.४.१ पूर्वाद्ध चरण (प्रारम्भदेखि २०५८ सालसम्म)             | ४२ |
| ४.४.२ उत्तरार्द्ध चरण (वि.सं. २०५९ देखि हालसम्म)            | ४३ |
| ४.५ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू      | ४४ |
| ४.५.१ सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार                         | ४४ |
| ४.५.२ सामाजिक विकृति र असमानताको विरोध                      | ४५ |
| ४.५.३ पात्रको विद्रोहीपन                                    | ४५ |
| ४.५.४ तराई, पहाड र भारतीय परिवेशको चित्रण                   | ४६ |
| ४.५.५ जनयुद्धको चित्रण र शान्तिको कामना                     | ४६ |
| ४.५.६ पवित्र प्रेमको उपासना                                 | ४६ |

|   |       |
|---|-------|
| ४.५.७ पात्रको मनोविश्लेषण                               | ४७    |
| ४.५.८ चरित्र चित्रणमा जोड                               | ४७    |
| ४.५.९ संयोगान्त तथा वियोगान्त उपन्यास लेखने उपन्यासकार  | ४८    |
| ४.५.१० प्रकृति चित्रण                                   | ४८    |
| ४.५.११ सरल भाषाशैलीको प्रयोग                            | ४८    |
| ४.६ नेपाली साहित्यमा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को योगदान | ४९    |
| ४.७ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासकारिता           | ४९    |
| ४.७.१ विषयवस्तुको प्रयोग                                | ५०    |
| ४.७.२ पात्रविधान  | ५१    |
| ४.७.३ परिवेश विधान                                      | ५२-५३ |
| ४.७.४ भाषाशैली  | ५४    |
| ४.७.५ आयामको प्रयोग                                     | ५५    |
| ४.७.६ शीर्षक विधान                                      | ५६    |
| ४.७.७ केन्द्रिय कथ्य                                    | ५७    |
| ४.७.८ पात्रको मनोविश्लेषण                               | ५८-५९ |
| ४.८ निष्कर्ष  | ६०    |

### पाँचौं परिच्छेद

|  |        |
|--|--------|
| के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान | ६१-११४ |
| ५.१ पात्र र तिनको चरित्र                         | ६१     |
| ५.२ चरित्र वर्गीकरणका आधार                       | ६२     |
| (क) औपन्यासिक भूमिका वा कार्य                    | ६२     |
| (ख) लिङ्ग  | ६३     |
| (ग) स्वभाव                                       | ६३     |
| (घ) प्रवृत्ति                                    | ६३     |
| (ङ) आसन्नता                                      | ६४     |
| (च) आवद्धता                                      | ६४     |

|       |  |       |
|-------|--|-------|
| ५.२.१ | ‘आवेग’ उपन्यासका पात्रहरूको औपन्यासिक भूमिकाका आधारमा वर्गीकरण                 | ६५    |
| ५.२.२ | ‘आवेग’ उपन्यासका पात्रहरूको तालिकागत चरित्रका आधारमा वर्गीकरण                  | ६६-६७ |
| ५.२.३ | ‘निर्दोष कैदीको रहस्य’ उपन्यासका पात्रहरूको औपन्यासिक भूमिकाका आधारमा वर्गीकरण | ६८    |
| ५.२.४ | ‘निर्दोष कैदीको रहस्य’ उपन्यासका पात्रहरूको चरित्रका आधारमा वर्गीकरण           | ६९-७० |
| ५.२.५ | ‘युद्धले खोसेको प्रेम’ उपन्यासका पात्रहरूको औपन्यासिक भूमिकाका आधारमा वर्गीकरण | ७१-७३ |
| ५.२.६ | ‘युद्धले खोसेको प्रेम’ उपन्यासका पात्रहरूको चरित्रका आधारमा वर्गीकरण           | ७४-७९ |
| ५.३   | तालिकामा प्रस्तुत ‘आवेग’ उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरूको चरित्रको विश्लेषण       | ८०    |
| ५.३.१ | प्रमुख पात्रहरू  | ८०    |
|       | (क) दिनेश  | ८०-८३ |
|       | (ख) मञ्जु  | ८३-८५ |
| ५.३.२ | सहायक पात्रहरू   | ८५    |
|       | (क) बाजेबोजू   | ८५    |
|       | (ख) तुलसा  | ८६    |
|       | (ग) दिलसा  | ८६    |
|       | (घ) रञ्जन  | ८६    |
|       | (ङ) रञ्जना   | ८७    |
|       | (च) रामु   | ८७    |
|       | (छ) लिला   | ८७    |
| ५.३.३ | गौण पात्रहरू   | ८८    |
| ५.४   | तालिकामा प्रस्तुत ‘निर्दोष कैदीको रहस्य’ उपन्यासमा प्रयुक्त                    |       |

|   |         |
|---|---------|
| पात्रहरूको चरित्रको विश्लेषण  | ८९      |
| ५.४.१ प्रमुख पात्रहरू   | ९०      |
| (क) सविन  | ९०-९३   |
| (ख) अर्चना  | ९३-९६   |
| ५.४.२ सहायक पात्रहरू  | ९६      |
| (क) नीता  | ९६-९७   |
| (ख) अर्चना (सविनकी बहिनी)   | ९७      |
| (ग) बाबा  | ९७      |
| (घ) वीरमान  | ९८      |
| (ङ) दिलमान  | ९८      |
| (च) सन्देश  | ९९      |
| (छ) भोटु  | १००     |
| ५.४.३ गौण पात्रहरू  | १००     |
| ५.५ तालिकामा प्रस्तुत 'युद्धले खोसेको प्रेम' उपन्यासमा प्रयुक्त<br>पात्रहरूको चरित्रको विश्लेषण | १०१     |
| ५.५.१ प्रमुख पात्रहरू   | १०२     |
| (क) जलन   | १०२-१०६ |
| (ख) अमिसारिका   | १०६-१०९ |
| ५.५.२ सहायक पात्रहरू  | १०९     |
| (क) विरेन   | १०९     |
| (ख) चिरफार  | ११०     |
| (ग) जलनका बुबाआमा   | ११०     |
| (घ) मानसिं र टेम्के   | १११     |
| ५.५.३ गौण पात्रहरू  | १११-११३ |
| ५.६ निष्कर्ष  | ११३-११४ |

## छैटौँ परिच्छेद

|   |         |
|---|---------|
| निष्कर्ष तथा उपसंहार                              | ११५-१२१ |
| जिज्ञासु शोधकर्ताका लागि केहि नमुना शोध शीर्षकहरू | १२२     |
| सन्दर्भग्रन्थ सूची                                | १२३     |
| परिशिष्ट  |         |
| क, ख, ग   |         |

## संक्षेपीकृत रूप र चिन्ह प्रयोग

### संक्षिप्त रूप

एस.एल.सी

सा.प्र.

प्रा.

डा.

वार्ड नं.

वि.सं.

गा.वि.स.

प्रा.वि.

नि.मा.वि.

मा.वि.

पृ.

क्र.सं.

प्र.अ

ई.सं.

त्रि.वि.

द.नं.

### चिन्ह प्रयोग

/

( )

...

.....

' '

### पूर्ण रूप

स्कूल लिभिङ्ग सर्टिफिकेट

साभा प्रकाशन

प्राध्यापक

डाक्टर

वार्ड नम्बर

विक्रम संवत्

गाउँ विकास समिति

प्राथमिक विद्यालय

निम्न माध्यमिक विद्यालय

माध्यमिक विद्यालय

पृष्ठ

क्रम संख्या

प्रधानाध्यापक

ईस्वी संवत्

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

दर्ता नम्बर

### अर्थ

वा, र

वैकल्पिक अर्थ

केही अंश छोडिएको

क्रमश

शीर्षकबोधक

## पहिलो परिच्छेद

### शोधपरिचय

#### १.१ शोधपत्रको शीर्षक

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा 'पात्रविधान' रहेको छ ।

#### १.२ शोधपत्रको प्रयोजन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस इलामको मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र संकाय अन्तर्गत नेपाली विषयको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि तयार गरिएको छ ।

प्रस्तुत शोधपत्र महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम, स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्ष परीक्षा रोल नं. १०००९ का शोधार्थी रामकला कार्कीबाट तयार गरिएको हो ।

#### १.३ विषय परिचय

वि.सं २०३८ सालमा पाँचथर जिल्लाको अमरपुर गा.वि.स., वार्ड नं. २, भालुचोक भन्ने ठाउँमा जन्मिएका के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'ले तीन वटा औपन्यासिक कृति प्रकाशन गरेर एक सफल साहित्यिक व्यक्तित्वका रूपमा स्थापित भएका छन् । आधुनिक नेपाली उपन्यास क्षेत्रलाई माथि उठाउने काम के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'ले गरेका छन् । उनको पहिलो पुस्तकाकार कृति आवेग (२०५९), दोस्रो कृति निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) तथा तेस्रो कृतिका रूपमा युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यास रहेका छन् । यिनै समग्र उपन्यासको पात्रविधान यस शोधपत्रको विषय रहेको छ ।

## १.४ समस्याकथन

के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'ले प्रस्तुत शोधपत्रको मुख्य विषय के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान रहेकोले मूलतः पात्रहरूमा केन्द्रित रही तिनको चरित्रचित्रणका साथै उपन्यासमा पात्रहरूले निर्वाह गरेको भूमिकाको अध्ययन तथा विश्लेषण गरिएको छ। यस सन्दर्भमा प्रस्तुत शोधपत्र निम्नलिखित समस्यामा केन्द्रित रहेको छ।

- (क) उपन्यासको परिचय र त्यसमा पात्रविधान के कसरी गरिएको छ ?
- (ख) के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासमा के कस्ता पात्रहरू रहेका छन् ?
- (ग) उपन्यासमा पात्रहरूको भूमिका कसरी प्रस्तुत गरिएको छ ?
- (घ) उपन्यासमा प्रस्तुत पात्रहरूको चरित्र पात्रविधानका आधारमा के कस्तो छ ?

उल्लेखित समस्यासँग सम्बन्धित विभिन्न समस्याहरूसँग केन्द्रित रहेर प्रस्तुत शोधपत्र तयार पारिएको छ।

## १.५ शोधपत्रको उद्देश्य

प्रस्तुत शोधशीर्षक अन्तर्गत रहेर शोधकार्य गर्दा समस्याकथनमा उल्लेख गरिएका शोध समस्याहरूको समाधान खोजिएको छ। के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासका पात्रविधानको सन्दर्भमा समग्र अध्ययन गर्न यो शोधकार्यको मूल उद्देश्य रहेको छ। यस शोधकार्यका उद्देश्यहरू बुँदागत रूपमा देहायबमोजिम प्रस्तुत गरिएका छन्।

- (क) उपन्यासको परिचय, त्यसमा पात्रविधान के कसरी गरिएको छ, निरूपण गरिएको छ।
- (ख) के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासमा के कस्ता पात्रहरू रहेका छन्, उल्लेख गरिएको छ।
- (ग) उपन्यासमा पात्रहरूको भूमिका कस्तो छ, निरूपण गरिएको छ।

- (घ) आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य, युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा प्रयोग गरिएका पात्रहरूको चरित्र कस्तो छ, निरूपण गरिएको छ ।

## १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा

विं. स. २०५९ सालदेखि नेपाली साहित्यको उपन्यास विधामा भित्रिएका राईको हालसम्म प्राप्त जानकारी अनुसार तीन वटा उपन्यासहरू आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) रहेका छन् । ती कृतिहरूमा शिक्षण संस्थाका शोधार्थीहरूले गरेको अध्ययन तथा भूमिका लेखकहरूले प्रस्तुत गरेका संक्षिप्त धारणाहरू प्राप्त छन् । ती यस प्रकार रहेका छन् :

- (क) उपन्यासकार के.पि. राईको 'जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन' शीर्षकमा गणेश खतिवडाले २०६६ सालमा महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस इलामबाट शोधकार्य गरिएको छ । उक्त शोधपत्रमा राईको २०६६ सालसम्मको जीवन, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गरिएको छ ।
- (ख) के.पि. राईको 'उपन्यासकारिताको अध्ययन र विश्लेषण' शीर्षकमा निर्मला नेपालले २०७० सालमा महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलामबाट शोधकार्य गरिएको छ । उक्त शोधपत्र ५ परिच्छेदमा संरचित छ । राईका आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासको उपन्यासकारिताको विस्तृत अध्ययन विश्लेषण गरिएको छ । यस शोधपत्रमा पात्रहरूको सामान्य चिनारीबाहेक पात्रविधानका आधारमा पात्रहरूको विश्लेषण गरिएको छैन ।
- (ग) आवेग उपन्यास राईको प्रथम कृति हो । लेखनको पहिलो प्रयासका रूपमा रहेको यो उपन्यासका बारेमा साहित्यप्रेमीहरूले दिएको प्रेरणा र सुझावका कारण राईका पछिल्ला कृतिहरू निखारिदै गएको भन्ने अभिव्यक्ति सर्जकबाट समालोचना र विश्लेषण भएको छ ।
- (घ) निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) राईको दोस्रो कृति हो । यस कृतिका बारेमा पुस्तक प्रकाशनपछि अमृत वान्तवाले 'सामाजिक विसंगति र शोषणको क्रान्तिकारी विकास

निर्दोष कैदीको रहस्यभित्रको रहस्य' शीर्षकको एक टिप्पणीमूलक लेख तयार गरेको पाण्डुलिपि सर्जकबाट फेला परेको छ । त्यसमा पनि पात्रविधानको बारेमा उल्लेख छैन ।

- (ड) उपन्यासकार राईको तेस्रो कृतिका सम्बन्धमा विनोद 'विनय' भण्डारीले 'युद्धले खोसेको प्रेम' (२०६४) स्वरूप 'मित्रप्रति दुई शब्द' शीर्षकमा के.पि. राईलाई क्रान्तिकारी तथा प्रगतिवादी लेखक, शान्तिको आह्वान गर्ने कृति तथा विगतको दशवर्षे सशस्त्र जनयुद्धका बारेमा लेखिएका उपन्यासहरूलाई दृष्टान्त दिएर तुलना गरिएको छ ।

### १.७ शोधकार्यको औचित्य, महत्त्व र उपयोगिता

आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य र युद्धले खोसेको प्रेम सामाजिक यथार्थ तथा विद्रोही भावना भएका उपन्यासहरू हुन् । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' का उपन्यासमा 'पात्रविधान' विषयक अध्ययन त्रिभुवन विश्वविद्यालय, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस इलामको मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत नेपाली विषयको दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि उचित रहेको छ । प्रस्तुत शोधमा यी उपन्यासहरूको पात्रविधानका आधारमा प्रयोग गरिएका पात्रहरूको अध्ययन विश्लेषण गर्ने पूर्व अध्येता तथा विश्लेषकहरूले पात्रविधानका आधारमा अध्ययन तथा विश्लेषण नगरिएको हुँदा यस विषयमा अध्ययन तथा विश्लेषण गर्न उचित रहेको छ ।

यी उपन्यासहरूका बारेमा शिक्षण संस्थाका शोधार्थी गणेश खतिवडा, निर्मला नेपाल तथा भूमिका लेखक विनोद 'विनय' भण्डारी, अमृत वान्तवाबाट अध्ययन विश्लेषण भएको छ । गणेश खतिवडा र निर्मला नेपालको अध्ययन विश्लेषणमा पात्रविधानको सामान्य चिनारीबाहेक पात्रविधानको आधारमा उपन्यासमा प्रयोग गरिएका सम्पूर्ण पात्रहरूको अध्ययन विश्लेषण भएको छैन । त्यसकारण के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को उपन्यासमा 'पात्रविधान' विषयक शीर्षकमा अध्ययन विश्लेषण गर्न त्रिभुवन विश्वविद्यालय, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस इलामको मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत नेपाली विषयको दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि उचित रहको छ । यस शीर्षकले राईका आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१), युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासमा प्रयोग गरिएका पात्रहरूको अध्ययन

गर्न चाहने जो कोही जिज्ञासु व्यक्तिहरूको लागि यो शोधपत्र महत्वपूर्ण तथा उपयोगी सामग्री बनेको छ ।

## १.८ प्राकल्पना

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासमा प्रयोग गरिएका पात्रहरू औपन्यासिक पृष्ठभूमिमा काल्पनिक रहे पनि सामाजिक धरातलमा यथार्थ छन् । यसरी राई बहुपात्र प्रयोग गर्ने सामाजिक यथार्थवादी तथा विद्रोही भावनाबाट प्रेरित रहेका छन् ।

## १.८ अध्ययनको सीमाङ्कन

के. पि. राई 'सिर्जन शिरीष' का क्रमशः आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) मा पात्रविधानको अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ ।

## १.९ सामग्री संकलन

शोधसँग सम्बद्ध विभिन्न सामग्री नै शोध सामग्री हुन् । यिनीहरूको संकलन दुई तरिकाबाट गरिएको छ ।

- (१) प्राथमिक स्रोत सामग्री : स्रष्टाका कृतिहरू आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य, युद्धले खोसेको प्रेम, विभिन्न तथ्य, तथ्याङ्क, मत, विचार, प्रश्नावली तथा व्यक्तिगत अन्तर्वाताबाट संकलन गरिएको छ ।
- (२) द्वितीय स्रोत सामग्री : पुस्तकालयिय विधि, सन्दर्भ पुस्तकहरू, आवश्यकता अनुसार दुवै विधिको प्रयोग गरिएको छ ।

## १.१० शोधविधि

प्रस्तुत शोध तयार पार्नका लागि मुख्यतः निम्नलिखित विधिको प्रयोग गरिएको छ ।

- (क) ऐतिहासिक विधि
- (ख) वर्णनात्मक शोधविधि

(ग) तुलनात्मक शोधविधि जस्ता पद्धतिलाई आवश्यकता अनुसार उपयोग गरिएको छ ।

### १.११ शोधपत्रको रूपरेखा

यस शोधपत्रलाई १ देखि ६ परिच्छेदमा विभाजन गरी अध्ययन गरिएको छ । प्रस्तुत शोधपत्रलाई निम्न अनुसार परिच्छेदमा विभाजन गरी प्रस्तुत गरिएको छ ।

|                     |  |
|---------------------|--|
| पहिलो परिच्छेद :    | शोधपरिचय,  |
| दोस्रो परिच्छेद :   | जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको संक्षिप्त परिचय,   |
| तेस्रो परिच्छेद :   | उपन्यासको सैद्धान्तिक मान्यता र परम्परा,   |
| चौथो परिच्छेद :     | के.पि राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन, प्रवृत्ति, योगदान र उपन्यासकारिता, |
| पाँचौ परिच्छेद :    | के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान,  |
| छैटौँ परिच्छेद :    | निष्कर्ष तथा उपसंहार,  |
| सन्दर्भग्रन्थ सूची, |  |
| परिशिष्ट क, ख, ग    |  |



## दोस्रो परिच्छेद

# साहित्यकार के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष' को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको संक्षिप्त अध्ययन

### २.१ पृष्ठभूमि

मानिसको कार्यक्षेत्र शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सेवामूलक जुनसुकै पनि हुन सक्छ। उसको बाल्यकालदेखि वृद्धावस्थासम्मको सम्पूर्ण रूपलाई जीवन अवधिका रूपमा राख्ने गरिन्छ। व्यक्तिका जीवनमा घटेका घटना तथा कार्यहरूको सत्यता, तथ्यता, र वस्तुताका महत्वलाई नै जीवनी व्यक्तित्व भनिन्छ। व्यक्तिले जीवन अवधिमा रचना गरेका कृतिहरूलाई नै कृतित्वका रूपमा लिन सकिन्छ। यस्तो जीवनलाई नै समग्र रूपमा पूर्ण जीवनी मानिन्छ। मानिसले उसको जीवनका विभिन्न कालखण्डमा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपमा विभिन्न काम कर्तव्यहरू पूरा गरेको हुन्छ। यी जीवनका भागहरू हुन्। यहाँ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वका भागहरू सत्य तथ्यका आधारमा उल्लेख गरिएको छ।

### २.२ वंश परम्परा

यस पृथ्वीमा रहेका जुनसुकै प्राणीहरू अनादि कालदेखि नै आ-आफ्नै प्रकारका पुस्ताहरू पार गर्दै आइरहेका छन्। मानिसको जीवनमा उसका पुस्ताहरूको बनावट, धर्म, भाषा, संस्कृति, रहनसहन, परम्परा वा क्रियाकलापले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ। के. पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को जन्म पाँचथर जिल्लाको अमरपुर गा.वि.स. वार्ड नं. २ अमरपुरमा भएको हो। उनका पुर्खाहरू सोलुखुम्बु जिल्लाको बाँसपानी भन्ने ठाउँबाट बंसाइँ सरी पाँचथरको अमरपुर आएका थिए। सोलुखुम्बुमा रहँदा उनीहरूको मुख्य पेशा भैंसीपालन रहेको थियो।<sup>१</sup>

<sup>१</sup> के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष' बाट प्राप्त जानकारी।

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को वंश परम्परा राई जातिको थुलुङ थर र लासा गोत्र रहेको देखिन्छ । <sup>२</sup>गोत्रलाई राई जातिले पाछा भन्ने गरेको पाइन्छ । थुलुङ थरभित्र विभिन्न उपथर रहेका हुन्छन् । उनका वराजु धर्मसिं, बाजेबोजू रङ्गलाल/फिपरोती थुलुङ र बाबु-अमा रामप्रसाद/पूर्णिमाया थुलुङ रहेका छन् । उनका दाजुहरू क्रमशः मदन, कालीबहादुर, जगत, प्रदीपकिशोर र लक्ष्मीप्रसाद रहेका छन् ।<sup>३</sup>

### २.३ जन्म र जन्मस्थान

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को जन्म वि.सं. २०३८ साल मंसिर २८ गते नेपालको सुदूरपूर्व मेची अञ्चलको पहाडी क्षेत्र पाँचथर जिल्लाको भालुचोक भन्ने ठाउँमा भएको थियो ।<sup>४</sup> उनका बुवाआमाको नाम रामप्रसाद राई र पूर्णिमाया राई हो । उनको न्वारानको वास्तविक नाम कुलप्रसाद राई हो । त्यही कुलप्रसाद नाम नेपाली साहित्यमा अंग्रेजी रूप लिएर के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' रहन पुग्यो ।<sup>५</sup> उनका सम्पूर्ण कृतिमा संक्षिप्त नाम के.पि. राई नै रहेकाले यस शोधपत्रमा पनि यही नाम प्रयोग गरिएको छ । उनी बुवाआमाका आठौँ सन्तान अर्थात कान्छो छोरा हुन । राईका ५ दाजु र दुई दिदीको कान्छो भाइका रूपमा जन्मिएका थिए । उनी जन्मेको ठाउँ मेची राजमार्ग (चारआली-ताप्लेजुङ्ग) अन्तर्गत भालुचोक बजार नजिकै करिब ३०० मिटर तल पर्दछ । उक्त ठाउँको पूर्वमा नागी गा.वि.स., पश्चिममा सिंहापुर बजार, उत्तरमा कावेली खोला र दक्षिणमा नवमिडाँडा पर्दछ । उनको जन्मस्थलबाट ताप्लेजुङ्गको पवित्र देवस्थल पाथिभरा, कञ्चनजंघा हिमाल तथा अन्य सुन्दर हिमाल, पहाडहरूको दृश्यालोकन गर्न पाइन्छ ।

### २.४ बाल्यकाल तथा शिक्षादीक्षा

के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'को बाल्यकाल सबैको माया, ममतामय तथा सुख शान्तिमय वातावरणमा बितेको देखिन्छ । उनी घरपरिवारमा भगडा नगर्ने वा कसैको भगडा, भनाभन

<sup>२</sup> ऐजन ।

<sup>३</sup> ऐजन ।

<sup>४</sup> ऐजन ।

<sup>५</sup> ऐजन ।

भएमा सबैलाई सम्झाउने समझदारी व्यक्तिका रूपमा परिचित छन्।<sup>६</sup> बाल्यकालदेखि नै उनी एकान्तप्रेमी तथा भावुक प्रवृत्तिका थिए। विभिन्न लेखकका कृतिहरू र पत्रपत्रिका पढ्ने, कविता, गीत, गजल, ध्यान दिएर सुन्ने, पढ्ने तथा लेख्ने गर्दथे। स्कूल समयमा स्कूल जाने र बाँकी समय घरमा बुवा-आमालाई काममा सघाउने गरेको देखिन्छ।<sup>७</sup> के.पि. राई बाल्यकाल समयमा पढाई लेखाईका लागि सहज नै थियो। नेपालका गाउँघरका प्रायः सबै वार्डमा अशिक्षाको अन्धकारलाई हटाउन स्कूलहरू खोलिएका थिए। उनले प्राथमिक शिक्षा घर नजिकैको अमरज्योति प्रा.वि. बाट तथा कक्षा ६ देखि १० कक्षासम्मको अध्ययन अमरपुर मा.वि.बाट हासिल गरेका थिए। उनले सेन्ट अप टेष्ट पास स्कूलबाट गरेका थिए। एस.एल.सी. परीक्षामा अनुत्तीर्ण गरेपछि उनको औपचारिक शिक्षा अनौपचारिक शिक्षातर्फ उन्मुख भएको पाइन्छ। उनको औपचारिक शिक्षा सकिएपछि अनौपचारिक शिक्षा भने अत्यन्त व्यापक रहेको देखिन्छ। उनी सानैदेखि कक्षामा साथीहरूलाई कथा, कविता, गीत, गजल, मुक्तक आदिका माध्यमबाट मनोरञ्जन दिने गर्दथे। आफूलाई मन पर्ने साहित्यिक विधा उपन्यास भएकाले सानैदेखि उनी यस विधातर्फ आकर्षित भएको देखिन्छ।

## २.५ पारिवारिक स्थिति

के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'को पारिवारिक स्थिति मध्यम वर्गको मान्न सकिन्छ। उनीहरू पितापुर्खादेखि नै खेतीपाती, पशुपालन गर्दै आएका देखिन्छन्। उनी २०६६ सालसम्म संयुक्त परिवारमा बस्दै आएका थिए। परिवार ठूलो भएपछि उनी २०६७ सालदेखि एकल परिवारमा बस्दै आएका छन्। उनका एक श्रीमती, एक छोरा र एक छोरी गरी जम्मा चार जनाको परिवार रहेको देखिन्छ। उनका दाजुहरू वैदेशिक रोजगारमा आकृष्ट भएका देखिन्छन्।<sup>८</sup> उनीमा सादा जीवन उच्च विचारको व्यक्तित्व रहेको पाइन्छ।

<sup>६</sup> के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'का साथी वीरेन्द्र योङ्हाङ्गबाट प्राप्त जानकारी।

<sup>७</sup> के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'सँग माता पूर्णिमाया राईबाट प्राप्त जानकारी।

<sup>८</sup> के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'बाट प्राप्त जानकारी।

## २.६ पेशा व्यावसाय

सामान्यतया व्यक्तिले जीवन निर्वाहका लागि अवलम्बन गरेको काम नै पेशा वा व्यवसाय हो । सिर्जनशील, कर्तव्यनिष्ठ एवं निष्ठावान व्यक्तिका लागि पेशा वा व्यवसायले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । उनले अमरपुरको एक पसलमा काम गरेका थिए । त्यहि अनुभवलाई लिएर आफु पनि एक व्यावसायी बन्ने उद्देश्य लिएर काठमाण्डौं गई त्यहाँको सामान विभिन्न ठाउँमा पुऱ्याउने काम गरे । त्यसपछि स्थानीय भालुचोक बजारमा तयारी पोशाक पसल पनि खोलेका थिए । त्यही क्रममा उनले तीन वटा उपन्यास समेत प्रकाशित गरे । हँसिलो, मिजासिलो तथा जाँगरिलो स्वभावका राई यसै समयमा किराँत राई यायोख्या गाउँ कमिटीका अध्यक्ष रहेर आफ्नो जाति, धर्म, संस्कृति, रहनसहन र रीतिरीवाजको उत्थान तथा संरक्षणमा सक्रिय रहेका छन् । देशभरि नै वैदेशिक रोजगारीमा जाने लहर चले पनि उनलाई त्यसले आकर्षित गरेको पाइँदैन । बरु स्वदेशमै केहि गर्ने प्रतिबद्धता उनमा पाइन्छ । स्वदेशमै केही गरेर देखाउने इच्छा उनमा देखिन्छ तर उनी आफ्नो इच्छा विपरित परिवारको बाध्यतामा वैदेशिक रोजगार अँगाल्न बाध्य भए ।<sup>९</sup> व्यापारमा राम्रो अनुभव लिएका राई पेशा व्यावसायका अतिरिक्त समाजसेवा, साहित्य सिर्जना, पत्रपत्रिकामा लेख रचना प्रकाशित गर्न पनि उत्तिकै लागि परेका देखिन्छन् । उनले केही समय स्थानीय अमरपुर बजारको एक व्यापारिक प्रतिष्ठानमा टेलिफोनको अपरेटरका रूपमा काम गरेको पाइन्छ ।

## २.७ व्यक्तित्वका अन्य पक्षहरू

व्यक्तित्व कुनै पनि व्यक्तिमा निहित विशेषता हो । प्रत्येक व्यक्तिमा फरक-फरक विशेषता रहेका हुन्छन् । त्यही विशेषताले नै ऊ समाजमा परिचित हुन पुग्दछ । मानिसको व्यक्तित्वमा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक, पारिवारिक आदि पक्षहरू पर्दछन् । व्यक्तिको व्यक्तित्व सफल हुनका लागि उसको रूची, स्वभाव, आचरण अनुशासन, सेवाभाव, जीवन र जगतप्रतिको दृष्टिकोण जस्ता धेरै कुराको महत्व रहेको हुन्छ । जसले जति महान कार्य गर्दछ, उसको व्यक्तित्व पनि त्यति नै महान् रहेको देखिन्छ । के.पि.राई पनि यिनै कुराको सेरोफेरोमा आफ्नो व्यक्तित्व उठान गर्ने व्यक्ति हुन् । उनले

---

<sup>९</sup> ऐजन ।

आफ्नो सामान्य आर्थिक, सामाजिक तथा वातावरणीय पक्षको सहयोगमा आफ्नो रूची तथा चाहना अभिव्यक्त गरेका छन् । यहाँ उनको व्यक्तित्वका विविध पक्षहरूको चर्चा गरिएको छ ।

### २.७.१ शारीरिक व्यक्तित्व

मानिसको शारीरिक व्यक्तित्व भनेको उसको सम्पूर्ण शारीरिक पक्षहरूको विवरण हो । यसमा लम्बाइ, मोटो-दुब्लोपन, वर्ण, पहिरन, हुलिया आदि जस्ता कुराहरू पर्दछन् । के.पि. राईको शारीरिक व्यक्तित्व ५ फिट ४ इन्च उचाई रहेको छ ।<sup>१०</sup> सामान्य मोटाइ, गहुँगोरो वर्ण, हालसम्म कुनै रोग नलागेको, पहिरनमा सर्ट, पाइन्ट, र पाली हालेको टोपी मन पराउँछन् ।<sup>११</sup>

### २.७.२ स्वभाव एवं रूची

व्यक्तिको बानी, व्यहोरा वा आदत नै स्वभाव हो । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'मा पनि सानै उमेरदेखि मृदुभाषी, मिलनसार, मितव्ययी र जिज्ञासु स्वभाव रहेको पाइन्छ । उनमा आफुभन्दा सानालाई माया गर्ने आफुभन्दा ठूलालाई आदर गर्ने, सधैं हँसिलो, रसिलो स्वभाव रहेको पाइन्छ ।<sup>१२</sup> राई एकान्तप्रेमी, कसैलाई अन्याय नगर्ने र अन्याय नसहने प्रवृत्तिका देखिन्छन् ।<sup>१३</sup> उनको स्वभाव साहित्यकारको जीवनी अध्ययन गर्ने, समाजको उन्नति चाहने, सहयोगी, अस्वस्थकर बानी तथा धुम्रपान, मद्यपानबाट अलग रहेको पाइन्छ । के.पि. राई विद्यार्थी जीवनदेखि नै नेपाली साहित्य र लोकसाहित्यप्रति विशेष रूची राख्ने गर्दथे । एकान्त स्थान, सुन्दर प्रकृति देख्ने वित्तिकै राई भावुक भई साहित्य सृजना गर्न उन्मुख हुन्थे ।

---

<sup>१०</sup> ऐजन ।

<sup>११</sup> ऐजन ।

<sup>१२</sup> ऐजन ।

<sup>१३</sup> ऐजन ।

### २.७.३ साहित्यिक व्यक्तित्व

साहित्यका जुनसुकै विधामा कलम चलाई समाजको यथार्थ चित्रण गर्ने व्यक्तित्व नै साहित्यिक व्यक्तित्व हो । यस्तै परिधिभिन्न के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' पनि समेटिएका छन् । उनी सानै उमेरदेखि साहित्य सम्बन्धी विविध कार्यक्रममा भाग लिने गर्दथे । यसका अतिरिक्त फुर्सुदका समयमा गीत, गजल, कविता गुनगुनाउने, कथा भन्ने र मुक्तक, चुटुकिला सुनाएर साथीहरूलाई मन्त्रमुग्ध बनाउने गर्दथे । एकान्तप्रेमी, भावुक व्यक्तित्वका धनी राई एकान्त, सौन्दर्यता पाउने वित्तिकै केही न केही सृजना गर्ने गर्दथे भने साहित्यकारका कृतिहरू फेला पर्ने वित्तिकै बढो उत्सुकताका साथ पढ्ने गर्दथे । त्यसैले जीवनका दुई दशक वसन्त पार गर्दागर्दै नेपाली साहित्यका विविध विधामा कलम चलाउन पुगे । राईले छोटो समयमावधिमा नै नेपाली साहित्यको कान्छो विधा उपन्यासमा तीन वटा कृति प्रकाशन गराउन सफल भएका छन् । यसका अतिरिक्त गीत, गजल, कविता, कथा आदि विधामा पनि राईले फाट्टफुट्ट कलम चलाएका छन् ।

### २.७.४ साहित्येतर व्यक्तित्व

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' लाई साहित्येतर व्यक्तित्वका रूपमा समेत चिन्ने गरिन्छ । उनी समाजसेवी, राजनीतिकर्मी, संस्कृतिप्रेमी व्यक्तित्वका रूपमा समेत परिचित छन् । राई साहित्य बाहेक समाजसेवाका खातिर विभिन्न संघ-संस्थामा आबद्ध रहँदै आएका देखिन्छन् । समाजको विकासमा शान्ति, सहअस्तित्व, मित्रता, भाइचारा, नीति तथा संस्कृतिको जर्गेना गर्न उनको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । सानैदेखि नेपाली काङ्ग्रेसको सिद्धान्त मन पराई आफूलाई सच्चा काङ्ग्रेस कार्यकर्ताका रूपमा चिनाउन सफल के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' काङ्ग्रेसका क्रियाशील सदस्य समेत रहेको देखिन्छ । उनी संस्थागत रूपमा किराँत राई यायोख्या गाउँ कमिटीका अध्यक्षसमेत रही आफ्नो जातीय मौलिकता र संस्कृतिमा नै आफ्नो पहिचान केलाउन चाहन्छन् । उनी हिन्दू धार्मिक क्रियाकलाप पनि संलग्न हुँदै आएका छन् । उनी स्थानीय भित्ते पत्रिका 'स्रष्टाका थुँगाहरू' र 'मिमिरे हवाइ' पत्रिकाको सम्पादक भएको पाइन्छ ।

## २.८ पुस्तकाकार कृतिहरू

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को प्रतिभा कविता, गजल, मुक्तक, कथाका साथै मुख्य गरी उपन्यास विधामा नै मौलाएको पाइन्छ । सर्वप्रथम आवेग (२०५९) रचना गरी नेपाली उपन्यासकारका रूपमा देखिएका हुन् । उनका विभिन्न रचनाहरू भित्ते पत्रिका 'स्रष्टाका थुंगाहरू' आदिमा समेत छपाएका छन् । उनले २०६१ सालमा निर्दोष कैदीको रहस्य प्रकाशित गरेर कैदी जीवनको बारेमा प्रष्ट पार्न खोजेका छन् । त्यसैगरी २०६४ सालमा युद्धले खोसेको प्रेम प्रकाशन गरेर नेपालको १० वर्षे जनयुद्धले मानिसमा छाएको त्रासलाई समेत उद्घाटन गर्ने काम गरेका छन् ।

## २.९ निष्कर्ष

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' पाँचथर जिल्ला अमरपुर गा.वि.स. वार्ड नं. २ भालुचोक भन्ने ठाउँमा जन्मेर सामान्य औपचारिक शिक्षा, स्वअध्ययन, पेशाप्रतिको इमान्दारिता, कर्तव्यनिष्ठ आदिका कारण व्यक्तित्व विकास गर्न सफल भएका छन् । जीवनका विविध पाटाहरूबाट सफलता हासिल गर्ने स्पष्ट मार्ग कोरेका स्वभिमानी, साहित्यसेवी, समाजसेवी राई आफ्नो कर्ममा निरन्तर साधनारत छन् ।

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को व्यक्तित्व साहित्यिक र साहित्येतर दुवै प्रबल रहेको छ । साहित्यका क्षेत्रमा कविता, मुक्तक, गजल, चुट्किला, कथा र मूलतः उपन्यास विधामा नै प्रबल रहेको देखिन्छ । त्यसैगरी साहित्येतर क्षेत्रमा समाजसेवा, राजनीति र विविध संघ-सस्थामा आवद्ध रहेका छन् । उनी सरल स्वभाव, सहज बानी, मिलनसार तथा लगनशीलता जस्ता गुणले परिचित छन् । सादा जीवन र उच्च विचारका धनी राई गरीब र दुःखमा परेका व्यक्तिलाई सधैं सहयोग गर्ने गर्दछन् । जीवनलाई सङ्घर्षको प्रतीक मान्ने राई मानिसको समस्या र समाधानको कारक मानिस नै भएको मान्दछन् ।



## तेस्रो परिच्छेद

### उपन्यासको सैद्धान्तिक मान्यता र परम्परा

#### ३.१ उपन्यासको उद्भव

‘उपन्यास’ तत्सम शब्द हो । शाब्दिक व्युत्पत्ति केलाउने हो भने ‘उपन्यास’ शब्द ‘अस्’ धातुमा ‘उप’ र ‘नि’ उपसर्ग तथा ‘घञ्’ (अ) प्रत्यय लागेर बनेको देखिन्छ ।<sup>१४</sup> नेपाली साहित्यको उपन्यास विधाको विकास अंग्रेजी साहित्यको ‘नोवेल’ शब्द ल्याटिन भाषाको ‘नोवोस’ अर्थात् ‘नोवलस’बाट विकसित भएको पाइन्छ । त्यसै ल्याटिन भाषाबाट विकसित हुँदै फ्रान्समा पुगेको ‘नोवेल्ला’ शब्द उपन्यासका अर्थमा प्रयोग हुन पुगेको छ । वर्तमानमा नोवेल शब्दको प्राविधिक अर्थ उपन्यास बनेको छ । समाचारपत्रलाई ल्याटिन भाषामा नोवेल र समाचारपत्रलाई सङ्केत गर्न नोवेल शब्द प्रयोग गरेको पाइन्छ । त्यसको सामान्य अर्थ केवल घटनालाई समाचारका रूपमा सम्प्रेषित गर्नु भन्ने हुन्थ्यो । तर यसको अर्थगत प्रयोजनियता आज अर्कै भएको छ । घटना, वस्तु, पात्र, परिवेश, कौतूहलता, द्वन्द्व, प्रस्तुतिविशेष समेतको साहित्यिक गद्य आख्यानमात्मक विधा विशेष नै उपन्यास हो ।<sup>१५</sup>

आधुनिक विधाको रूपमा उपन्यासको इतिहास त्यति पुरानो छैन । अंग्रेजी आख्यानमात्मक विधा ‘नोवल’ उपन्यासको नामले हिन्दी, बंगाली आदि साहित्यमा पनि स्थापित हुँदै नेपाली साहित्यमा आख्यान विधाका रूपमा विक्रमको बीसौं शताब्दीको दोस्रो पाउको अन्तिम चरणदेखि मात्र सुरु भएको हो । नेपाली उपन्यासको उद्गम खोज्दै जाने हो भने पाश्चात्य साहित्यको अंग्रेजी वा यसको मूल ल्याटिन र रोमन साहित्यसम्म पुग्नुपर्ने हुन्छ । संस्कृतमा उपन्यासको अर्थ कुनै वस्तु कसैको समीपमा राख्नु भन्ने हुन्छ । संस्कृत साहित्यमा कुशलतापूर्वक कुनै विशेष अर्थ प्रकट गर्ने प्रक्रिया विशेष नै उपन्यास हो भनेर उपन्यासको प्रयोजनपरक अर्थ लगाइएको छ । जीवन र जगत्का यथार्थ पक्षलाई समेटेर समाजका सामु प्रस्तुत गर्नु नै उपन्यास हो । आधुनिक समयमा छुट्टै पहिचान बनाउन सफल साहित्यिक विधा उपन्यास पाश्चात्य साहित्य चिन्तन परम्पराको उपज हो ।

<sup>१४</sup> कृष्णहरि बराल, नेत्र एटम, उपन्यास-सिद्धान्त र नेपाली उपन्यास, साभा प्रकाशन, ललितपुर, २०५८, पृष्ठ, ३ ।

<sup>१५</sup> राजेन्द्र सुवेदी, नेपाली उपन्यास : परम्परा र प्रवृत्ति, साभा प्रकाशन, ललितपुर, २०६४, पृष्ठ, ५ ।

### ३.२ उपन्यासको परिभाषा

साहित्यका अनेक विधाहरूमध्ये उपन्यास पनि एक हो । यो आधुनिक साहित्यको कान्छो तथा नयाँ विधा हो । प्राचीन साहित्यमा उपन्यासले कथा, कहानी, खिस्सा, टिप्पणीमूलक समाचार जे अर्थ लगाए पनि आधुनिक साहित्यमा उपन्यासको आफ्नो छुट्टै अर्थ छ । उपन्यासको लेखन तथा प्रकाशन हुन थालेपछि यसको व्याख्या, विश्लेषण तथा समालोचना पनि हुन थाल्यो । उपन्यासमा निहित विशेषताहरूलाई आधार बनाएर परिचय तथा परिभाषा दिने क्रम प्रारम्भ भयो । उपन्यासलाई पूर्वीय तथा पाश्चात्य साहित्यका विद्वान्हरूले आफुभन्दा अगाडिका र आफ्ना समयावधिमा प्रकाशित उपन्यासका आधारमा उपन्यासलाई आ-आफ्नो तवरले परिभाषा गरेका छन् ।

विभिन्न शब्दकोशहरूमा तथा विद्वान्हरूले उपन्यासको परिभाषा यस प्रकार प्रस्तुत गरिएको पाइन्छ ।

“वृहत् आकार भएको गद्याख्यान अथवा वृत्तान्त जसअन्तर्गत वास्तविक जीवनको प्रतिनिधित्व गर्ने, पात्र, चरित्र र कार्यको कथानकका आधारमा चित्रण गरिएको हुन्छ ।”<sup>१६</sup>

—न्यू इङ्ग्लिस डिक्सनेरी

“वृहत् र वृहत्तर आख्यानात्मक रचनाको प्रस्तुति उपन्यास हो ।”<sup>१७</sup>

—क्याम्ब्रिज इन्साइक्लोपिडिया

“उपन्यास साहित्यको अठारौँ शताब्दीपछिको गद्यात्मक आख्यानलाई बुझाउने अभिधात्मक शब्द हो । यसमा मानवजीवनको व्यापक पक्ष समेटिएको हुन्छ ।”<sup>१८</sup>

—विश्व युनिभर्सिटी इन्साइक्लोपिडिया

“उपन्यास धेरै अध्याय वा खण्डहरूमा लेखिने लामो साहित्यिक तथा चरित्रप्रधान गद्य महाकाव्य हो ।”<sup>१९</sup>

—वृहत शब्दकोश

<sup>१६</sup> पूर्ववत्, २०६४, पृष्ठ, ११ ।

<sup>१७</sup> ऐजन् ।

<sup>१८</sup> ऐजन् ।

<sup>१९</sup> वृहत शब्द कोश ।

“उपन्यास काल्पनिक पात्रको जीवन हरेक अङ्गमा विस्तृत जानकारी प्रस्तुत गर्ने गद्य कथा हो ।”<sup>२०</sup>

—नेपाली शब्द सागर

उपर्युक्त परिभाषा अनुसार उपन्यास आख्यानमात्मक गद्य साहित्यिक विधा हो । यसको आकार कथाको भन्दा ठूलो हुन्छ र यसले जीवन र जगत्को सर्वाङ्गीण पक्षको चित्रण गर्दछ । प्राचीन कालमा छोटो-छोटो खिस्साहरू पनि उपन्यासको कोटीमा पर्ने भए तापनि आधुनिक कालमा भने यसले महाकाव्य समकक्षी कृति नै उपन्यास हो भन्ने निष्कर्ष शब्दकोशीय परिभाषाबाट स्पष्ट हुन्छ ।

पाश्चात्य तथा पूर्वीय साहित्यका विद्वान्हरूले पनि उपन्यासको परिभाषा गरेका छन् । त्यसमध्ये केही पाश्चात्य विद्वान र पूर्वीय नेपाली साहित्यका विद्वान समीक्षकहरूका केही परिभाषा यसप्रकार रहेका छन् ।

“विस्तारित गद्याख्यानको साभ्ना विशेषता भएका सबै खाले कृतिहरूलाई उपन्यास भनिन्छ ।”<sup>२१</sup>

—एम.एच. अब्राम

“उपन्यासको रूची र अस्तित्व जहाँ पनि नारी र पुरुषका जीवनका साथै मानवीय कार्य र भावनाको भव्य चित्रण गर्नमा रहेको छ ।”<sup>२२</sup>

—डब्लु.एच. हड्सन

“हालको जटिल एवं संकटग्रस्त सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि संस्कारद्वारा पिडीत मानवजातीको एउटा प्रतिनिधिमूलक अभिव्यक्ति नै उपन्यास हो ।”<sup>२३</sup>

—इ.एम. फोर्स्टर

“उपन्यासले मानवजीवनको सम्पूर्णताको अध्ययन गर्ने भएकाले यसको महत्व अन्य कला र साहित्यभन्दा स्वभाविक रूपले बढी छ ।”<sup>२४</sup>

—डी.एच. लरेन्स

“उपन्यास मानव जीवनकै सम्पूर्णताको अभिव्यक्ति हो ।”<sup>२५</sup>

<sup>२०</sup> नेपाली शब्द सागर ।

<sup>२१</sup> पूर्ववत्, २०५८, पृ. ७ ।

<sup>२२</sup> ऐजन ।

<sup>२३</sup> ऐजन ।

<sup>२४</sup> ऐजन ।

—कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान

“कुनै शाश्वत् मानवीय मर्मको अविस्मरणीय कलात्मकताले नै उपन्यासलाई महान् बनाउछ ।”<sup>२६</sup>

—वासुदेव त्रिपाठी

“उपन्यास मानवीय जीवनको चित्रण गर्ने विशालकाय आख्यानात्मक गद्य संरचना हो ।”<sup>२७</sup>

—मोहनराज शर्मा

“म उपन्यासलाई मानव जीवनको चित्र मान्छु । मानव चरित्रमाथि प्रकाश पार्नु र जीवनका रहस्यलाई उद्घाटन गरिदिनु उपन्यासको मूल काम हो ।”<sup>२८</sup>

—आख्यानकार प्रेमचन्द्र

“पूर्वापर तारतम्यमा सुसम्बद्ध गरेर लेखिएको आख्यानात्मक रचनालाई उपन्यास भनिन्छ ।”<sup>२९</sup>

—राजेन्द्र सुवेदी

उपन्यास समय र परिस्थिति अनुसार आफुलाई परिवर्तित र परिष्कृत गर्दै विकासको धारमा बहाउन सक्ने लचिलो गतिशील साहित्यिक विधा हो । उपन्यास काल्पनिक पात्रको कार्य व्यापारद्वारा यथार्थ घटनालाई सुव्यवस्थित र शृङ्खलित रूपमा अभिव्यक्ति गर्ने आवश्यक लम्बाइ भएको विधा हो । जीवन र जगतको चित्रण भएको समय सान्दर्भिक रूपमा परिष्कृत र परिमार्जित महाकाव्य समकक्षी गद्य भाषामा लेखिएको नवीन विधा हो ।

### ३.३ उपन्यासको विधागत स्वरूप

आधुनिक साहित्यका अन्य विधामा जस्तै उपन्यासको पनि आफ्नो छुट्टै विधागत स्वरूप रहेको हुन्छ । अठारौँ शताब्दीमा विकशित भएको उपन्यासले वर्तमानसम्मको यात्रामा धेरै उत्तार चढाव पनि पार गरिसकेको छ । पाश्चात्य साहित्य यात्रादेखि पूर्वीय साहित्य यात्रामा

---

<sup>२५</sup> ऐजन ।

<sup>२६</sup> ऐजन ।

<sup>२७</sup> ऐजन ।

<sup>२८</sup> पूर्ववत्, २०६४, पृ १७ ।

<sup>२९</sup> पूर्ववत्, २०५८, पृ, ८ ।

उपन्यासका परिभाषाहरूले कसैले एक पक्षलाई जोड दिएका छन् भने कसैलाई अर्कै पक्षलाई जोड दिएका छन् । उपन्यासको स्वरूप परिवर्तनशील प्रयोगधर्मी र विधि उन्मुख रहेको छ । यसलाई सधैभरि निश्चित स्वरूपको सीमामा बाँध्न कठिन भए तापनि यसको आफ्नै आधारभूत मौलिक स्वरूप रहेको हुन्छ ।

उपन्यासको रूप साहित्य विधानमा विधागत मौलिकता पाउन सकिन्छ । साहित्यक विधातत्व र वस्तु विन्यासका आधारमा उपन्यासको स्वरूप अन्य विधा नाटक, कथा र महाकाव्यसँग केही मेल खाए पनि यसको आफ्नो छुट्टै मौलिक स्वरूप छ । कथा र उपन्यास दुई आख्यानात्मक विधा बीच अधिकांश गुणहरू समान छन् तर उपन्यासलाई कथा र कथालाई उपन्यास भन्न मिल्दैन । कथामा छोटो आख्यान, थोरै पात्र, सानो परिवेश र सीमित उद्देश्य हुन्छ भने त्यसको विपरीत उपन्यासमा उक्त सबै तत्वहरूको व्यापकता हुन्छ । उपन्यासमा एउटा मूल आख्यानलाई अघि बढाउन सहायक उपाख्यानको समावेश गरिएको हुन्छ । उपन्यास र महाकाव्य दुवै वृहत् आयामका साहित्यिक विधा हुन् । विधातत्वका आधारमा यी दुईबीच धेरै समानता भए पनि महाकाव्य पद्यमय विधा हो । उपन्यासलाई विद्वानहरू आधुनिक गद्य महाकाव्य भन्न थालेका छन् तापनि यसको स्वरूप महाकाव्यभन्दा नितान्त पृथक छ ।<sup>३०</sup>

उपन्यास लचिलो र विकासशील साहित्यिक विधा भएकाले यसमा समय सान्दर्भिक नयाँ-नयाँ प्रयोग पाइन्छ तर पनि यो रूपहीन चाँही हुँदैन । यसर्थ उपन्यास निश्चित सिद्धान्त र मान्यतालाई अस्वीकार गर्दै खुला आकाशमा स्वतन्त्र रूपमा अघि बढ्न चाहने गद्य विधा हो । निश्चित उद्देश्य प्राप्तिका लागि निश्चित परिवेशलाई समेट्दै वर्णनात्मक तथा उपन्यासकारको निजी शैलीमा घटना तथा काल्पनिक पात्रको रोचक आख्यानात्मक प्रस्तुति नै उपन्यासको खास विधागत स्वरूप देखिन आउँछ ।<sup>३१</sup>

<sup>३०</sup> पूर्ववत्, २०५८, पृष्ठ, ७७ ।

<sup>३१</sup> कृष्णबहादुर बस्नेत, आधुनिक नेपाली उपन्यास, काठमाण्डौ: दीक्षान्त पुस्तक प्रकाशन, २०५९, पृष्ठ, २२ ।

### ३.४ उपन्यासका आधारभूत तत्वहरू

उपन्यासमा अनेकौँ स्वरूप र विषयगत भिन्नता पाइन्छ । उपन्यासका आधारभूत तत्वहरूका बारेमा सबै विद्वानहरू एक मत छैनन् । विद्वानहरूले गरेका विभिन्न परिभाषाहरूमा समेत एक मत देखिदैन तापनि कुनै तत्वहरूको घटीबढी हुनु वा नहुनु जस्ता असमानताभिन्न कही समान वस्तुको अपेक्षा गरिएको हुन्छ । उपन्यास परम्परामा प्रायः सबै अध्येताहरूले कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र संवाद, परिवेश, भाषाशैली र उद्देश्यलाई विधा तत्वका रूपमा लिइएको पाइन्छ । आधुनिक उपन्यासको बदलिदो गतिसँगै यसका तत्वहरू पनि थप गरिएको पाइन्छ । यहाँ विभिन्न विद्वानहरूका विचारलाई मनन गर्दै उपन्यास संरचनाका आधारभूत तत्वहरूलाई निम्नानुसार चर्चा गर्न सकिन्छ ।

#### ३.४.१ कथावस्तु

कथावस्तु उपन्यासको आधारवस्तु हो । उपन्यासमा कथावस्तु व्यक्ति तथा समाजमा घटेका घटनाहरूको योजनावद्ध रूप हो । यसमा चरित्रले घटाएका घटना, उपन्यासकारका चिन्तन, मनन र कल्पना समावेश गरिएको हुन्छ । कथावस्तु उपन्यासको कच्चा सामग्री हो । सामान्यतया कथावस्तुको विकास आदि, मध्य र अन्त्यको ढाँचामा हुन्छ । आधुनिक उपन्यास परम्परामा यसको विकास सरल, रैखिक र वृत्ताकारीय ढाँचामा हुन्छ । यसको विकासका आरम्भ, संघर्ष विकास, चरमोत्कर्ष सङ्घर्ष, ह्रास र उपसंहार गरी पाँच अवस्था हुन्छन् । प्राचीन उपन्यासमा घटना तथा कथावस्तुलाई बढी जोड दिइन्थ्यो तर बदलिदो चिन्तनसँगै घटना प्रधान र चरित्र प्रधान गरी उपन्यास दुई समूहमा विभाजित भएको पाइन्छ । उपन्यासको विकाससँगै कथावस्तुको महत्व घट्दै गएको भनिए तापनि यसमा कथावस्तुको आवश्यकता भने उत्तिकै रहेको पाइन्छ ।

#### ३.४.२ चरित्र चित्रण

उपन्यासमा देखिने मानवीय र मानवेत्तर प्राणीलाई चरित्र भनिन्छ । चरित्रलाई पात्र पनि भनिन्छ । उपन्यासमा चरित्रको भूमिका देखाउने ढङ्गलाई चरित्र चित्रण भनिन्छ । अर्को अर्थमा पात्रको संवाद तथा कार्यव्यापारलाई चरित्र चित्रण भनिन्छ । चरित्र आख्यानको प्रतिनिधी व्यक्ति हो । आधुनिक उपन्यासमा कथा वस्तुको भन्दा चरित्रको महत्व सर्वोपरि

मानिन्छ । आधुनिक उपन्यास परम्परामा चरित्र प्रधान उपन्यासको महत्व बढ्दो देखिन्छ । उपन्यासमा निर्वाह गरेको भूमिकाको आधारमा पात्रहरू प्रमुख, सहायक र गौण गरी तीन प्रकाका हुन्छन् । त्यस्तै गोला तथा चेष्टा पात्र, अन्तर्मुखी र बहिरर्मुखी पात्र, सार्वभौम तथा आञ्चलिक पात्र, पारस्परिक तथा मौलिक पात्रमा समेत वर्गीकरण गरिएको पाईन्छ । त्यसैगरी लिङ्गका आधारमा स्त्री र पुरुष, प्रवृत्तिका आधारमा सत् र असत्, स्वभावका आधारमा स्थिर र गतिशील पात्रका रूपमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । त्यस्तै चरित्रलाई जीवन चेतना र आसन्नता तथा आवद्धताका आधारमा पनि वर्गीकरण गरिन्छ ।

### ३.४.३ परिवेश

उपन्यासमा पात्र वा चरित्रले कार्यव्यापार गर्ने स्थान, समय र वातावरण अथवा घटना घटित हुने स्थान विशेषलाई परिवेश भनिन्छ । परिवेशलाई देश, काल, पर्यावरण, वातावरण एवं कार्यपीठिका समेत भन्ने गरिन्छ । परिवेशलाई आन्तरिक र बाह्य गरी दुई भागमा विभाजन गरिन्छ । आन्तरिक परिवेशमा व्यक्तिको वैयक्तिक मनोगत पर्दछ भने बाह्य परिवेशमा परिवेशमा सामाजिक, राजनैतिक तथा प्राकृतिक जगत् पर्दछन् । परिवेशभित्र व्यक्तिगत व्यावहार, सामाजिक परम्परा, रीतिस्थिति, प्रथा, संस्कार, जनजीवनका रहनसहन, प्राकृतिक वातावरण आदि पर्दछन् । परिवेशको सजीव चित्रणले उपन्यासलाई साहित्यिक, काव्यात्मक र आलङ्कारिक समेत बनाउँछन् । यसर्थ परिवेश उपन्यासको एक अभिन्न अंगका रूपमा देखा पर्दछ ।

### ३.४.४ भाषाशैली

भाषा साहित्यिक अभिव्यक्तिको माध्यम हो भने त्यसलाई अभिव्यक्त गर्ने तरिका शैली हो । भाषाले उपन्यासका सम्पूर्ण तत्वहरूलाई संगठित गर्ने कार्य गर्दछ । उपन्यासको शैली गद्य हुन्छ तर यस प्रकारको भाषालाई आलङ्कारिक तथा काव्यात्मक बनाउनु उपन्यासकारको शैली हो । आधुनिक उपन्यासको भाषामा नयाँ-नयाँ शैलीको प्रयोग गरिएको देखिन्छ । वर्णनात्मक, विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, नाटकीय, पत्रात्मक, दैनिक तथा चेतन प्रवाह शैलीको प्रयोग हुनु आधुनिक उपन्यासको भाषाशैलीगत उपलब्धी हो ।

### ३.४.५ द्वन्द्व

द्वन्द्व उपन्यासको सहायक तत्व हो । यसले कथानकलाई अघि बढाउन पात्रहरूबीच महत्वपूर्ण भूमिका खेल्दछ । द्वन्द्व दुई किसिमका हुन्छन् । ती हुन् आन्तरिक द्वन्द्व र बाह्य द्वन्द्व । पात्रको आफ्नो मनभित्र हुने द्वन्द्व आन्तरिक द्वन्द्व हो भने पात्र-पात्रबीच रहने द्वन्द्व बाह्य द्वन्द्व हो । द्वन्द्वले पनि उपन्यासको संरचनामा प्रभाव पारिरहेको हुन्छ ।

### ३.४.६ दृष्टिविन्दु

दृष्टिविन्दु पनि उपन्यासको अर्को महत्वपूर्ण एवं सहायक तत्व हो । आधुनिक दार्शनिक उपन्यासमा यसको महत्वपूर्ण स्थान रहन्छ । उपन्यासमा उपन्यासकारले कथा वाचनका लागि, बस्न वा उभिनका लागि रोजेको स्थान विशेषलाई नै दृष्टिविन्दु भनिन्छ । उपन्यासकारले कुनै पात्रका माध्यमबाट वा स्वयं आख्यान प्रस्तुत गर्दछ । उपन्यासमा आन्तरिक वा प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दु र बाह्य वा तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दु गरी दुई प्रकारका दृष्टिविन्दु रहेका हुन्छन् । उपन्यासकार घटनाभन्दा पृथक रहेर पात्रका माध्यमले आख्यान प्रस्तुत गर्दछ भने त्यो तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दु हो । त्यसैगरी उपन्यासकार 'म' का माध्यमबाट कथावस्तु प्रदर्शन गर्दछ भने त्यो प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दु हो । उपन्यास एक विशाल आख्यान विधा भएकाले कुनै एउटा दृष्टिविन्दुमा सीमित राख्नु असम्भव देखिन्छ ।

### ३.४.७ कौतूहल

यो उपन्यासको एक सहायक तत्व हो । यसले कथानकलाई प्रभावकारी एवं रोचक बनाउँछ । उपन्यास लेखनको सफलता, असफलता यसमा पाइने कौतूहलमा निर्भर रहन्छ । कौतूहलले पाठकलाई कृति पढ्न बाध्य पनि बनाउँछ । कृतिभित्र रहेको रोचक तथ्य पत्ता लगाउन कौतूहलले महत्वपूर्ण भूमिका खेल्ने हुन्छ ।

### ३.४.८ उद्देश्य

उद्देश्य बिना कुनै पनि साहित्यिक विधाको रचना सम्भव हुदैन । यसर्थ उपन्यास लेखनको कुनै न कुनै उद्देश्य रहेको हुन्छ । यसको विषय अनुसार पाठकलाई आनन्द दिनु तथा मनोरञ्जन दिनु, धार्मिक सन्देश दिनु, पूण्य कमाउनु र आर्थिक लाभ प्राप्त गर्नु यसको उद्देश्य

हो । समाजलाई चेतनशील बनाएर परिवर्तनको बाटोमा डोच्याउनु उपन्यास लेखनको आधुनिक उद्देश्य रहेको छ । यसर्थ समाजलाई सुधारको सन्देश दिनु, सामाजिक समस्याको यथार्थ चित्रण गर्नु, समाजका विकृति र विसंगतिको चिरफार गर्नु साथै सांस्कृतिक प्रचार प्रसार गर्नु उपन्यास लेखनको उद्देश्य हो ।

### ३.४.९ कथोपकथन वा संवाद

कथोपकथन वा संवाद उपन्यासको महत्वपूर्ण सहायक तत्व हो । यसले उपन्यासलाई सुरुदेखि अन्त्यसम्म सक्रिय बनाउँछ । यसले उपन्यासलाई रोचक तथा मञ्चीय बनाउन महत्वपूर्ण भूमिका खेल्दछ । कथोपकथनका माध्यमबाट उपन्यासमा पात्रहरूले गर्ने कुराकानी स्पष्ट हुन्छ ।

समग्रमा उपन्यासलाई सफल बनाउन यी सहायक तत्वहरूको पनि त्यतिकै महत्पूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ ।

### ३.५ उपन्यासको प्रकारगत वर्गीकरण

उपन्यास आधुनिक साहित्यको नयाँ एवं कान्छो विधा हो । यसको इतिहास छोटो भएर पनि बहुलता पाउन सकिन्छ । विभिन्न तत्वहरूले उपन्यासलाई विभिन्न स्वरूप र पहिचान प्रदान गर्दछन् । यिनै आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण गरिएको पाइन्छ । प्रथमतः उपन्यासलाई साहित्यिक परम्परामा मूल्य राख्ने र सस्ता मनोरञ्जनका उपन्यास गरी दुई भागमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । साहित्यिक मूल्य मान्यताका आधारमा वर्गीकरण गर्न सकिने उपन्यासलाई विभिन्न वर्गमा विभाजन गर्न सकिन्छ । कथानक, भाषाशैली, विषयवस्तुको स्रोत आदिका आधारमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।<sup>३२</sup>

#### ३.५.१ कथानकका आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण

कथानक उपन्यासको महत्वपूर्ण तत्व मात्र नभएर प्राण नै हो । यसको योजना र प्रधानताका आधारमा उपन्यासलाई निम्नानुसार उपवर्गमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

---

<sup>३२</sup> पूर्ववत्, २०५९, पृष्ठ २५ ।

### ३.५.१.१ घटना प्रधान उपन्यास

घटना प्रधान उपन्यासमा व्यक्ति तथा सामाजिक जीवनमा घटन सक्ने घटनाहरूलाई विशेष जोड दिएको हुन्छ । यस प्रकारका उपन्यासमा चरित्र चित्रणभन्दा कथानक सबल र सशक्त रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुन्छ । यसमा घटनाहरूको शृङ्खलित र व्यवस्थित संयोजन र विस्तार गरिएको हुन्छ । रूपनारायण सिंहको **भ्रमर** घटना प्रधान उपन्यासको उदाहरण हो ।

### ३.५.१.२ चरित्र प्रधान उपन्यास

उपन्यासमा घटनाको संगठित वर्णन र विस्तारभन्दा चरित्र चित्रणमा बढी जोड दिइन्छ भने त्यस्तो उपन्यासलाई चरित्र प्रधान उपन्यास भनिन्छ । पात्रको सक्रिय उपस्थिति र उसको मानसिक विश्लेषण भएका उपन्यासलाई चरित्र प्रधान उपन्यास भनिन्छ । यस्ता उपन्यासमा कथानक मुख्य पात्रको सेरोफेरोमा घुम्छ । आधुनिक उपन्यासमा कथानकलाई भन्दा चरित्र चित्रणलाई बढी ध्यान दिइन्छ । लैनसिंह बाइदेलको **लङ्गाडाको साथी** र विजय मल्लको **अनुराधा** चरित्र प्रधान उपन्यासका उदाहरण हुन् ।

### ३.५.१.३ घटना र चरित्र मिश्रित उपन्यास

एउटै उपन्यासमा कतै घटनाको प्रधानता र कतै चरित्रको प्रधानता रहन्छ भने त्यस्तो उपन्यासलाई मिश्रित प्रकारको उपन्यास मान्न सकिन्छ । यस्ता उपन्यासमा कथानक सबल भएर पनि उपन्यास नायकको नेतृत्वमा अघि बढेको हुन्छ । रूपनारायण सिंहको **भ्रमर** उपन्यासलाई मिश्रित उपन्यासका रूपमा लिन सकिन्छ ।

### ३.५.१.४ प्रणय प्रधान उपन्यास

उपन्यासमा घटना र चरित्र उत्तिकै सबल भएर पनि प्रेम प्रणय सन्दर्भ र प्राणजन्य भाव केन्द्रिय रहन्छ भने त्यस्ता उपन्यासलाई प्रणय प्रधान उपन्यास भनिन्छ । यस्ता उपन्यासमा भौतिक पक्षलाई भन्दा हार्दिक पक्षलाई बढी जोड दिइन्छ । यस्ता प्रेममा युगल जोडीका कथा पाइन्छ । लैनसिंह बाइदेलको **माइतीघर** यस्तै उपन्यासको उदाहरण हो ।

## ५.२ शैलीका आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण

शैली उपन्यास लेखनको निजी तरिका हो । आधुनिक उपन्यासको विकाससँगै नयाँ-नयाँ शैलीमा उपन्यास लेख्न थालेको पाइन्छ । शैलीका आधारमा उपन्यासलाई निम्न अनुसार वर्गीकरण गरिएको छ ।<sup>३३</sup>

### ३.५.२.१ वर्णनात्मक उपन्यास

उपन्यासकार स्वयंले घटना, पात्र, देश, काल, वातावरण आदिको वर्णन एवं विश्लेषण गर्दछ भने त्यो वर्णनात्मक उपन्यास हुन्छ । तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दु रहने हुनाले यस्ता उपन्यासमा पात्रका बानी, विचार र स्वरूपको सिधा र प्रत्यक्ष वर्णन हुन्छ । लैनसिंह बाड्देलको मुलुक बाहिर र इन्द्रबहादुर राईको आज रमिता छ आदि वर्णनात्मक उपन्यास हुन ।

### ३.५.२.२ आत्मकथात्मक उपन्यास

प्रथम दृष्टिबिन्दुमा लेखिएको उपन्यास आत्मकथात्मक हुन्छ । यसमा पात्रले घटनाहरू आत्मकथाकै रूपमा प्रस्तुत गरेको हुन्छ । यसले आत्मसंस्करणकै अभिव्यक्ति प्रस्तुत गर्दछ । यस्ता उपन्यासमा घटनाहरूको बाहुल्यताभन्दा चरित्र उद्घाटनमा जोड दिएको हुन्छ । पारिजातको शिरीषको फूल मदनमणी दीक्षितको माधवी यस्तै उपन्यास हुन् ।

### ३.५.२.३ पत्रात्मक उपन्यास

यस्ता उपन्यासमा सम्पूर्ण औपन्यासिक घटना, कार्यव्यापार र चरित्र पत्रकै आधारमा निर्धारण हुन्छ । पत्रलेखक नै मूल नायकका रूपमा देखा पर्दछ । पत्रभिन्न सम्पूर्ण औपन्यासिक तत्व समेटेर लेखिएको उपन्यास पत्रात्मक उपन्यास हो । आधुनिक उपन्यास बीच-बीचमा पत्रात्मक शैलीको प्रयोग पाइन्छ । असित राईको पहिरो जाने पहाड यस्तै शैलीको उपन्यास हो ।

---

<sup>३३</sup> पूर्ववत्, २०५८, पृ, ५८ ।

### ३.५.२.४ डायरी उपन्यास

दैनिक जीवनका घटनालाई सम्भनाका लागि डायरीमा टिपेर राखिएको लेखनलाई डायरी (दैनिकी) भनिन्छ । यही दैनिकीमा आधारित भएर लेखिएका उपन्यासलाई डायरी उपन्यास भनिन्छ । यसमा मूलतः एउटै पात्रको डायरी लेखिने हुँदा पात्र सङ्ख्या कम हुन्छ । मनोवैज्ञानिक उपन्यासमा डायरी शैलीको प्रयोग खास गरी पात्रको भाव ग्रन्थिको विश्लेषण तथा मानसिक जटिलताको समाधान गर्नमा गरिन्छ । पारिजातको अन्तर्मुखी यस्तै प्रकारको उपन्यास हो ।

### ३.५.२.५ चेतन प्रवाह शैलीका उपन्यास

पात्रको असङ्गत कल्पना र चेतनाको सोभो प्रस्तुतिद्वारा उसको स्वभावको विश्लेषण गरी लेखिएका उपन्यासलाई चेतन प्रवाह शैलीका उपन्यास भनिन्छ । यस्ता उपन्यासमा उपन्यासकारमा जे जस्ता विचार आउँछन्, त्यसलाई जस्ताको त्यस्तै रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ । स्वतन्त्र मन र चिन्तनद्वारा व्यक्तिको जीवनका आन्तरिक पाटालाई प्रस्तुत गरिएको उपन्यास चेतन प्रवाह शैलीको उपन्यास हो । ध्रुवचन्द्र गौतमको उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य यस्तै शैलीको उपन्यास हो ।

### ३.५.३ विषयवस्तुको स्रोतका आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण

विषयवस्तु उपन्यासको कच्चा सामग्री हो । यसको संगठित रूप नै उपन्यासको कथानक हो । उपन्यासमा वर्णित विषयवस्तुको स्रोतका आधारमा उपन्यासलाई निम्न रूपमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।<sup>३४</sup>

#### ३.५.३.१ साहसिक तथा जासुसी उपन्यास

स्वैर कल्पनात्मक विषयवस्तुमा साहसिक तथा जासुसी उपन्यास लेखिन्छन् । रहस्य, रोमाञ्चक, दैवी चमत्कार, साहसिक कार्य, तिलस्मी, जादु आदि घटनाको प्रधान्य रहेको उपन्यास साहसिक उपन्यासको वर्गमा पर्दछ । उपन्यासमा रहस्यमय घटनाको सृजना गर्नु,

---

<sup>३४</sup> ऐजन् ।

त्यसको बहादुरीपनको सम्मान गरेर पाठकलाई आन्नद दिनु यस्ता उपन्यासको लक्ष्य हो । गिरीश वल्लभ जोशीको वीरचरित्र यसको उदाहरण हो ।

### ३.५.३.२ पौराणिक तथा मिथकीय उपन्यास

परापूर्वकालमा मानवीय स्वभाव तथा कार्यहरूको वर्णन गरिएको उपन्यास पौराणिक तथा मिथकीय उपन्यास हुन्छ । यस्ता उपन्यासको कथावस्तु पुराण, दन्त्य कथाबाट लिइन्छ । पुराण तथा प्राचीन परम्पराबाट घटना लिएर वर्तमानको उद्घाटन गर्नु यस्ता उपन्यासको उद्देश्य हो । विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको सुम्निमा यस प्रकारको उपन्यास हो ।

### ३.५.३.३ ऐतिहासिक उपन्यास

इतिहासको कुनै कालखण्डमा घटित घटनाहरूबाट विषय लिएर लेखिएको उपन्यासलाई ऐतिहासिक उपन्यास भनिन्छ । यस्ता उपन्यासमा युग विशेषका घटनालाई स्थान दिइन्छ । डायमन शमशेर राणाको वसन्ती, सेतो बाघ यस्तै उपन्यासका उदाहरण हुन् ।

### ३.५.३.४ सामाजिक उपन्यास

समाजका सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सत्य तथ्य घटनालाई विषयवस्तु बनाएर लेखिएका उपन्यास सामाजिक उपन्यास हुन् । यसमा समाजको परिवेश, वर्ग, व्यावहार र आस्था आदिलाई समेटिएको हुन्छ । यस्ता उपन्यासमा सामाजिक समस्यालाई यथार्थ रूपमा प्रस्तुत गर्दै आदर्श समाजको परिकल्पना गरिएको हुन्छ । रूद्रराज पाण्डेको रूपमती, माइतीघर यस्तै उपन्यास हुन् ।

### ३.५.३.५ आञ्चलिक उपन्यास

स्थानीय परिवेशलाई समेटेर लेखिएका उपन्यास आञ्चलिक उपन्यास हुन् । यस्ता उपन्यासमा सानो क्षेत्रमा वर्णित भू-बनोट, स्थानीय परम्परा, संस्कार, जीविकोपार्जन आदिको विशेष महत्व हुन्छ । विनोदप्रसाद धितालको उज्यालो हुनु अधि शकर कोइरालाको खैरेनी घाट आदि यस प्रकारका उपन्यास हुन् ।

### ३.५.३.६ मनावैज्ञानिक उपन्यास

व्यक्ति मनका आन्तरिक यथार्थ उद्घाटन गर्ने उपन्यासलाई मनोवैज्ञानिक उपन्यास भनिन्छ । यस्तो उपन्यासमा कथावस्तु, पात्रको मनोगत तथा यौन मनोगतबाट टिपिन्छ । मानसिक विश्लेषणबाट व्यक्तिको आन्द्राभूँडी खोतल्ने यस्ता उपन्यासमा मनोविकृतिको चित्रण र त्यसको कारण प्रस्तुत गरिएको हुन्छ । पात्रको दैनिक आवश्यक व्यावहारका बारेमा उसकै मनका माध्यमले लेखिने उपन्यास यस वर्गमा पर्दछन् । गोविन्द गोठालेको पल्लो घरको भयाल विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको नरेन्द्र दाइ यस्तै उपन्यास हुन् ।

### ३.५.३.७ विज्ञानमूलक उपन्यास

आधुनिक युगमा विज्ञानले विकशित गरेका चामत्कारिक घटनालाई कथावस्तुका रूपमा समेटेर लेखिएका उपन्यास विज्ञानमूलक उपन्यास हुन् । यस्ता उपन्यासमा वैज्ञानिक उन्नति र त्यसका सन्दर्भमा समाज र मानवको नवीन व्याख्या गरिएको हुन्छ । मुक्ति उपाध्याय बरालको हिमाली यस्तै उपन्यास हो ।

### ३.५.३.८ जीवनीमूलक उपन्यास

जीवनीमूलक उपन्यासमा राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय रूपमा ख्याति प्राप्त व्यक्तिको जीवनमा घटेका घटनालाई विषयवस्तु बनाइएको हुन्छ । लैनसिंह बाड्देलको रेम्ब्रान्ट यस्तै उपन्यासको उदाहरण हो ।

### ३.६ उपन्यासको महत्व

साहित्यका अनेक विधाहरूमध्ये उपन्यास एउटा विधा हो । आधुनिक साहित्यमा यसले महत्वपूर्ण स्थान आगटेर सर्वाधिक लोकप्रियता कमाएको छ । यसको मुख्य कारण हो उपन्यासको रोचकता, वृहत्त जीवनको परिचयन र सत्याभास । यसले गर्दा उपन्यासको सर्वतोमुखी औचित्य मात्र स्वीकृत भएको होइन, जीवन तथा समाजलाई नजिकबाट हेर्ने, विश्लेषण गर्ने र सर्वाङ्गण चित्र अंकित गर्ने भाव अभिव्यक्तिको बाटोमा यो अपेक्षाकृत, सशक्त र सक्षम सिद्ध भएको छ । उपन्यास जीवन र जगतप्रति नै एक विहंगम दृष्टि हो ।

जसलाई बुझ्ने, केलाउने र चित्रण गर्ने प्रयत्न अत्यन्तै यथार्थिक हुन्छ । यसको महत्व जीवनको दर्शन र मानसिक प्रक्रियाहरूको अध्ययनमा निहित हुन्छ ।

उपन्यासले आन्तरिक र बाह्य प्रवृत्तिहरूको चित्रण गरेर जीवनलाई नाप्छ । त्यसको मूल्य खोज्छ, समाजलाई ठम्याउँछ र मोड्ने प्रयत्न गर्छ, गतिलाई समाउँछ र दिशा दिन संकेत गर्छ । यसले वैज्ञानिक तथ्यभन्दा परको सत्यलाई टिप्ने गर्दछ । यसले युग विशेषको सामाजिक जीवनमा अन्तर्निहित सांस्कृतिक वैभवलाई समेत प्रदर्शन गर्दछ । यसले पाठकलाई मनोरञ्जन दिनुका साथै पढ्ने हौसला प्रदान गर्दछ ।

उपन्यास जीवनको समष्टि प्रस्तुति हो । यसको सेरोफेरोमा मान्छेको जीवन छरिएको हुन्छ । पुस्ता-पुस्ताको पात्रमा सभ्यता, संस्कृति र इतिहासका मोलताललाई औपन्यासीकरण गर्ने प्रवृत्ति उपन्यासमा प्रयोग भएको छ । यस्तै वास्तवितालाई पुनः सिर्जना गरिनु उपन्यासको प्राप्ति हो । यसै प्राप्तिमा उपन्यासको महत्व निहित रहेको हुन्छ ।

### ३.७ नेपाली उपन्यासको विकासक्रम र धारागत प्रवृत्तिहरू

#### ३.७.१ नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमि

उपन्यास विधा पाश्चात्य साहित्यको देन हो । पाश्चात्य साहित्यमा नयाँ विधाको रूपमा उदय भएको उपन्यासको इतिहास धेरै पुरानो छैन । युरोपेली भूमिमा रमाईला, छोटा किस्साबाट सुरु भएको उपन्यास विधा अठारौँ शताब्दीमा विकास भएको हो । नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमिमा संस्कृतबाट नेपालीमा रूपान्तरण गरिएका छोटोछोटा कथा नै रहेका देखिन्छन् । प्राचीन गद्यका सम्पूर्ण रूपलाई नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमि मान्न नसकिए पनि तत्कालीन समयमा सुरु भएका कथात्मक प्रयासलाई यसको पृष्ठभूमि मान्न सकिन्छ ।

नेपाली उपन्यासको विकास प्रक्रियालाई त्रिकालिक आधारमा विभाजन गरी उल्लेख गर्नु उपयुक्त देखिन्छ ।

### ३.७.२ प्राथमिक काल (वि.सं. १८२७ - १९४५ सम्म)

नेपाली उपन्यासको इतिहास खोज्दै जाँदा शक्तिबल्लभ अर्यालको महाभारत विराटपर्व (१८२७) सम्म पुग्नु पर्ने हुन्छ । वि सं. १८२७ बाट सुरु भएको नेपाली उपन्यासको प्राथमिक काल वीरसिक्का (१९४६) सम्म तन्किएको छ । नेपाल एकीकरण अभियानसँगै विकास भएको नेपाली भाषा र साहित्यको यही अवधिको प्रथम थुङ्गाको रूपमा फक्रने अवसर प्राप्त गरेको छ । यस पछिका दिनहरूमा नेपाली गद्य तथा पद्य दुबै सिर्जना गर्ने क्रम तीव्र रूपमा अगाडि बढ्यो । यस समयावधिमा मौलिक आख्यान सिर्जनाको कमी देखिए तापनि गद्य लेखनमा भने समय सापेक्ष उलेख्य प्रगति भएको देखिन्छ । यस समयमा धार्मिक, मनोरञ्जनात्मक, जासुसी, तिलस्मी, वैदिक, पौराणिक र उपचारसँग सम्बन्धित उपन्यास लेख्ने गरिन्थ्यो । यस समयका प्रमुख कृतिहरूमा शक्तिबल्लभ अर्यालको महाभारत विराटपर्व (१८८७), हास्यकदम्ब (१८५५), भानुदत्तको हितोपदेश मित्रलाभ (१८३३), रामचन्द्र पाध्याको लक्ष्मी-धर्म संवाद (१८५९), लेखक अज्ञात रहेका पिनासको कथा, दशकुमार चरित, मुन्सीका तीन आहान, देवराज शर्माको स्वस्थानी व्रतकथा (१९४२), हरिहर शर्माको भागवत् भक्ति विलासिनी (१९४५) आदि रहेका छन् ।<sup>३५</sup> मूलतः यस्ता कृतिहरू उपन्यास र कथाका बीच भेदमुक्त रहे पनि परवर्ती उपन्यासका लागि भने पृष्ठभूमी वा आधारका रूपमा रहेका देखिन्छन् । यस कालमा प्रकाशित कृतिहरूमा निम्नलिखित प्रवृत्तिहरू रहेका छन् ।

- घटनाको वर्णन भएको आख्यानको प्रारम्भ हुनु,
- प्रायः एउटै ढाँचाको शैली पाइनु,
- संस्कृत तथा केही अन्य भाषाबाट अनूदित आख्यानको मिश्रण देखिनु,
- औपदेशिक चरित्रको खोजी हुनु,
- धर्म र नीतिसम्बन्धी कुराहरूको वर्णन गरिनु,
- सहास, कौतूहल, आश्चर्य तथा प्रेमको स्वच्छन्द रूपको सुरुवात हुनु,
- हास्यव्यङ्ग्यको सुरुवात हुनु,
- कथा र उपन्यासको विभाजनमा अस्पष्टता देखिनु,

<sup>३५</sup> पूर्ववत्, २०५८, पृष्ठ, ७७ ।

- नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक जस्ता शिक्षा तथा मनोरञ्जन दिने उद्देश्य रहनु ।

### ३.७.३ माध्यमिक काल (वि.सं. १९४६-१९९० सम्म)

नेपाली उपन्यास परम्परामा माध्यमिक कालको सुरुवात शिवदत्त शर्माद्वारा लिखित **वीरसिक्का** (१९४६) बाट भएको हो । संस्कृतबाट अनुवाद गरिएको भएर पनि यसमा नेपाली जनजीवनका व्यावहारिक वस्तु समेटिएकाले यसले प्रारम्भकालीन गद्य आख्यान परम्परालाई तोड्दै माध्यमिक कालको सूत्रपात गरेको देखिन्छ । यसले समाजमा नैतिक शिक्षा प्रदान गर्ने कार्य गर्दछ । नेपाली माध्यमिक गद्य आख्यान तीन प्रकारका रचना गरिएका छन् । पहिलो प्रकारका रचनामा धार्मिक र पौराणिक धाराका अनूदित र पुनःसृजित रचनाहरू पर्दछन् । दोस्रो प्रकारका रचनाहरूमा नैतिक र औपदेशिक धाराका अनूदित र पुनःसृजित रचनाहरू पर्दछन् । त्यसैगरी तेस्रो प्रकारका रचनाहरूमा रम्याख्यानका विभिन्न स्रोतबाट पुनःसृजित र मौलिक रचनाहरू रहेका छन् । माध्यमिक कालीन गद्याख्यानलाई देश तथा विदेशमा प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाले महत्वपूर्ण योगदान गरेको देखिन्छ । ती साहित्यिक पत्रिकाहरू **गोरखापत्र** (१९५८), **उपन्यास तरङ्गिणी** (१९५९), **सुन्दरी** (१९६३), **गोर्खाली** (१९७२), **चन्द्र** (१९७४), आदि प्रकाशित भएका छन् । यस समयमा महत्वपूर्ण योगदान दिने प्रमुख कृतिहरूमा गिरीशवल्भ जोशी **वीरचरित्र** (१९६०), सदाशिव शर्मा **महेन्द्रप्रभा**, (१९५९), **प्रेम सागर** आदि रहेका छन् । यस समयलाई चरमोत्कर्षमा पुऱ्याउने काम भने विष्णुचरण श्रेष्ठको **सुमती** (१९९३), उपन्यासले गर्‍यो । नेपाली उपन्यासको माध्यमिक कालको सुरुवात **वीरसिक्काले** गरेपछि **सुमती** उपन्यासले यस कालको अन्त्यद्वारा ढक्काउने काम गरेको छ भने रुद्रराज पाण्डेको **रूपमती** उपन्यासले आधुनिक कालको आमन्त्रण गरेको देखिन्छ ।<sup>३६</sup>

माध्यमिक कालीन उपन्यासको समष्टिगत प्रवृत्तिलाई बुँदागत रूपमा निम्नानुसार प्रस्तुत गर्न सकिन्छ ।

- अनुवादको प्रधानता कायम हुनु,
- सचेत उपन्यास लेखनको अभाव र अनुकरणको अधिकतम प्रयोग पाइनु,
- काल्पनिक, असम्भव, अलौकिक र अतिमानवीय प्रस्तुतीकरण गर्नु,

<sup>३६</sup> पूर्ववत्, २०५८, पृष्ठ, ७८ ।

- युगचेतनाको न्यूनता भल्किनु,
- नीतिवादी र सुधारवादी स्वर स्पष्ट देखिनु,
- नारीलाई भोगविलास र मनोरञ्जनको साधन बनाउने प्रवृत्ति देखिनु,
- धार्मिक-पौराणिक, नैतिक-औपदेशिक, मनोरञ्जनात्मक र सामाजिक सुधारको मूल स्वर देखिनु,
- स्थानीय परिवेशको चित्रणमा केही प्रयास हुनु,
- पात्रहरूको स्वतन्त्र व्यक्तित्व निर्माणमा आंशिक प्रयास हुनु,
- यान्त्रिक प्रस्तुतीले गर्दा घटनाको विन्यासमा शिथिलता आउनु,
- नाटकीय पद्धतिको प्रयोगमा रूची राखिनु,
- लेखकीय भूमिका प्रबल भएका आख्यानको रचना हुनु,
- अलङ्कृत एवं साहित्यिक भाषाको खोजिमा सचेतता अपनाउनु,
- उपन्यासको मौलिक शिल्पमा अस्पष्टता रहनु ।

### ३.७.४ आधुनिक काल (वि.सं. १९९१ देखि हालसम्म)

आधुनिक भनेको नौलोपन हो । अहिलेको, हालसालको वा वर्तमानको समयलाई पनि आधुनिक काल भनिन्छ । उपन्यास आधुनिक कालको नविनतम् विधा हो । नेपाली उपन्यासको इतिहासमा वि.सं. १९९१ मा प्रकाशित रुद्रराज पाण्डेको **रूपमती** उपन्यासले उपन्यास विधालाई आधुनिकतामा प्रवेश गरायो । यसभन्दा अघिका आख्यानहरू पूर्णतः उपन्यास बन्न सकेनन् । यिनीहरूले आधुनिक नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमीको मात्र काम गरेको देखिन्छ । **रूपमती** उपन्यास (१९९१) ले माध्यमिककालीन जासुसी, तिलस्मी जस्ता प्रवृत्तिको अन्त्य गरी आधुनिक कालको आमन्त्रण गरेको हो । उपन्यासको विकासक्रममा विभिन्न धारा, उपधारा, मोड तथा प्रवृत्तिहरू रहेका छन् । तिनीहरूलाई निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ ।<sup>३७</sup>

#### ३.७.४.१ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा

आधुनिक नेपाली उपन्यासको पहिलो धाराको रूपमा आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा देखा पर्दछ । यस धाराको सुरुवात रुद्रराज पाण्डेको **रूपमती** (१९९१), उपन्यासबाट भएको हो

<sup>३७</sup> पूर्ववत् २०५८, पृष्ठ, ८६ ।

। यस धारामा यथार्थ र आदर्शवादको मिश्रण पाइन्छ । जीवन जस्तो छ त्यसको चित्रण यथार्थ हो भने जीवन जस्तो हुनुपर्छ त्यसको चित्रण आदर्श हो । समाजको यथार्थ जीवनको चित्रण गर्दै समाज सुधारको आदर्शवादी चाहना राख्नु यस धाराको प्रमुख विशेषता हो । समाजलाई दैवी नियतमा राख्नु, सत् पात्रको विजय र असत् पात्रको पराजय देखाउनु, अनुकरणीय तथा अनुपम पात्रको सिर्जना गरी पथभ्रष्ट पात्रको पतन देखाउनु यस धाराका मूल प्रवृत्ति हुन । यस धारामा देखिएका प्रमुख उपन्यासकार र उपन्यासहरूमा रूद्रराज पाण्डेको **रूपमती** (१९९१), विष्णुचरण श्रेष्ठको **सुमती** (१९९३), काशीबहादुर श्रेष्ठको **उषा** र **वचन** आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.२ स्वच्छन्दतावादी धारा

स्वच्छन्दतावादी धारा आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्पराको दोस्रो उपलब्धि हो । कोरा नीति नियम र आदर्शका पर्खालहरू ढाल्दै फान्स र बेलायतमा उन्नाइसौं शताब्दिमा चलेको आन्दोलनको नाम स्वच्छन्दतावाद हो । आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा रूपनारायण सिंहको **भ्रमर** (१९९३), उपन्यासको प्रकाशन भएपछि यस धाराले प्रवेश पाएको हो । भाव पक्षलाई जोड दिनु, वैयक्तिक अनुभवलाई जोड दिँदै कल्पनामा रमाउनु, परिवर्तन र क्रान्तिमा जोड दिनु, प्रकृतिको चित्रण गर्नु, स्वतःस्फूर्त लेखन, मानवतावाद, शास्त्रीय मान्यताको विरोध, भाषामा सहज आलङ्कारिता जस्ता प्रवृत्तिहरू यस धारामा पाइन्छन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा रूपनारायण सिंह **भ्रमर** (१९९३), मोहनबहादुर मल्ल **उजेली छाँया** (२००८), अच्छा राई 'रसिक' **लगन** (२०११), शिवकुमार राई **डाकबड्गला** (२०१३), होमराज आचार्य **निर्दोष कैदी** (२०५४) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.३ सामाजिक यथार्थवादी धारा

नेपाली उपन्यास परम्परामा सामाजिक यथार्थवादी धाराको सुरुवात लैनसिंह बाड्देलको **मुलुकबाहिर** (२००४) उपन्यासबाट भएको हो । समाजमा घटेका र घट्न सक्ने यथार्थ घटना र परिस्थितिको उद्घाटन गर्नु समकालीन स्थानीय परिवेशको संयोजन गर्नु, कथ्य भाषाको प्रयोग गर्नु, ऐनाका रूपमा समाजलाई प्रस्तुत गर्नु, औद्योगिक र वैज्ञानिक क्षेत्रका प्राविधिक शब्दावलीको प्रयोग गर्नु, प्रतीकात्मक आलङ्कारिक र विशिष्ट भाषालाई कम महत्व दिनु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्ति रहेका छन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा

लैनसिंह बाड्देलको मुलुकबाहिर (२००४), माइतघर (२००५), लिलबहादुर क्षेत्रीको बसाइँ (२०१४) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.४ ऐतिहासिक यथार्थवादी धारा

लेखकको जन्मभन्दा अगाडीको समयावधिका घटना र ऐतिहासिक चरित्रलाई लिएर लेखिएको उपन्यास ऐतिहासिक हुन्छ । यसले ऐतिहासिक घटना, व्यक्ति वा परिवेशलाई यथार्थवादी ढङ्गले प्रस्तुत गर्दछ । नेपाली उपन्यास परम्परामा यस धाराको सुरुवात डायमन शमशेर राणाको वसन्ती (२००६) उपन्यासबाट भएको हो । विश्वसनीय ढाँचामा यथार्थको भ्रम सृजना गर्नु, उपन्यासकारले तटस्थ द्रष्टाको भूमिका खेल्नु, इतिहासको देशकालको उचित संयोजन र निर्वाह हुनु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू हुन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा डायमन शमशेर राणाको वसन्ती (२००६), सेतो बाघ (२०३०), केशवराज पिँडालीको एकादेशकी महारानी (२०२६), दौलतविक्रम विष्टको फाँसीको फन्दामा (२०५३) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.५ अतियथार्थवादी धारा

आधुनिक उपन्यास परम्परामा लैनसिंह बाड्देलको लङ्गाडाको साथी (२००८) उपन्यासबाट अतियथार्थवादी धाराको सुरुवात भएको मानिन्छ । मानवीय जीवनका यथार्थ पक्षलाई अतियथार्थवादी शैलीमा प्रस्तुत गर्नु यस धाराका उपन्यासमा आएको विशेषता हो । मार्क्सको भौतिकवाद र फ्रायडको मनोविज्ञानको संयोजनबाट यस धाराको विकास भएको हो । साहित्यको सम्बन्ध सपना वा अर्धचेतनासँग हुन्छ भन्ने कुरामा प्रतिबद्ध रहनु, ईश्वरको अस्तित्व छैन भन्ने कुरामा विश्वास गर्नु, परिवर्तन नै लेखकको मूल लक्ष्य हो भन्ने दृष्टिकोणले लेख्नु, यस उपन्यासका मुख्य प्रवृत्तिहरू हुन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा लैनसिंह बाड्देलको लङ्गाडाको साथी (२००८), गोविन्दबहादुर मल्ल 'गोठाले'को पल्लो घरको भ्याल अर्जुन निरौलाको घाम डुबेपछि (२०३३), हिरण्य भोजपुरेको गोरी (२०५४) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.६ आलोचनात्मक यथार्थवादी धारा

समाजमा देखिएका कुरीति, शोषण र अन्य विसङ्गत तत्वहरूलाई औल्याएर तिनको विरोध गर्ने तथा तिनलाई सुधार्नुपर्ने आकाङ्क्षा राख्ने लेखनपद्धतिलाई आलोचनात्मक यथार्थवाद भनिन्छ । यस धारालाई प्रगतिवादी वा समाजवादी यथार्थवादी धाराको पृष्ठभूमिको रूपमा समेत लिन सकिन्छ । सामाजिक विकृति र विसङ्गतिको चित्रण गर्दै त्यसप्रति आलोचना गर्नु, जातीय, आर्थिक, सामाजिक, भेदभावको चित्रण गर्दै समाज सुधारको सन्देश दिनु, सामाजिक हितका पक्षमा खुलेर समर्थन गर्नु यस धाराका मुख्य प्रवृत्ति हुन् । नेपाली उपन्यास परम्परामा हृदयचन्द्रसिंह प्रधानको **स्वास्नी मान्छे** (२०११) उपन्यासबाट यस धाराको सुरुवात भएको हो । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा दौलतविक्रम विष्टका **मञ्जरी** (२०१६), **एक पालुवा अनेकौँ याम** (२०२६), **भोक र भित्ताहरु** (२०३८), तारानाथ शर्माका **भ्रमल्लको** (२०४५), **नेपालदेखि अमेरिकामम्म** (२०४९), खगेन्द्र सङ्ग्रौलाको **जूनकिरीको संगीत** (२०५६) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.७ नारीवादी धारा

नारीवाद राजनीतिक समतामूलक विचार बोकेको पुरुषप्रधान समाजविरुद्धको लेखनपद्धति हो । पुरुषप्रधान समाजका नारीले भोग्नुपर्ने पीडाको अभिव्यक्ति नारीवादी लेखनमा हुने गर्छ भने यस्तो भेदभावबाट पूर्णतः मुक्तिको आग्रह पनि रहेको हुन्छ । नेपाली उपन्यासको परम्परामा हृदयचन्द्रसिंह प्रधानको **स्वास्नीमान्छे** (२०११) उपन्यासबाट सुरुवात भएको हो । नारीका पक्षमा दृष्टिकोण बनाई त्यसको सफल प्रस्तुति दिनु, पितृसत्तात्मक मानसिकताका विरुद्ध विद्रोहको आक्रोश निकाल्नु, नारी आत्मसम्मानको वृद्धि गर्न लेखनलाई मोड्नु, समानताबोधक भाषामा जोड दिनु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू हुन् । यस धारामा देखिएका प्रमुख उपन्यासकार र उपन्यासहरूमा हृदयचन्द्रसिंह प्रधानको **स्वास्नीमान्छे** (२०११), **एक चिहान** (२०१७), विजय मल्लको **अनुराधा** (२०१८), मदनमणि दीक्षितको **माधवी** (२०३९), शवनम श्रेष्ठको **मनिषा** (२०५०) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.८ प्रकृतवादी धारा

प्रकृतिलाई नै परम् सत्य र पूर्ण ठानेर बाह्य हस्तक्षेपका विरुद्ध विद्रोह गर्ने धारा नै प्रकृतवादी धारा हो । प्रकृति स्वनिर्भर र स्पष्ट भएको हुँदा यसभन्दा पर कुनै वास्तविकता छैन भन्ने मान्यता राख्नु, व्यक्ति आफ्नै परिवेशको निर्माण हो, भन्ने स्विकार्नु, वासना, इच्छा र मनको नग्नचित्रणमा जोड दिनु, शैलीको वैयक्तिक स्वरूपको अन्वेषण गर्नु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू रहेका छन् । यस धारामा देखिएका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा शङ्कर कोइरालाको **खैरिनीघाट** (२०१८), भवानी भिक्षुको **पाइप नं.२** (२०३४), पारिजातको **अन्तर्मुखी** (२०३५) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.९ मनोविश्लेषणवादी धारा

नेपाली उपन्यासका क्षेत्रमा मनोविश्लेषणवादी धाराको सुरुवात गोविन्द गोठालेको **पल्लो घरको भ्याल** (२०१६), उपन्यास प्रकाशन भएपछि हुन्छ । यो सिद्धान्त सिगमण्ड फ्रायडको मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तमा आधारित छ । सामाजिक वस्तुजगतलाई अस्विकार गरी मनोजगतको चित्रण गर्नु, चेतन र अचेतनबीचको द्वन्द्व प्रस्तुत गर्नु, मानवीय मनोदशाका विविध रूपहरू खास गरी यौनजन्य असामान्यता र मनका कुण्ठा, अतृप्ति तथा विक्षिप्ति एवं दमित स्थितिको विश्लेषण गर्नु, मानिसका अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी प्रवृत्तिहरूको उद्घाटन गर्नु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू रहेका छन् । यस धारामा देखिएका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा विजय मल्लको **अनुराधा** (२०१८), **कुमारी शोभा** (२०३८), विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको **तीन घुम्ती** (२०२५), **नरेन्द्र दाइ** (२०२७), पारिजातको **वैशको मान्छे** (२०२९) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.१० विसङ्गतिवादी धारा

नेपाली उपन्यासका क्षेत्रमा विसङ्गतिवादी धाराको सुरुवात इन्द्रबहादुर राईको **आज रमिता छ** (२०२१) बाट भएको मानिन्छ । जीवनको निस्सारता र शून्यताको अभिव्यक्ति दिनु, संस्कार, नैतिक मूल्य, अस्तित्वरक्षा आदिका व्यर्थताको प्रकटीकरण गरिनु, समाजका क्रियाकलाप, सम्बन्ध, व्यवस्था, धर्म आदिप्रति व्यङ्ग्य गर्नु, स्रष्टा र सृजना नै अनावश्यक हुने हुँदा पाठकको बुझाइको कुनै अर्थ छैन भन्ने ठानिनु, भाषाको विसङ्गत प्रयोगमा रूची राख्नु

आदि यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू हुन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा पारिजातको शिरीषको फूल (२०२२), महत्ताहीन (२०२५), ध्रुवचन्द्र गौतम अन्तयपछि (२०२४), बालुवामाथि (२०२८), डापी (२०३३), दौलतविक्रम विष्टको चपाइएका अनुहार (२०३०) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.११ अस्तित्ववादी धारा

अस्तित्ववाद विसङ्गतवादको पृष्ठभूमिमा आएको एउटा दार्शनिक चिन्तन हो । नेपाली उपन्यासका क्षेत्रमा पारिजातको शिरीषको फूल (२०२२) अस्तित्ववादी परम्परा आरम्भ गर्ने उपन्यास हो । मान्छेको मापदण्ड नै मान्छे हो र मान्छे हुनाको अर्थ ऊ अपूर्व, अद्वितीय र अस्तित्वको प्रमुख छ भन्ने कुरामा विश्वास हुनु, मान्छेसँग परम्परागत मूल्य वा नैतिकता केही छैन भन्ने मान्यता राख्नु, मान्छे बाँच्नु र स्वतन्त्र हुनु, उसको सबैभन्दा ठूलो अभिशाप हो भन्ने अभिव्यक्ति दिनु, पात्रको जीवनका जिजीविषा, उत्साह, र क्रियाशीलतामा कमी देखिनु, मान्छेले एकलै उन्नति गर्छ, आफ्नो मूल्य स्थापित गर्छ तर कोही पनि उसका सहायक छैनन् भन्ने अभिप्राय व्यक्त गर्नु यसका प्रमुख प्रवृत्तिहरू हुन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा पारिजातका महत्ताहीन (२०२५), अन्तर्मुखी (२०३५), विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाका तीन घुम्ती (२०२५), नरेन्द्र दाइ (२०२७), हिटलर र यहुदी (२०४०), बाबु, आमा र छोरा (२०४५) सरुभक्तको पागल वस्ती (२०४८) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.१२ प्रयोगवादी धारा

यस धाराको सुरुवात ध्रुवचन्द्र गौतमको अन्तयपछि (२०२४) उपन्यासबाट भएको हो । परम्पराभन्दा भिन्न शैली नवीन कथ्य संरचना आदिको प्रयोग गर्ने परम्परा नै प्रयोगवाद हो । नयाँ कथ्य, नयाँ पद्धति र नयाँ सम्भावनाहरूको खोजी गर्नु, अनुकरणको पद्धतिलाई अस्वीकार गरी अरुलाई पनि अन्वेषणमा प्रेरित गर्नु, नवीनताप्रति आस्थावान रही यस्तै प्रवृत्तिको विकासमा योगदान गर्नु, कथानक, चरित्र र पर्यावरण जस्ता उपन्यासका तत्वलाई एकातिर पन्छ्याएर अमूर्त शैली अवलम्बन गर्नु नै यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू रहेका छन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा मञ्जुलको छेकुडोल्मा (२०२६), जगदीश घिमिरेको सावित्री (२०३१) ध्रुवचन्द्र गौतमको उपसंहार तथा चौथो अन्त्य (२०४८) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.१३ प्रगतिवादी धारा

प्रगतिवादी धारालाई समाजवादी यथार्थवादी धाराका रूपमा पनि चिनिन्छ । नेपाली उपन्यासका क्षेत्रमा यस धाराको सुरुवात मुक्तिनाथ तिमल्सिनाको को अछुत ? (२०११) उपन्यास प्रकाशन भएपछि हुन्छ । मार्क्सवादको आधारभूत सिद्धान्त द्वन्द्वात्मक भौतिकवादलाई मुख्य आधार मान्नु, साम्यतामूलक समाजको स्थापनामा जोड दिनु, परम्परागत रूढी, कुरीति, कुसंस्कारको विरोध गरी यिनलाई निर्मूल पार्ने प्रयास गर्नु, भविष्यप्रति आशावादी हुनु, क्रान्तिकारी, विद्रोही तथा परिवर्तनाकाङ्क्षी चरित्रको प्रयोग गर्नु, स्थानीय भाषिका, सरल भाषाको प्रयोग गर्नु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू रहेका छन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा हृदयचन्द्रसिंह प्रधानको एक चिहान (२०१७), डी.पी. अधिकारीका आशमाया (२०२५), धरती अभै बल्दैछ (२०२७), खगेन्द्र सङ्गौलाका चेतनाको पहिलो डाक (२०२७), आमाको छटपटी (२०३४) पारिजातको अनिदो पहाडसँगै (२०३९) आदि रहेका छन् ।

### ३.७.४.१४ मिथकीय धारा

परापूर्वकालका मानवीय स्वभाव तथा कार्यहरूको वर्णन गरिएर लेखिएका उपन्यासहरू यस धाराभित्र पर्दछन् । नेपालीमा पहिलो पटक मिथकीय धारातलमा उभिएर रचना भएको उपन्यास विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको सुम्निमा (२०२७) हो । पुरानै कथामा नयाँ अर्थको अन्वेषण गर्नु, पुराण तथा प्राचीन परम्पराबाट घटना लिएर वर्तमानको उद्घाटन गर्नु, जटिल यथार्थ र त्यसका सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्यलाई आदिमतासँग जोडेर सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान गर्नु यस धाराका प्रमुख प्रवृत्तिहरू रहेका छन् । यस धाराका प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरूमा विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाका मोदिआइन (२०३६), हिटलर र यहूदी (२०४०), मदनमणी दीक्षितका माधवी (२०३९), त्रिदेवी (२०५१), दौलतविक्रम विष्टको ज्योति ज्योति महाज्योति (२०४५) आदि रहेका छन् ।

### ३.८ निष्कर्ष

उपन्यास शब्द संस्कृतको 'तत्सम' शब्द भए पनि यो विधा पाश्चात्य साहित्यको देन हो । प्राचीन आख्यान परम्परा यूरोपबाट विकशित भई आधुनिक जापानमा जन्म बेलायतमा हुर्किएर संसारभरी प्रचलित भयो । नेपाली साहित्यमा आधुनिकतातर्फ यसले विदेशी आख्यानको पूरै भर परे पनि आधुनिककालमा आफ्नै मौलिक स्वरूप तथा संरचनाका साथ फुल्ने र फल्ने मौका पायो । वि. सं. १९९१ बाट सुरु भएको नेपाली उपन्यास परम्परा सात दशक पार गर्दै जाँदा विविध प्रवृत्तिका साथ नेपाली साहित्यमा छुट्टै पहिचान राख्न सफल भएको छ ।



## चौथो परिच्छेद

### के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन, प्रवृत्ति, योगदान र उपन्यासकारिता

#### ४.१ आमुख

कुनै पनि सर्जकलाई जीवन्त बनाउने प्रमुख तत्व भनेको उसका सिर्जनाहरू हुन । मानव मनका कुण्ठित भावनालाई साहित्यकारले आफ्ना साहित्यको माध्यमबाट सजिलै उजागर गरिदिन सक्दछन् । समाजमा राम्रा र नराम्रा पक्षको विश्लेषण गर्दै नराम्रा पक्षको पर्दाफास गरी सुधारको बाटो देखाउँदै राम्रा पक्षलाई समाजमा प्रोत्साहन दिने खुबी सर्जकका कलममा निहित हुन्छ । त्यसैले साहित्यकारहरू जीवन जगतको गहिराइमा पुगेर वास्तविकतालाई केलाएर त्यसमा निखार ल्याएर जीवन्त कृति रचना गर्न सक्छन् । त्यसको फलस्वरूप एउटा सानो वाक्यले पाठकको मन जित्न सफल हुन्छ । त्यसका लागि साहित्यकारले साहित्यप्रति मोह राखेर अरूका साहित्यिक कृति अध्ययन गरेर आफु निरन्तर साधनामा तल्लिन हुनु पर्दछ । साहित्यकारले साहित्य रचना गर्नका लागि उसको जीवनमा आएका आरोह अवरोह, सफलता असफलता आदिलाई उसको साहित्यिक यात्रा भनिन्छ ।

#### ४.२ साहित्य लेखनमा प्रेरणा र प्रभाव

मानिस जन्मेर हरेक कुरा सिक्न कसैको प्रेरणा र प्रभावको आवश्यकता पर्दछ । सकारात्मक प्रेरणा र प्रभावले व्यक्तिको जीवन साकार हुन्छ भने नकारात्मक प्रेरणा र प्रभावले जीवन वर्वाद पनि हुन सक्छ । साहित्य क्षेत्रमा प्रवेश गर्नका लागि यसप्रति मनोकाङ्क्षा जागनुपर्दछ । साहित्य क्षेत्रमा प्रवेश गर्नका लागि लोक साहित्यले प्रमुख भूमिका खेलेको हुन्छ । घर समाजमा अधिल्लो पुस्ताबाट पछिल्लो पुस्तालाई भन्ने र सुन्ने परम्पराबाट लोक साहित्य बाँचेको हुन्छ । यही लोकसाहित्यको बचाइबाट नै व्यक्तिमा साहित्यप्रति अनुराग बढ्छ । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' पनि यही लोकसाहित्यको जगमा आधुनिक नेपाली साहित्यको जग निर्माण गर्न सफल भएका छन् । फाट्टफुट्ट कविता, गीत, गजल, मुक्तक चुटुकिला, लघुकथा आदि लेखेर हवाइ पत्रिका र भित्ते पत्रिकामा छपाउने गर्दागर्दै उनले उपन्यास लेख्न पूगे । १० वर्षे

जनयुद्धको द्वन्द्वले पारेको प्रभाव र शोषण सामन्तबाट निमुखा जनतामा थोपरिएको गरिबीको पर्दाफास गर्न अन्य विधाभन्दा उपन्यास नै प्रभावकारी ठानी पूर्वज उपन्यासकारका औपन्यासिक कृति अध्ययन विश्लेषण गरी आफु पनि त्यसैका लाइनमा उभिन पुगेको पाइन्छ । यसमा उनले सर्वप्रथम बाबु आमाबाट प्रेरणा प्राप्त गरेका छन् । त्यसैगरी रूपनारायण सिंहको भ्रमर, रुद्रराज पाण्डेको रूपमती लिलाबहादुर क्षेत्रीको बसाइँ, गोविन्द गोठालेको पल्लो घरको भ्याल, विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको तीनघुम्ती, विजय मल्लको अनुराधा, प्रदीप नेपालको देउमाइको किनार, खगेन्द्र संग्रौलाको आमाको छटपटी आदिबाट विशेष प्रभावित भएका छन् । यिनीहरूका अतिरिक्त पारिजात, इन्द्रबहादुर राई, लैनसिंह बाड्देल, कृष्ण धारावासी आदिबाट समेत प्रभावित देखिन्छन् । स्थानीय स्तरबाट प्र.अ. ज्ञानबहादुर राई, शिक्षक डि.वी. श्रेष्ठ, समाजसेवी चहकमान खालिङ, साथी विनोद 'विनय' भण्डारी, दाइ कमल राई, प्रदीप राई आदि जस्ता व्यक्तिबाट उनलाई उपन्यास लेखनमा प्रेरणा मिलेको देखिन्छ । उनीहरूको प्रेरणा र प्रभाव पाएर मन मस्तिष्कदेखि नै अब म पनि केही लेख्न सक्छु भन्ने हिम्मतका साथ उपन्यास लेख्न थालेको पाइन्छ । आफ्नो नजिकको साथीको जीवनमा घटेको घटनाले उनको मनमा ठाउँ जमाउन थालेपछि २०५८ सालदेखि आवेग उपन्यास लेख्न पुगेका देखिन्छन् । उनी सामन्ती सत्ताले खनेको धनी र गरीबबीचको खाडलबाट अत्यन्त प्रभावित बनेका छन् ।

### ४.३ साहित्य लेखनको थालनी

कुनै पनि कार्य सम्पन्न गर्न थालनी महत्वपूर्ण हुन्छ । थालनी नगरी कुनै पनि कार्य सम्पन्न गर्न सकिदैन । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' सानै उमेरदेखि साहित्य भन्नेपछि हुरुक्कै हुन्थे । उनी नेपाली साहित्यका पछिल्लो चरणका साहित्यकार हुन । साहित्यको चर्चा जताततै हुन थालेको भए तापनि उनको छरछिमेकमा साहित्य खासै फस्टाएको थिएन । प्रकृति, आमाबुबा, साथीभाइ, इष्टमित्र सबैको सद्भाव पाएर आफ्नो लेखन कलाको थालनी गरेको पाइन्छ । कविता, गजल, मुक्तक, कथा आदिमा आफ्ना भावना नअटाएपछि उनले उपन्यास विधाको शरण लिन पुगेको देखिन्छ । यसै क्रममा २०५९ सालमा पहिलो उपन्यास आवेग प्रकाशन गर्न सफल भएका छन् । उनको पहिलो प्रयास नै सफल भएपछि उनको कलम अर्को कृति प्रकाशनतर्फ हतारिएर अगाडी बढेको पाइन्छ । फलस्वरूप वि.सं. २०६१ सालमा निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यास देखा पर्दछ । यो कृति गुणात्मक र परिमाणात्मक रूपमा सबल

भएकाले अझ उत्कृष्ट कृति रचनार्थ उनी अघि बढेका देखिन्छन् । यसैको फलस्वरूप २०६४ सालमा युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यास प्रकाशित गरेका छन् । यो कृति अन्य दुई कृतिभन्दा उत्कृष्ट रहेको देखिन्छ । यसरी के.पि. राईले नेपाली साहित्यका अन्य विधाबाट लेखन प्रारम्भ गरे पनि विकसित र उत्कृष्ट विधाका रूपमा उपन्यासलाई छानेका छन् ।

#### ४.४ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को साहित्य यात्राको चरण विभाजन

मानव जीवन सधैंभरि एकै किसिमको गतिमा चलन सक्दैन । मानव जीवनमा अनेक मोड पार गर्नुपर्ने हुन्छ । जीवनका यी मोडहरू कार्यशैली, विचारशैली आदिका आधारमा फरक हुन्छन् । हालसम्म के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को साहित्य यात्रालाई दुई चरणमा विभाजन गरी अध्ययन एवं विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

(१) पूर्वार्द्ध चरण (प्रारम्भदेखि २०५८ सम्म)

(२) उत्तरार्द्ध चरण (वि.सं. २०५९ देखि हालसम्म)

यसरी यी चरण विभाजनको आधार देहायबमोजिम विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

##### ४.४.१ पूर्वार्द्ध चरण (प्रारम्भदेखि २०५८ सम्म)

यस चरणमा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' लोक साहित्यबाट प्रभावित बनेर साहित्य लेखनतर्फ अग्रसर भएको देखिन्छ । यो चरणलाई उनको लेखनको अभ्यास कालीन चरणका रूपमा लिन सकिन्छ । उनले यस चरणमा लोककथा, लोकगीत गाउने र भन्ने कार्यबाट साहित्यिक यात्रा सुरु गरेको देखिन्छ । उनले बाल्यकालदेखि नै कविता, गीत, गजल, मुक्तक, चुटुकला वाचन गर्ने र कथा भन्ने जस्ता कार्य सुरु गरेको देखिन्छ । स्कूले जीवन ज्यादै रमाइलोसँग बिताएका राई स्कूल छोडेपछि व्यापार व्यावसाय सञ्चालन गर्ने मनसायले केही समय भापा तथा काठमाण्डौंसम्म रहन पुगे । उनले यस समयमा नेपाली साहित्यबाट प्रभावित बनी विभिन्न विधामा कलम चलाउने क्रममा गीत, कविता, मुक्तक, चुटुकला, लघुकथा, आदि लेखन अभ्यास गरेको देखिन्छ । यी रचनाहरू मध्ये केही रचनाहरूको प्रकाशन 'शान्तिलाई चिठी' भन्ने शीर्षकमा भएको पाइन्छ ।

यसरी यस चरणमा विभिन्न विधामा कलम चलाएर उनको मुख्य साहित्यिक विधा उपन्यास लेखनको आधारभूमि तयार गरेका छन् । यस चरणका कृतिहरू पुस्तकाकार रूपमा नआए पनि विभिन्न भित्ते पत्रिका, हवाइ पत्रिका, आदिमा समेटिएका छन् । यस समयमा उनले सामाजिक विषयवस्तुलाई यौन मनोविज्ञानमा आधारित भएर लेख रचना लेख्न थालेको पाइन्छ । त्यसैले यो चरण उनको सामाजिक मनोविज्ञानको चरण हो ।

#### ४.४.२ उत्तरार्द्ध चरण (वि.सं.२०५९ देखि हालसम्म)

यो चरण उनको उपन्यास लेखनको महत्वपूर्ण एवं मुख्य चरण हो । वि.सं. २०५९ सालमा पहिलो उपन्यास **आवेग** प्रकाशन गरेर पहिलो आफ्नो पुस्तकाकार कृति लोकार्पण गर्न सफल भएका छन् । यस चरणमा उनी उपन्यास विधातिर मात्र लागेको पाइन्छ । उनले अन्य धेरै उपन्यास लेख्न थाले पनि पूरा गरेका छैनन् । हालसम्म पूरा गरेका तीन कृतिहरू **आवेग** (२०५९), **निर्दोष कैदीको रहस्य** (२०६१), **युद्धले खोसेको प्रेम** (२०६४) को प्रथम संस्करण मात्र प्रकाशित गरेका छन् । उनले यस चरणमा विशेष गरी सामाजिक विषयवस्तुलाई अँगालेको देखिन्छ । उनको यो चरण सामाजिक समस्यामूलक र यथार्थवादी चरणका रूपमा विकशित भएको पाइन्छ । यस चरणमा समाजमा घटेका र घट्न सक्ने घटनालाई मुख्य विषयवस्तु बनाएर उपन्यास लेखेका छन् । उनको यो चरणलाई उपन्यास लेखनको चरणको रूपमा लिन सकिन्छ ।

राईको साहित्य यात्रा दुई चरणमा विभाजन गरेर हेर्दा पूर्वार्द्ध चरणभन्दा उत्तरार्द्ध चरण कृति प्रकाशनका दृष्टिले महत्वपूर्ण चरण मान्न सकिन्छ । यो चरण लेखन कार्यमा सक्रियता र खारिएको अनुभवले पूर्ण चरण रहन सफल भएको छ । सामाजिक विषयवस्तु, विकृति, शोषण, दमन, द्वन्द्वको प्रभाव र शान्तिको कामना आदि पक्ष समेटेर कृति रचना गर्नु यस चरणका विशेषता हुन् ।

#### ४.५ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू

उपन्यासकार के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासहरू अध्ययन गरेर हेर्दा उनका उपन्यासहरू मूलतः सामाजिक यथार्थवादी प्रवृत्तिमा आधारित छन् । उनका उपन्यासहरू नेपाली उपन्यास परम्पराका थप महत्वपूर्ण कृतिहरू मान्न सकिन्छ । उनका प्रकाशित

उपन्यासहरू आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१), युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) का आधारमा औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू निम्नअनुसार उल्लेख गर्न सकिन्छ ।

#### ४.५.१ सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार

उपन्यासकार राई मूलतः सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकारका रूपमा देखा परेका छन् । उनका उपन्यासमा नेपाली समाजको यथार्थ चित्र उतारिएको पाइन्छ । उनका उपन्यासमा नेपाली समाजको जीवन र जगतप्रतिको दृष्टिकोण यथार्थ रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । उनका कृतिमा पात्रको जीवनको सर्वपक्षीय चित्रण गरिएको हुन्छ । पात्रको जीवन अन्तर्मुखी र बहिर्मुखी दुबै किसिमले केलाउन सिपालु राईले पात्रको मनोभावना र त्यसको संभावनालाई सबल रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । व्यक्तिको जीवन र समाजमा देखेका, सुनेका, भोगेका कुराहरूलाई आधार बनाई उपन्यासको कथानक तयार गर्ने गर्दछन् । उनका कृतिमा समाजमा विद्यमान विकृति, विसङ्गति, शोषक र शाषित वर्गको अन्तर, पात्रले भोगेको सुख, दुःख, आरोह, अवरोह आदिको यथार्थ प्रस्तुति पाइन्छ । व्यक्ति जीवनको चित्रणबाट सामाजिक जीवनको चित्रण गरिका उनका उपन्यासहरू वास्तवमा नै सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास हुन् । त्यसैले उनी सामाजिक यथार्थवादी धाराका उपन्यासकार हुन् ।

#### ४.५.२ सामाजिक विकृति र असमानताको विरोध

नेपाली समाजमा जरा गाडेर बसेको सामन्ती व्यवस्थाले आमूल राजनीतिक परिवर्तनपछि पनि परिवर्तन हुन सकेको देखिँदैन । कानूनमा व्यवस्था भएका कुरा व्यवहारमा लागू हुन सकिरहेको छैन । त्यसैले समाजमा सामन्ती संस्कारको जरा कायमै रहेको देखिन्छ । जसबाट सर्वसाधारण, गरीब, दुःखी, असाहय र पीडित व्यक्ति मर्कामा परेको देखिन्छ । समाजमा नोकरशाही, दलाल, पूँजिपतिहरूले तल्लो वर्गका श्रमीक सर्वसाधारणलाई नियन्त्रणमा लिई जीवन वर्वाद पारेको प्रति उपन्यासकार विरोध प्रकट गर्छन् । उनले आफ्ना हरेक कृतिमा सामाजिक विकृति, विसङ्गति र असमानताप्रति रोष प्रकट गरेका छन् । उनी समाजमा रहेका अन्धविश्वासी परम्पराको विरोध गर्दै समाजमा विद्यमान विकृति र विसङ्गतिको विरोध गर्ने उपन्यासकार हुन् ।

### ४.५.३ पात्रको विद्रोहीपन

मानिस विकासका लागि परिवर्तन चाहने चेतनशील प्राणी हो । राईका उपन्यासमा समाजिक न्याय र समानताका लागि पात्रहरूले विद्रोहको बाटो अँगालेका छन् । उनका उपन्यासमा धनी वर्गका पात्रले गरीब वर्गका पात्रलाई गरेको दमन, शोषण तथा उत्पीडनका कारण गरीबीको मार खप्न विवश पात्र विद्रोहका लागि उत्रिएका छन् । समाजमा ठूलाठालू मानिसले मनपरी गरेर निम्न वर्गका पात्रलाई मुठीमा लिएर आफ्नो स्वार्थ पूरा गरेका छन् । उपन्यासमा प्रयोग भएको पात्र दिलमानको शोषक, सामन्ती प्रवृत्तिप्रति विरोध गर्दै निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा प्रयोग भएका प्रमुख पात्र सविन र अर्चनाले आफ्नो भेष बदलेर दिलमानको चरित्रको पर्दाफास गरी उसलाई कानुनको नजरमा गिराएका छन् । युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा पात्र सच्चा प्रजातन्त्र प्राप्तीका लागि जनयुद्धको बाटो अँगाल्न बाध्य भएको उल्लेख गर्दै विद्रोहीपनलाई समेटेका छन् । समग्रमा उनी पात्रको विद्रोहीपनको विश्लेषण गर्ने उपन्यासकार हुन् ।

### ४.५.४ तराई, पहाड र भारतीय परिवेशको चित्रण

उपन्यासमा परिवेशको उचित चित्रण आवश्यक हुन्छ । उनले आफ्ना उपन्यासमा आवश्यकता अनुसार विविध परिवेशको चित्रण गरेका छन् । अधिकांश परिवेश उनको आसपास तथा विकट पहाडी परिवेशको चित्रण पाइन्छ । निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा सुगम तराई र भारतीय परिवेशको उचित चित्रण गरिएको छ । दार्जीलिङ, बेङ्गलोर र विदेशी भूमिको नाम उल्लेख गरे पनि मूल रूपमा स्वदेशी परिवेशको चित्रण पाइन्छ । पहाडी गाउँले सामन्त वर्गले एक दिन प्रतिकूल अवस्थाको सामना गर्नु परेको परिवेशको समेत चित्रण गरेका छन् । विशेष गरी उनले पहाडी परिवेशको चित्रणबाट उपन्यासको थालनी गरी बीचमा तराई र भारतीय परिवेशको चर्चा गरे पनि अन्त्यमा फेरि पहाडी परिवेशमा नै उपन्यास समाप्त गर्न सफल भएका छन् ।

### ४.५.५ जनयुद्धको चित्रण र शान्तिको कामना

उनले आफ्ना सबै कृतिमा प्रायः गरेर युद्ध र शान्तिको कामना गरेका छन् । त्यस मध्ये पनि युद्धले खोसेको प्रेम आद्योपान्त जनयुद्धकै सेरोफेरोमा सिर्जना गरिएको छ । एकै परिवारका

कोही जनसेना र कोही शाहीसेना भएर लडिरहेको दुःखत यथार्थ औल्याउँदै यसको दुःखत परिणामप्रति चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । देशमा राजनीतिक तथा सामाजिक क्रान्ति आवश्यक छ । क्रान्तिका लागि हातहतियारको प्रयोग गर्नु हुन्न बौद्धिक क्रान्ति गर्नुपर्छ भन्ने उनको मान्यता रहेको छ । उनले आफ्ना उपन्यासमार्फत जनयुद्धको चित्रण गरेर शान्तिको कामना गरेका छन् । सच्चा प्रजातन्त्र र लोकतन्त्रमा आस्थावान राई आफ्ना कृतिमार्फत जनयुद्धको चित्रण गर्दै देशमा शान्ति फैलियोस् भन्ने कामना व्यक्त गर्दछन् ।

#### ४.५.६ पवित्र प्रेमको उपासना

उनले आफ्नो उपन्यासका प्रमुख पात्रका मध्यमबाट पवित्र प्रेमको सम्बन्ध स्थापना गरेका छन् । आफ्नो प्रेमका लागि जस्तोसुकै मूल्य चुकाउन पनि पात्रहरू पछि पर्दैनन् । आवेग उपन्यासमा नायक र नायिका अपरिपक्व उमेरमै प्रेमको डोरीमा बाँधिन्छन् । अरूको गलत कुराले नायिका आत्महत्या गर्न पुग्छे भने नायक पागल बनेर हिड्छ । निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा नायक नायिकाले पवित्र प्रेमका कारण अन्यायी बाबुको घरमा आगो लगाई पीडीत बालिकाकी आमाको पीडामा साथ दिन पुग्छे । पवित्र प्रेमकै माध्यमबाट नायक नायिकाको मिलन, अत्याचारी बाबुलाई जेल र निर्दोष कैदीलाई छुटकारा दिलाइएको हुन्छ । युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा पनि नायक र नायिकाको पवित्र प्रेमकै कारण एकै ठाउँमा अचानक जनसेना र शाहीसेनाको भिडन्त भई गोली हानाहान हुँदा गोली लागी दुबै जनाको जीवनको समेत दुःखत अन्त्य हुन्छ ।

#### ४.५.७ पात्रको मनोविश्लेषण

राईले आफ्ना कृतिमार्फत मानिसहरूलाई प्रेममय वातावरणमा रमाएर बाँच्ने प्राणीका रूपमा चित्रण गरेका छन् । उनले आफ्ना कृतिमा प्रयोग गरेका पात्रहरूको मनोविश्लेषण गर्ने प्रयत्न गरेका छन् । उनले पात्रको सामाजिक मनोविश्लेषण र यौन मनोविश्लेषण समेत गरेका छन् । अपरिपक्व उमेरमा गरेको प्रेमले मानिसलाई कस्तो परिस्थितिमा पुऱ्याउन सक्छ भन्ने विश्लेषण गरेका छन् । अपरिपक्व अवस्थामा प्रेमको सागरमा डुबुल्की मार्न खोज्दा प्रेमको डुङ्गा पल्टन पनि सक्छ भन्ने कुराप्रति सङ्केत गर्दै परिपक्व भएपछि प्रेमको पथमा हिडे त्यो वास्तविक जीवन बन्ने बताउँछन् । उनले प्रयोग गरेका किशोर अवस्थाका पात्रहरूलाई

परिस्थिति अनुसार गीत गाउने, सङ्गीत मन पराउने, प्रेम प्रणयप्रति आकर्षित हुने, आवेगमा निर्णय गर्ने, चञ्चल व्यक्तिका रूपमा पात्रको मनोविश्लेषण गरेका छन् ।

#### ४.५.८ चरित्र चित्रणमा जोड

परम्परागत वस्तु प्रधान उपन्यासलाई राईका सामाजिक उपन्यासले चुनौती दिएका छन् । आधुनिक उपन्यासमा वस्तु जगत्को स्थान चरित्र चित्रणले लिएको छ । उनका सम्पूर्ण उपन्यास चरित्र चित्रणमा आधारित छन् । उनी वास्तवमा नै चरित्र प्रधान उपन्यासकार हुन् । उनले पात्रको मनोवाद र संवादको प्रयोग गरेर यथार्थ घटनामा आधारित भिनो कथ्यमा उपन्यासको विकास गरेका छन् । उनले उपन्यासमा बौद्धिकता, संवाद, पीडा, कुण्ठा र जीजिविषाको सफल प्रयोग गरेका छन् । उनका उपन्यासहरू घटना तथा कथावस्तुका तुलनामा चरित्र चित्रणमा बढी जोड दिएर लेखिएको पाइन्छ । त्यसैले उनले वस्तु व्याख्याभन्दा चरित्र चित्रणमा बढी जोड दिएको पाइन्छ ।

#### ४.५.९ संयोगान्त तथा वियोगान्त उपन्यास लेख्ने उपन्यासकार

कतिपय स्रष्टा संयोगान्त मन पराउने हुन्छन् र सोही अनुसार साहित्य सृजना गर्छन् भने कतिपय स्रष्टा वियोगान्त मन पराइ सोही अनुसार साहित्य सृजना गर्छन् । राई कम संयोगान्त र बढी वियोगान्त साहित्य सिर्जना गर्न मन पराउँछन् । हालसम्मका उनका प्रकाशित कृतिहरू वियोगान्त नै बढी रहेका छन् । यथार्थवादी साहित्यकार राई मानव समाज पनि संयोगान्तभन्दा वियोगान्त नै बढी भएको स्वीकार्दछन् ।

#### ४.५.१० प्रकृति चित्रण

प्रकृतिप्रेमी स्रष्टा राई प्रकृतिबाटै प्रभाव ग्रहण गरी साहित्य सिर्जना गर्छन् । उनी प्रकृतिप्रति सदा भावुक बन्ने गर्दछन् । उनका कृतिमा विविध ठाउँमा प्रकृतिको चित्रण गरेको पाइन्छ । प्राकृतिक सुन्दरताका पारखी भएकाले कृति सिर्जनामा प्रकृति चित्रणको प्रत्यक्ष प्रभाव परेको देखिन्छ । अश्लीलता मन नपराउने राई आफ्ना कृतिमा प्रमुख पात्रहरू श्लील ढङ्गले प्रकृतिमा मन बहलाएको चित्रण गर्न सफल देखिन्छन् । उनी प्रकृतिका पूजारी भएकाले नै प्रकृतिको चित्रण गर्न पुग्छन् ।

#### ४.५.११ सरल भाषाशैलीको प्रयोग

उपन्यासकार राई सरल भाषाशैलीको प्रयोग गर्ने साहित्यकार हुन् । उनी आफ्ना कृतिमा सर्वसाधारण नेपाली जनताले सहजै पढ्न र बुझ्न सक्ने शैलीको प्रयोग गर्छन् । नेपाली समाजका जनताको बोलीचाली, जीवनशैली जस्ताको तस्तै उतारेर तल्लो स्तरका पाठकलाई प्रेरणा प्रदान गर्दै हौसला बढाएका छन् । कताकता लेखकको भाषिक अपरिपक्वता पो हो कि जस्तो देखिए पनि वास्तवमा त्यो समाजको यथार्थ हो । यसरी सरल शैली प्रयोग गरी सामान्य पाठकको मनमा बसेका राईले भाषाशैलीको प्रयोगमा उचित सफलता हासिल गरेका छन् ।

#### ४.६ नेपाली साहित्यमा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को योगदान

नेपाली साहित्यमा के. पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को महत्वपूर्ण योगदान रहेको छ । उनले कविता, कथा, गजल, मुक्तक, चुटुकला तथा उपन्यास जस्ता विधामा कलम चलाई साहित्यको श्रीवृद्धिमा योगदान पुऱ्याएका छन् । उनको मुख्य साहित्यिक विधा भने उपन्यास रहेको देखिन्छ । सामाजिक यथार्थवादी धारामा आधारित भई चरित्रप्रधान उपन्यास लेख्नु उनको प्रमुख विशेषता हो । भित्ते पत्रिका तथा हवाई पत्रिका सञ्चालन गरी अन्य साहित्यानुरागी व्यक्तिलाई समेत साहित्यप्रेमी बन्न अभिप्रेरणा दिने राईमा एक सफल पत्रकारिताको झलक पनि भेटिन्छ । साहित्य सेवाका लागि पत्रकारितामा पनि देखा परेका राई एक होनाहार युवा साहित्यकार हुन् । उनले नेपाली उपन्यास परम्परामा आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) जस्ता कृति समर्पण गरेका छन् । उनले प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र, सामाजिक न्याय, शान्ति र मित्रताको समेत अपेक्षा राखेका छन् । भविष्यमा पनि यी र यस्तै तथा अभू उत्कृष्ट साहित्य सिर्जना गर्न सक्ने सम्भावनाहरू प्रशस्त भेटिन्छ । उनले विशेष गरी नेपाली साहित्यमा सामाजिक यथार्थवादी धारालाई अतुलनीय योगदान दिएका छन् । यसरी समग्रमा हेर्दा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' नेपाली उपन्यासका क्षेत्रमा सामाजिक यथार्थवादी र मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार भएको कुरा समेत स्पष्ट हुन्छ । त्यसैले उनको योगदान नेपाली साहित्यमा प्रशंसनीय समेत बन्न सफल भएको छ ।

## ४.७ के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासकारिता

पाँचथरको भालुचोकमा वि.सं. २०३८ सालमा जन्मेका के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' एक सफल उपन्यासकार हुन् । उनले एस. एल. सी. सम्मको अध्ययन पूरा गरेका छन् । उनी सानै उमेरदेखि साहित्यप्रति मरिहत्ते गर्दथे । उनी साहित्य सृजनामा प्रवृत्त भएर कथा, कविता, मुक्तक, गजल हुँदै उपन्याससम्मको यात्रालाई सफल बनाउने व्यक्तित्व हुन् । उनका विविध कथा, कविता, मुक्तक र गजल हवाई पत्रिका र भित्ते पत्रिकामा प्रकाशन भएका छन् । उनका आवेग (२०५९) सामाजिक उपन्यास, निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) जस्ता तीन वटा सामाजिक ऐतिहासिक उपन्यास पुस्तकाकार कृतिका रूपमा प्रकाशित भएका छन् ।

ग्रामीण परिवेशको सशक्त प्रयोग भएको आवेग उपन्यासमा राईले सामाजिक विषयवस्तुको चयन गरी यथार्थवादी ढङ्गले प्रस्तुत गर्दै सामाजिक जागरण र प्रगतिशील स्वर सुसेल्ने प्रयासलाई सफल पारेका छन् । सामाजिक आदर्शोन्मुख यथार्थवादको चर्चा भएको निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासले निर्दोष कैदीको रहस्यलाई स्पष्ट पार्न खोजेको छ । त्यसैगरी सामाजिक ऐतिहासिक प्रवृत्तिमा आधारित युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासले १० वर्षे जनयुद्धले शान्तिको नाममा क्रान्ति गरेर देशमा आतङ्क फैलाएर प्रेममय जीवन विताउँदै गरेका व्यक्तिको जीवन तहसनहस भएको देखाइएको छ । राईले आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासमा विषयवस्तुको स्रोतका रूपमा समाजलाई लिएका छन् । हालसम्म प्रकाशित तीन मौलिक उपन्यास आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य र युद्धले खोसेको प्रेमको अध्ययन र विश्लेषणबाट 'सिर्जन शिरीष' को उपन्यासकारिता निम्न बमोजिम रहेको छ ।

### ४.७.१ विषयवस्तुको प्रयोग

विषयवस्तुको प्रयोगका दृष्टिले उनका उपन्यासलाई हेर्दा आवेगमा ग्रामीण परिवेशमा अडिएर नेपालको पूर्वाञ्चलमा पर्ने पाँचथर जिल्लाका गाउँ र त्यसका आसपासका क्षेत्रमा तत्कालीन समयमा गएको पहिरोको कारण बालबालिका टुहुरो बनी आवेगमा आएर प्रेममा फसेको यथार्थ चित्रण गरिएको छ । बाल्यकालमा बाबुआमाको वियोगको सिकार बनेका

पात्रको करूण कहानीमा आधारित यो उपन्यासमा किशोर अवस्थाका केटाकेटीको आवेगको काम गराईबाट उनीहरूको जीवन सफल हुन नसकी पवित्र प्रेमको बाचा बन्धन तोडिएको यथार्थ विषयवस्तु पाइन्छ । यसरी आवेग उपन्यासमा प्रयोग गरिएको विषयवस्तुको अध्ययनबाट 'सिर्जन शिरीष' सामाजिक विषयवस्तुलाई यथार्थ ढङ्गले प्रस्तुत गर्ने सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार हुन भन्ने कुरा स्पष्ट हुन्छ ।

त्यसैगरी राईको दोस्रो उपन्यास निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) मा प्रयोग भएको विषयवस्तु समाजबाटै लिइएको छ । सविनको लाहुरे जीवनदेखि आफ्नो निर्दोष कैदी बाबाको छुटकारा र प्रेमिकासँगको मेलमिलापमा यो उपन्यास संरचित छ । सामाजिक स्रोतबाट विषयवस्तु लिएर उपन्यासकार राईले प्रस्तुत उपन्यासको रचना गरेका छन् ।

'सिर्जन शिरीष' को तेस्रो औपन्यासिक कृति युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) मा प्रयोग गरिएको विषयवस्तु सामाजिक र ऐतिहासिक छ । १० वर्षे जनयुद्धले जनतामा छाएको त्रास, आतङ्क साथै शाही नेपाली सेना र जनसेनाको भिडन्तमा परी जीवन अन्त्य गर्ने जलन र अमिसारिकाको दुःखद मृत्युमा यो उपन्यासको निर्माण भएको छ । युद्ध र अशान्तिले देशमा छाएको त्रासको कारण माओवादी र सरकारबीच भएको द्वन्द्वले युवाहरू विदेशिनु परेको बाध्यता यस उपन्यासको प्रमुख विषयवस्तु बनेको छ ।

यसरी के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'ले रचना गरेका तीन उपन्यासको समग्र विषयवस्तुको अध्ययन गर्दा उनी सामाजिक ऐतिहासिक विषयवस्तुलाई सफलताका साथ प्रयोग गर्ने उपन्यासकारका रूपमा चिनिन्छन् ।

#### ४.७.२ पात्र विधान

पात्र विधानका दृष्टिले 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यास सफल छन् । आवेग उपन्यासमा सामाजिक विषयवस्तुको प्रयोग गरिएको हुनाले यसमा प्रयोग भएका पात्रहरू विषयानुकूल सामाजिक नै छन् । यस क्रममा ग्रामीण परिवेशलाई यथार्थपरक ढङ्गले प्रस्तुत गर्दै निम्न स्तरका पात्रको प्रयोग गरिएको छ । उपन्यासको कथानकलाई अघि बढाउने क्रममा प्रयोग भएका मुख्य पात्र दिनेश र मञ्जु रहेका छन् भने अन्य सहायक पात्रका रूपमा रञ्जन, रञ्जना, बाजेबजू, लीला आदि रहेका छन् । त्यसैगरी कथानकलाई गति प्रदान गर्न ठाउँ-

ठाउँमा प्रसङ्ग अनुसार देखा परेका गौण पात्रको पनि प्रयोग भएको छ । यसरी प्रयोग गरिएका तीनै तहका पात्रहरूको अध्ययनबाट के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'ले आवेग उपन्यासमा प्रयोग गरेका पात्रहरू विषयवस्तु अनुकूल रहेका छन् ।

त्यसैगरी राईको दोस्रो उपन्यास निर्दोष कैदीको रहस्यमा सामाजिक विषयवस्तु नै प्रयोग गरेर रचना गरिएकाले यसमा प्रयुक्त पात्रहरू समाजबाटै लिइएका छन् । प्रमुख पात्र सविन र अर्चनाले कैदी जीवनको मुक्तिका लागि गरेका विविध संघर्षका सन्दर्भमा प्रयोग भएका धेरै पात्रहरू ग्रामीण परिवेशका छन् । त्यसैगरी सहायक पात्रहरूमा नीता, वीरमान, दिलमान, भोटु, सन्देश, अर्चना छन् भने प्रशस्त गौण पात्रहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । यसरी प्रयोग गरिएका तीनै पात्रहरूको अध्ययनबाट राईले प्रयोग गरेका पात्रहरू विषयवस्तु अनुकूल छन् ।

राईको तेस्रो औपन्यासिक कृति युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा प्रयोग गरिएका पात्रहरू विषयवस्तु अनुकूल यथार्थ छन् । यस क्रममा ऐतिहासिक परिवेशलाई यथार्थपरक ढङ्गले प्रस्तुत गर्दै शाही नेपाली सेना र जनसेनाको द्वन्द्वमा प्राण त्याग्न विवश पात्रको प्रयोग गरिएको छ । उपन्यासको कथानकलाई अघि बढाउने क्रममा प्रयोग भएका मुख्य पात्र जलन र अमिसारिका छन् भने सहयोगी पात्रका रूपमा विरेन, जलनका बाबुआमा, चिरफार, मानसिं र टेम्के जस्ता सहायक पात्रको प्रयोग गरिएको छ । उपन्यासलाई गति दिन ठाउँ-ठाउँमा गौण पात्रको समेत प्रयोग गरिएको छ ।

यसरी के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का यी तीन वटै उपन्यासमा प्रयोग गरेका पात्रका आधारमा विषय अनुकूल बहुल पात्र प्रयोग गर्ने उपन्यासकारका रूपमा परिचित छन् ।

### ४.७.३ परिवेश विधान

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासमा प्रयोग भएको विषयवस्तु फरक-फरक भएकाले परिवेश विधान पनि फरक-फरक किसिमको पाइन्छ । उनका तीन वटै उपन्यासको विषयवस्तु सामाजिक भएको हुनाले यसमा प्रयोग गरिएको परिवेश पनि सामाजिक नै छ ।

आवेग उपन्यासको परिवेशका रूपमा ताप्लेजुङ्ग र पाँचथर जिल्लाका विभिन्न ठाउँलाई लिइएको छ । यहाँ उल्लेख गरिएका स्थानगत परिवेशमा ताप्लेजुङ्ग जिल्लाका फावाखोला, तावाखोला, तिरिङ्गे, नाङ्खोल्याङ्ग, दोखु, थेचम्बु, ल्याङ्वा आदि रहेका छन् । त्यसैगरी पाँचथर जिल्लाका अमरपुर, भालुचोक, नवमीडाँडा, फिदिम बजार, काबेली खोला, अमरपुर मा.वि. आदि रहेका छन् । उपन्यासमा पात्रहरू आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक परिवेश साथै सांस्कृतिक परिवेशको चित्रण गरिएको छ । यसमा सकारात्मक र नकारात्मक दुवै परिवेशको समेत उल्लेख गरिएको छ । यति मात्र होइन उपन्यासको कथानकमा प्रयोग भएको दिनेश र मञ्जुबीचको पवित्र प्रेम लीला जस्ता असत् पात्रले छताछुल्ल पारेको परिवेश समेत चित्रण गरिएको छ ।

त्यसैगरी राईको अर्को उपन्यास निर्दोष कैदीको रहस्य सामाजिक विषयवस्तु प्रयोग गरेर रचना गरिएको हुँदा प्रयुक्त परिवेश पनि सामाजिक नै रहेको छ । यस उपन्यासमा ग्रामीण, निमुखा, सोभा, सिधा जनताका चहाना, बाध्यता र विवशताको परिवेश उल्लेख गरिएको छ । यस उपन्यासको परिवेश ताप्लेजुङ्ग, पाँचथरदेखि भापा हुदै सिलिगुडीसम्म फैलिएको छ । त्यसैगरी ग्रामीण र सहरिया परिवेश पनि उल्लेख गरिएको छ । यहाँ लाहुरे जीवन बिताएका सविन र भोटु लाहुर गएकाले लाहुरे परिवेश पनि समावेश गरिएको छ । विभिन्न पात्रका घर, जेल, गाडीको बाटो पनि परिवेशका रूपमा रहेका छन् ।

राईको तेस्रो उपन्यास युद्धले खोसेको प्रेम सामाजिक ऐतिहासिक विषयवस्तु प्रयोग गरेर रचना गरिएकाले प्रयुक्त परिवेश सामाजिक ऐतिहासिक परिवेश रहेको छ । यस उपन्यासको मुख्य परिवेश द्वन्द्वकालीन नेपालको राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक परिवेश रहेका छन् । त्यस्तै राजनीतिक कारणबाट देशमा बस्ने वातावरण नहुँदा तथा गरीबीका कारण विदेशीनु परेकाले ढाका, मलेसिया जस्ता परिवेश पनि प्रस्तुत गरिएको छ । १० वर्षे जनयुद्धका कारण मानिसले पाएको दुःख, हत्या, अन्याय र अत्याचारको समेत चित्रण गरिएको छ ।

यस प्रकार परिवेश विधानका दृष्टिले राईका उपन्यासमा विषयवस्तु अनुरूपकै परिवेश लिइ सकारात्मक र नकारात्मक युगीन परिवेशलाई सुहाउँदो सन्दर्भमा प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसैले उनको परिवेश विधान सबल र सशक्त किसिमको पाइन्छ ।

#### ४.७.४ भाषाशैली

भाषाशैलीका दृष्टिले 'सिर्जन शिरीष' को प्रकाशित आवेग उपन्यासमा सरल, सहज एवं बोधगम्य भाषाको प्रयोग गरेका छन् । उनले स्थानीय गाउँघरका बोलीचालीका भर्रा, ठेट र आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन् । ठाउँ-ठाउँमा गीत, कविता र मुक्तकको प्रयोग गरेका छन् । उनले यहाँ नाना, पापा, खोरिया, फाल्सा, एकै रथका दुई पाङ्गा, उजाडेको सिउँदो जस्ता अनुकरणात्मक, पारिभाषिक, आलंकारिक शब्दहरूको प्रयोग गरेका छन् । उनको कथानक ढाँचा सरल एवं सहज किसिमको रहेको छ । यस्ता विविध प्रयोगले यस उपन्यासको भाषाशैलीगत गरिमा उच्च देखिन्छ ।

उनको अर्को उपन्यास निर्दोष कैदीको रहस्यमा ग्रामीण जनजीवनको सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । सामान्य नेपाली भाषीहरूले पनि बुझ्न सकिने भएकाले यसमा भाषाशैलीगत दुर्वोध्यता पाइँदैन । यहाँ आगन्तुक, भर्रा र अंग्रेजी शब्दको समेत प्रयोग गरिएको छ । यहाँ प्रयोग गरिएका अंग्रेजी शब्दहरूमा टर्चलाइट, रिटायर्ड, इन्स्पेक्टर, पेन्सन, आइ लभ यू आदि रहेका छन् । यस उपन्यासमा विविध गीत र कविताको प्रयोगले भाषाशैलीगत प्रभावकारिता थपेको देखिन्छ ।

युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासको भाषाशैलीको माध्यम सरल एवं सहज किसिमको छ । यसमा मुख्य गरी नेपाली भाषाको प्रयोग गरिए तापनि कही कही अंग्रेजी र मलेसियन भाषाको पनि प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यस उपन्यासमा नेपाली ठेट शब्दको समेत समावेश गरिएको छ । जसमा ग्वाली, मतान, सिकुवा आदि रहेका छन् । कतै कतै उखान टुक्काको प्रयोग गरी उपन्यासलाई आलंकारिक र भावुक बनाएको छ । यहाँ गीत, कविता, मुक्तकको प्रयोगका कारण उपन्यास संगीतमय बनेको छ । यी विविध शब्दहरूको प्रयोगका कारण उपन्यासको भाषाशैली सरल, सहज एवं बोधगम्य छ ।

यसरी 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासमा सरल, सहज एवं बोधगम्य भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । उनले अंग्रेजी र मलेसियन भाषाका साथै नेपाली ठेट शब्दको प्रयोग गरी उपन्यासलाई बहुभाषाका शब्द प्रयोगका दृष्टिले पनि उच्च स्तरको बनाएका छन् ।

#### ४.७.५ आयामको प्रयोग

आयामको प्रयोगका दृष्टिले के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यास लघु र मझौला आयामका देखिन्छन् । यस क्रममा राईको प्रथम प्रकाशित उपन्यास आवेग (२०५९), ९ परिच्छेद र ५८ पृष्ठमा संरचित भएको हुनाले यसको आयाम लघु किसिमको छ । दैवी विपत्तिबाट आफ्ना अभिभावक गुमाउन विवश बालबालिकाहरूको जीवन तहसनहस भएको यथार्थ चित्रण गरिएको प्रस्तुत उपन्यासको परिच्छेद विधानलाई हेर्दा न्यूनतम ३ पृष्ठ र चौथो परिच्छेद १६ पृष्ठको देखिन्छ । अन्य परिच्छेदहरू ५-१२ पृष्ठ बीचमा मिलाउने प्रयास गरिएको छ ।

त्यसैगरी 'सिर्जन शिरीष'को दोस्रो उपन्यास निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) मा १७ परिच्छेद र १०९ पृष्ठ रहेका छन् । यो उपन्यास रैखिक ढाँचामा संरचना गरिएको छ । दलाल, शोषक, सामन्तहरूले गरिब, निमुखा वर्गप्रति गरेको शोषण, अत्याचारलाई यस उपन्यासले पर्दाफास गरेको छ । उपन्यासको आन्तरिक र बाह्य संरचना दुबैको प्रयोग गरी सामाजिक विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गर्न सफल यस उपन्यासको आयाम सफल रहेको देखिन्छ । प्रस्तुत उपन्यासको परिच्छेद विभाजनलाई हेर्दा न्यूनतम ३ पृष्ठदेखि अधिकतम १४ पृष्ठसम्म रहेको देखिन्छ । अन्य परिच्छेदहरू ६-८ पृष्ठबीचको आयाम रहेका छन् ।

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को तेस्रो उपन्यास युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) मा २० परिच्छेद र १०९ पृष्ठ रहेका छन् । यो उपन्यास रैखिक ढाँचामा संरचना गरिएको छ । १० वर्षे जनयुद्धमा शाहीसेना र जनसेनाको दोहोरो भिडन्त परी ज्यान गुमाएका नेपालीहरूको दुःखद स्थितिको चर्चा गरिएको छ । यस उपन्यासमा न्यूनतम २ पृष्ठदेखि अधिकतम ९ पृष्ठसम्मको आयाम दिइएको छ ।

यसरी राईका यी तीन उपन्यासको आयामलाई हेर्दा आवेग लघु आयाम र निर्दोष कैदीको रहस्य तथा युद्धले खोसेको प्रेम मझौला आयाम भएका उपन्यासको दर्जामा रहेका छन् ।

#### ४.७.६ शीर्षक विधान

शीर्षक विधानका दृष्टिले राईको प्रवृत्ति फरक-फरक देखिएको पाईन्छ । सामाजिक विषयवस्तुलाई समेटेर रचना गरिएको उनको प्रथम उपन्यास आवेग (२०५९) हो । ग्रामीण परिवेशको चित्रण गरिएको यस उपन्यासमा बाबुआमाको वियोगमा परी जीवन निर्वाह गर्न कठिन भएका बालबालिकाहरूको भविष्य बरबाद भई उनीहरूले आवेगमा आएर गरेको निर्णयका कारण आत्महत्या गर्नुपर्ने स्थिति देखाउन उपन्यास सफल भएको छ । 'आवेग'को अर्थ मनमा अकस्मात् उठ्ने खलबली, मानसिक उत्तेजना, मनोविकार आदि भन्ने हुन्छ । यस उपन्यासमा अपरिपक्व किशोर किशोरी प्रेमको बन्धनमा बाँधिई आवेगमा प्रेम सुरु गर्दछन् । कमजोर मानसिकता भएका केटाकेटी हाम्रो नेपाली समाजमा यत्र तत्र पाइने भएकाले उपन्यासको शीर्षक आवेग राखिएको छ । यसरी यस कृतिमा प्रयुक्त विषयवस्तु, परिवेश र कथानकको अध्ययन गर्दा आवेग शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

त्यसैगरी निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा सविन, अर्चनाले निर्दोष कैदीको रूपमा रहेको सविनको बाबालाई कैदी जीवनबाट मुक्ति दिलाउनका लागि गरेको प्रयासलाई यस उपन्यासले कथावस्तु बनाएको छ । यस क्रममा प्रयोग भएका अन्य पात्रको संयोजन यथास्थानमा राखि कैदी जीवनको रहस्य उद्घाटन गर्ने प्रयास गरिएको छ । निर्दोष कैदीको रहस्य खुल्दा सविनको बाबा निर्दोष र दिलमान दोषी ठहरिएर सजाय पाएको अर्थमा यस उपन्यासको शीर्षक निर्दोष कैदीको रहस्य सार्थक छ ।

राईको अर्को युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा जलन र अमिसारिकाको प्रेम १० वर्षे युद्धले खोसेको छ । हरेक नेपालीको शान्ति र सुरक्षा द्वन्द्वले खोसेको छ । निर्दोष व्यक्तिहरू गोलीको सिकार बनेका छन् । नेपालीको इच्छा र चाहाना युद्धले खोसेर त्रास पैदा गराएको छ । यसरी यस उपन्यासमा प्रयोग गरिएको विषयवस्तु परिवेश र कथानकको अध्ययन गर्दा युद्धले खोसेको प्रेम शीर्षक सार्थक रहेको छ ।

#### ४.७.७ उपन्यासको केन्द्रिय कथ्य

कुनै पनि कृतिले पाठकलाई दिने सन्देश वा शिक्षालाई केन्द्रिय कथ्य भनिन्छ । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को सामाजिक विषयवस्तुको प्रयोग गरी रचना गरिएको प्रथम उपन्यास आवेग (२०५९) हो । यसमा तत्कालीन समाजमा दैवी प्रकोपबाट आफ्ना बुबाआमा गुमाउन बाध्य भएका किशोर किशोरीको जीवनकथा प्रस्तुत गरिएको छ । यस उपन्यासमार्फत उपन्यासकारले आफ्नो अभिभावकको अभावमा बालबालिकाको भविष्य कसरी बरवाद भएको छ भन्ने देखाउन खोजिएको छ । निस्वार्थ प्रेमको भावना राख्नुपर्छ, आवेगमा कुनै निर्णय गर्नु हुदैन, कसैले कसैलाई अन्याय गर्नुहुदैन, व्यावहारिक जीवन जीउन परिपक्व हुनुपर्छ, आपत् विपत् पर्दा धैर्यको सहारा लिनुपर्छ, उच्च आत्मबल लिएर इमान्दारीताका साथ कार्य गर्नु पर्छ भन्ने देखाउनु यस उपन्यासको केन्द्रिय कथ्य हो ।

त्यसैगरी निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा वर्गीय भेदभाव, सामाजिक असमानता जस्ता कुराको चित्रण गरिएको छ । साथै उच्च वर्ग र निम्न वर्गमा सकारात्मक धारणा राख्दै निम्न वर्गका व्यक्तिलाई पनि उच्च वर्गका व्यक्ति सरह व्यवहार गर्न प्रोत्साहन गरिएको छ । यस उपन्यास मार्फत अन्याय गर्नु हुदैन, सहनु पनि हुदैन, अन्यायको पर्दाफास गरी कानूनको दायरामा ल्याउनुपर्छ, अपराध लुकाएर लुक्दैन, अपराधी व्यक्ति कुनै न कुनै दिन अवश्य कानूनको फन्दामा पर्दछन् भन्ने केन्द्रिय कथ्य यस उपन्यासको रहेको छ ।

उनको अर्को उपन्यास युद्धले खोसेको प्रेममा १० वर्षे जनयुद्ध र त्यसको प्रभावको विश्लेषण गरी गौतम बुद्धको देश नेपाल अशान्तिको देश बन्न नपरोस्, भाइ-

भाइबीच सद्भावको भावना विकास होस्, युद्ध कहिल्यै नहोस्, मानिसको प्रेममय जीवन सफल होस्, एउटाको कारणले अर्काले ज्यान गुमाउनु नपरोस्, सोभ्रा सिधा जनतालाई सहि मार्ग निर्देशन गरियोस् जस्ता केन्द्रिय कथ्यमा प्रस्तुत उपन्यास संरचित छ । शान्तिका नाममा क्रान्ति कहिल्यै नगरियोस् भन्ने केन्द्रिय कथ्य युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा पाइन्छ ।

यी तीन वटै उपन्यासले दिने शिक्षाले पनि उपन्यासकार राईको केन्द्रिय कथ्यगत प्रवृत्तिलाई स्पष्ट रूपमा बुझ्न सकिन्छ । यसरी हेर्दा उनको प्रवृत्ति सामाजिक यथार्थवादी,

आदर्शोन्मुख यथार्थवादी, सामाजिक मनोवैज्ञानिक र ऐतिहासिक प्रस्तुति पाइनुले उनको केन्द्रिय कथ्यगत प्रवृत्ति पनि यही हो भन्न सकिन्छ ।

#### ४.७.८ पात्रको मनोविश्लेषण

के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष' ले आफ्ना उपन्यासमा प्रयोग गरेका पात्रहरूका बाह्य चरित्र मात्र नभएर आन्तरिक चरित्र समेतको उद्घाटनमा विशेष सफलता प्राप्त गरेको पाइन्छ । उनले आवेग उपन्यासकी प्रमुख पात्र मञ्जुमा होस् चाहे निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासकी प्रमुख पात्र अर्चनामा होस् या युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासकी अमिसारिकामा हास् तीनै उपन्यासमा प्रयोग गरिएका मुख्य नारी पात्रको मानसिक चरित्रको स्पष्ट चित्र खिच्ने प्रयास गरेका छन् । आवेग उपन्यासकी प्रमुख पात्र मञ्जु आफ्नो प्रेमी दिनेश रञ्जनासँग लाग्यो भनि लीला नामको पात्रले सुनाएपछि आवेगमा आएर मञ्जुले आत्महत्या गर्ने निर्णय गरेकी छे । छोटो समयमा नै दिनेश र मञ्जु एकअर्कामा प्रभावित भई आफ्नो सम्पूर्ण जीवन समर्पण गर्नुपर्दा कुनै पनि प्रतिक्रिया नदेखाएकाले यसमा यौन मनोविज्ञानलाई स्पष्ट पार्दछ । मनोवैज्ञानिक उपन्यास नभए तापनि यस उपन्यासमा प्रयोग भएकी मञ्जुले गरेका यस किसिमका कार्यको अध्ययनले राईको प्रवृत्ति पात्रको मनोविश्लेषणको अध्ययन गर्ने देखिन्छ । यस उपन्यासमा बाल मनोविज्ञानको समेत चित्रण गर्न खोजिएको छ ।

पात्रको मनोविश्लेषणको दृष्टिले निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यास सफल देखिन्छ । यसमा राईले अर्चनाको मानसिक उतार चढाव र मनका पत्रपत्रलाई सुक्ष्म दृष्टिले हेरेका छन् । यस क्रममा दिलमानकी छोरीका रूपमा जन्मिएकी अर्चना आफ्ना बाबुले गरेको अपहेलनाका कारण मावला गएर बस्छे । बाबुले गाउँले घर छिमेककी नारी नीतालाई गरेको अपमानका कारण ऊ आफ्नो बाबुप्रति विद्रोही बनेकी छे । एउटी निमुखा नारीको अपहेलनाले गर्दा उसको घमण्डमा ठूलो ठेस लाग्दछ । फलस्वरूप ऊ आफ्नो इच्छा चाहनालाई पर पन्छाएर विद्रोहमा लागेको छ । उसले बाबुको रहस्यको उद्घाटन गरेर नीतालाई बचाएकी छे । दिलमानमा रहेको यौन पिपासु प्रवृत्तिले उसको मनोयथार्थको उद्घाटन गरिएको छ । अर्चनाले यस उपन्यासमा सविनको माया, प्रेम र यौन चाहना जस्ता मानवीय इच्छाहरूको आवाज निकाल्न सकेकी छैन । ऊ आफ्नो आन्तरिक चाहना जुन अवचेतनको गर्भभित्र लुकेर रहेको छ ।

अर्चनाले सविन प्राप्त पछि यस उपन्यासको अन्त्य भएको छ । यस उपन्यासमा प्रत्यक्ष रूपमा मनोविज्ञानको प्रयोग नभए तापनि अप्रत्यक्ष रूपमा भने प्रयोग भएको पाइन्छ । यस उपन्यासमा पात्रका यस्ता प्रवृत्ति देखिनुले राईलाई पात्रको मनोविश्लेषण गर्ने प्रवृत्ति भएका उपन्यासकारका रूपमा लिन सकिन्छ ।

राईको मनोविश्लेषणको दृष्टिले युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यास सशक्त रहेको छ । यसमा समाज मनोविज्ञानको प्रयोग गरिएको छ । १० वर्षे जनयुद्धमा मानिसले पाएको दुःख र कष्टको स्थितिलाई उपन्यासकारले स्पष्ट रूपमा चित्रण गर्ने प्रयास गरेका छन् । जनयुद्धले गर्दा कतिको काख रित्तिएको छ त, कतिको घरवारविहिन भएको छ भने कतिको सिउँदो पुच्छिएको देखाएर समाजको मनोविश्लेषण गरेका छन् । यस उपन्यासमा जलन र अर्चनाले गरेको प्रेम सफल हुन नपाउँदै उनीहरूको जीवन बरबाद भएको देखाइएको छ । उनीहरूले सुन्दर जीवनको सपना देखेका हुन्छन् तर पूरा हुन नपाउँदै जनयुद्धमा भएको दोहोरो भिडन्तको गोलीले उनीहरूको जीवनलीला समाप्त भएकोछ । यसरी राईले यस उपन्यासमा समाज मनोविज्ञान र यौन मनोविज्ञान दुवैको प्रयोग गरेको देखिन्छ । यस किसिमको कार्यको अध्ययनले उनको प्रवृत्ति पात्रको मनोविश्लेषण गर्ने कुरालाई पुष्टि गर्छ ।

#### ४.८ निष्कर्ष

वि.सं. २०५९ सालदेखि नेपाली साहित्यको उपन्यास विधामा कलम सुरु गरेका के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासहरूको समग्र विषयवस्तुको अध्ययन गर्दा उनी सामाजिक ऐतिहासिक विषयवस्तुलाई सफलताका साथ प्रयोग गर्ने उपन्यासकारका रूपमा चिनिन्छन् । उपन्यासमा प्रयोग गरेका पात्रका आधारमा विषय अनुकूल बहुल पात्र प्रयोग गर्ने उपन्यासकारका रूपमा परिचित छन् । सरल शैली प्रयोग गरी सामान्य पाठकको मनमा बसेका राईले भाषाशैलीको प्रयोगमा उचित सफलता हासिल गरेका छन् । परिवेश विधानका दृष्टिले राईका उपन्यासमा विषयवस्तु अनुरूपकै परिवेश लिइ सकारात्मक र नकारात्मक युगीन परिवेशलाई सुहाउँदो सन्दर्भमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

त्यसैले उनको परिवेश विधान सबल र सशक्त किसिमको पाइन्छ । यसरी के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'ले आफ्ना आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासमा पात्रका माध्यमबाट उपन्यासकारले मनोविश्लेषणको प्रयोग गरेका छन् । उनले यौन मनोविज्ञान र समाज मनोविज्ञानको प्रयोग गरेर आफ्नो प्रवृत्तिलाई पात्रको मनोविश्लेषण गर्ने प्रवृत्ति

भएका उपन्यासकारका रूपमा चिनाएका छन् । ☆

## पाँचौं परिच्छेद

### के.पि राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासमा पात्रविधान

#### ५.१ पात्र र तिनको चरित्र

उपन्यासको तत्वगत संगठनमा पात्र र तिनको चरित्र पनि एउटा महत्वपूर्ण तत्व हो । आख्यान साहित्यमा जब कथा र उपन्यासले बेग्लाबेग्लै विधागत रूप अँगाल्न थाल्यो । त्यसैबेलादेखि कथा र उपन्यासमा मानव प्रतिनिधि पात्रको समावेश हुन थालेको हो । त्यसैबेलादेखि पात्र र तिनको चरित्र भन्नासाथ मानव प्रतिनिधि पात्रलाई नै मूल रूपमा स्वीकार्न थालिएको हो ।

उपन्यासका पात्र खासगरी मानव जीवनबाटै ग्रहण गरिन्छ । पात्र निर्माणका मूल स्रोत पनि मानव समाज र मानव जीवन नै हो । औपन्यासिक पात्रले तिनै सामाजिक जीवन र व्यक्ति जीवनका मानवीय जीवनलाई प्रस्तुत गर्दछ । यसैकारण उपन्यास वास्तविक जीवन जगतको प्रतिविम्ब हो र उपन्यासकारले पात्रका माध्यमबाट मानव चरित्रको सकेसम्म यथार्थ रूप आङ्कलन गर्न खोजेको हुन्छ । यिनै औपन्यासिक पात्रका माध्यमबाट उपन्यासकारले औपन्यासिक जीवन, दर्शन र उद्देश्यसमेत प्राप्त गर्ने लक्ष्य राखेको हुन्छ ।

उपन्यास आख्यानात्मक साहित्यिक कृति भएको हुँदा उपन्यासमा प्रयुक्त पात्र र तिनको चरित्रले कुनै वर्गीय विचार अथवा व्यक्तिगत विचारलाई पाठकसँग सम्प्रेषण गरिरहेको हुन्छ । त्यस्ता पात्रहरू नैतिक, अनैतिक गुणले युक्त हुन्छन् अनि तिनै पात्रहरूको चरित्रबाट मान्छेको बाह्य र आन्तरिक प्रवृत्तिहरूको पनि उद्घाटन भएको हुन्छ । सबै पात्रहरू बेग्ला-बेग्लै वर्ग वा व्यक्तिका अलग-अलग प्रतिनिधि बनेको हुँदा उपन्यासमा प्रयुक्त एक पात्र अर्को पात्रदेखि चरित्रगत रूपमा भिन्न देखा पर्दछ । यस अवस्थामा पात्रको चरित्रगत वर्गीकरण गर्नु आवश्यक पर्दछ । औपन्यासिक पात्रको चरित्रगत वर्गीकरण र विश्लेषणका विविध आधार र पद्धतिहरू भए पनि मूल रूपमा औपन्यासिक भूमिकासँग सम्बन्धित कार्य, लिङ्ग, स्वभाव, प्रवृत्ति, आसन्नता, आवद्धता आदि नै प्रमुख आधारहरू हुन् । यी आधारहरूको संक्षेपमा तल चर्चा गरिएको छ ।

## ५.२ चरित्रको वर्गीकरणका आधार

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासमा प्रयुक्त औपन्यासिक पात्रहरूको खास चरित्र विश्लेषण गर्नुपर्दा निम्नलिखित आधारहरूलाई नै मूल मन्त्र मान्नु पर्ने देखिन्छ ।

### (क) औपन्यासिक भूमिका वा कार्य

उपन्यासमा देखा परेका सबै पात्रहरूले एकैनासका बराबरी कार्य गरेका हुदैनन् । कुनै पात्रले महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेका हुन्छन् भने कुनै पात्रले चाहिँ गौण भूमिका मात्र निर्वाह गरेको हुन्छ । यसरी उपन्यासमा औपन्यासिक भूमिका वा कार्यका आधारमा पात्रहरूलाई मूल पात्र, सहायक पात्र र गौण पात्रका श्रेणी गरी जम्मा तीन श्रेणीमा छुट्टयाएर हेर्न सकिन्छ ।

उपन्यासमा सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उपस्थित रहेका र सबैभन्दा बढी कृतिगत भूमिका निर्वाह गर्ने पात्रलाई मूल पात्रको श्रेणीमा राख्न सकिन्छ । वास्तवमा मूल पात्रले नै औपन्यासिक घटना सञ्चालन गरेको हुन्छ र औपन्यासिक कथानकको मूल प्रवाहमा पनि यिनै श्रेणीका पात्रको भूमिका प्रभावकारी रहेको हुन्छ । मूल पात्रको भन्दा केही कम औपन्यासिक भूमिका वा कार्य भएका पात्रलाई सहायक पात्रको श्रेणीमा राखेर हेर्नु आवश्यक छ । यस श्रेणीका पात्रहरूले मूल पात्रको चारित्रिक विकासमा र उपन्यासको मूल घटना प्रवाहमा सहायक भूमिका निर्वाह गरेका हुन्छन् । यस्ता पात्रहरू मूल कथानकसँग जोडिएका उपकथानकसँग सम्बन्धित हुन्छन् । सहायक पात्रको औपन्यासिक कार्य वा भूमिकाभन्दा पनि कम र अत्यन्तै न्यून कार्य वा भूमिका भएका पात्रलाई गौण पात्रको श्रेणीमा राखेर हेर्न सकिन्छ । उपन्यासमा यस्ता पात्रहरूको आवृत्तिक्रम पनि अत्यन्तै न्यून हुन्छ । यी पात्रहरू उपन्यासमा एकछिनमा आउने, जाने र हराउने खालका हुन्छन् । त्यसैले यिनलाई औपन्यासिक कार्यगत दृष्टिले गौण पात्र भनिएको हो ।

### (ख) लिङ्ग

उपन्यासमा आउने जाने पात्रहरूको चिनारीका लागि लिङ्गगत आधार पनि एउटा प्रमुख आधार हो । यसबाट मानिसको प्राकृतिक जात छुट्टयाउन सजिलो पर्दछ । यसबाट उपन्यासमा कति पुरुष र कति महिला पात्रहरू छन् भन्ने कुरालाई पनि वर्गगत रूपमा छुट्टयाएर हेर्न

सकिन्छ । पुरुष पात्रको संख्या बढी भएमा उपन्यास पुरुषप्रधान उपन्यास हुन्छ भने स्त्रीपात्रको संख्या बढी भएमा स्त्री पात्रप्रधान उपन्यास बन्दछ । लिङ्गको आधारबाट पात्रको बाह्य, आन्तरिक स्वभाव र प्रवृत्ति, क्रियाकलाप र तिनका नाम छुट्याउन अत्यन्त सजिलो हुन्छ । यसबाट नायक नायिका, सहायक नायक नायिका, खल नायक नायिका आदि पात्रहरूको वर्गीकरण समेत गर्न सकिन्छ ।

### (ग) स्वभाव

औपन्यासिक पात्रहरूको चरित्र पनि समाजमा रहने पात्रहरूको भौँ परिस्थिति अनुसार परिवर्तन हुने नहुने खालका हुन्छन् । उपन्यासमा जुन पात्र परिस्थिति अनुसार परिवर्तन हुन्छ, त्यस्ता पात्रको जीवनशैली, विचारधारा र स्वभावमा समेत परिवर्तन देखा पर्दछ । त्यस्ता पात्रलाई उपन्यासमा स्वभावगत दृष्टिले परिवर्तनशील अथवा गतिशील पात्र भन्दछन् । तर कतिपय पात्रहरू उपन्यासमा सुरुदेखि अन्त्यसम्मै उही र उस्तै जीवनशैली अपनाएर एउटै विचारधारामा बग्ने र जस्तै परिस्थितिमा पनि स्वभावमा परिवर्तन नदेखिने खालका हुन्छन् भने त्यस्ता पात्रलाई गतिहीन वा स्थिर स्वभावका पात्र भन्दछन् । मूलतः उपन्यासमा यिनै दुई थरी स्वभाव भएका पात्रहरू प्रयुक्त हुन्छन् ।

### (घ) प्रवृत्ति

उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरूको चरित्रमा सकारात्मक गुण र नकारात्मक गुण दुवै पाइन्छ । यिनै गुणलाई चरित्रगत प्रवृत्ति पनि भन्दछन् र प्रवृत्तिकै आधारमा औपन्यासिक पात्रहरू अनुकूल र प्रतिकूल गरी दुई प्रवृत्तिका हुन्छन् । उपन्यासमा सकारात्मक कार्य गर्ने पात्रहरू अनुकूल प्रवृत्तिका हुन्छन् भने नकारात्मक कार्य गर्ने पात्रहरू चाहिँ प्रतिकूल प्रवृत्तिका हुन्छन् ।

### (ङ) आसन्नता

उपन्यासमा अधिकांश पात्रहरू उपस्थित र चित्रित हुन्छन् भने कतिपय पात्रहरू चाहिँ वर्णित मात्र हुन्छन् । औपन्यासिक कथानकमा हुने पात्रको उपस्थितिलाई औपन्यासिक पात्रको आसन्नता भन्दछन् । यो आसन्नतालाई दुई आधारमा विभाजित गर्न सकिन्छ, जसमा मञ्चीय

पात्र र नेपथ्यीय पात्र नै आसन्नतागत देखा परेका दुई वर्गका पात्रहरू हुन् । मञ्चीय पात्रहरू स्वयम् उपस्थिति भई औपन्यासिक कार्य गर्दछन् र ती पात्रहरूले वर्तमानको प्रतिनिधित्व पनि गर्दछन् । नेपथ्यीय पात्रहरू चाहिँ संस्मरणमा आएका हुन्छन् र उपन्यासमा तिनीहरूको उपस्थिति नभएर केवल वर्णन वा चर्चा मात्र भएको हुन्छ । यस्ता पात्रहरूले अतितकालको सङ्केत दिन्छन् ।

### (च)आबद्धता

उपन्यासमा पात्रहरूको मूल औपन्यासिक कार्य व्यापारसँग के-कस्तो सम्बन्ध छ भन्ने कुरा देखाउनलाई पात्रगत आबद्धताको उल्लेख गर्नु आवश्यक छ । उपन्यासमा प्रयुक्त मञ्चीय पात्रहरू उपन्यासको कार्यसँग सोभै बाँधिएको हुँदा त्यस्ता पात्रहरूको सार्थकता झल्काउनको लागि उसको आबद्धता के कस्तो छ भन्ने कुरा हेर्नु पर्ने हुन्छ । यस आधारमा पात्रहरूको औपन्यासिक कथानकसँगको बद्धता र मुक्ततालाई छुट्टाएर हेर्न सकिन्छ । मूल औपन्यासिक कथानक वा कार्य व्यापारसँग बद्ध पात्रहरूलाई उपन्यासबाट भिन्न मिल्दैन, यदि त्यस्ता पात्रलाई भिकिहालेको खण्डमा उपन्यासको मूल संरचना नै खलबलिन्छ, वा त्यसमा हास आउन सक्छ । तर मुक्त पात्रहरूलाई भिक्दा वा राख्दा त्यस्तो कुनै पनि हास भने आउँदैन । यिनै प्रमुख आधारहरूलाई तालिकीकरण गरी के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य, युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासका पात्रहरू र तिनका चरित्रलाई सोही आधारमा वर्गीकरण गरेर अब हेर्न सकिन्छ ।

### ५.२.१ 'आवेग' उपन्यासमा पात्रको औपन्यासिक भूमिकाका आधारमा वर्गीकरण

#### तालिका नं. १

| क्र.सं. | पात्रको नाम | मूलपात्रको श्रेणी | सहायक पात्रको श्रेणी | गौण पात्रको श्रेणी | कैफियत |
|---------|-------------|-------------------|----------------------|--------------------|--------|
| १       | दिनेश       | ✓                 | —                    | —                  |        |
| २       | मञ्जु       | ✓                 | —                    | —                  |        |
| ३       | बाजेबोजू    | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ४       | तुलसा       | —                 | ✓                    | —                  |        |

|    |                              |   |   |   |  |
|----|------------------------------|---|---|---|--|
| ५  | दिलसा                        | - | ✓ | - |  |
| ६  | रञ्जन                        | - | ✓ | - |  |
| ७  | रञ्जना                       | - | ✓ | - |  |
| ८  | रामु                         | - | ✓ | - |  |
| ९  | लिला                         | - | ✓ | - |  |
| १० | दिनेशका बुबाआमा              | - | - | ✓ |  |
| ११ | दिदी                         | - | - | ✓ |  |
| १२ | दाजु                         | - | - | ✓ |  |
| १३ | शोभा                         | - | - | ✓ |  |
| १४ | वैकुण्ठे साहु                | - | ✓ | - |  |
| १५ | वैकुण्ठे साहुको छोरा         | - | - | ✓ |  |
| १६ | वैकुण्ठे साहुका<br>मतियारहरू | - | - | ✓ |  |
| १७ | मञ्जुका बुबाआमा              | - | - | ✓ |  |
| १८ | मञ्जुकी दिदी                 | - | - | ✓ |  |
| १९ | मञ्जुको दाजु                 | - | - | ✓ |  |

५.२.२ 'आवेग' उपन्यासका पात्रहरुको तालिकागत चरित्रका आधारमा वर्गीकरण

तालिका नं. २

|    | पात्रको नाम | लिङ्ग  |       | स्वभाव |       | प्रवृत्ति |          | आसन्नता |          | आवद्धता |       |
|----|-------------|--------|-------|--------|-------|-----------|----------|---------|----------|---------|-------|
|    |             | स्त्री | पुरुष | गतिशील | स्थिर | अनुकूल    | प्रतिकूल | मञ्चीय  | नेपथ्यीय | बद्ध    | मुक्त |
| १  | दिनेश       | -      | ✓     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| २  | मञ्जु       | ✓      | -     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ३  | बाजे        | -      | ✓     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ४  | बोजू        | ✓      | -     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ५  | तुलसा       | ✓      | -     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ६  | दिलसा       | ✓      | -     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ७  | रञ्जन       | -      | ✓     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ८  | रञ्जना      | ✓      | -     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| ९  | रामु        | -      | ✓     | -      | ✓     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓       | -     |
| १० | लिला        | -      | ✓     | -      | ✓     | -         | ✓        | ✓       | -        | ✓       | -     |

|    |                           |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | दिनेशको बुबा              | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | - | - | ✓ |
| १२ | दिनेशकी आमा               | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | - | - | ✓ |
| १३ | दिदी                      | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | - | - | ✓ |
| १४ | दाजु                      | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | - | - | ✓ |
| १५ | शोभा                      | - | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १६ | वैकुण्ठे साहु             | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - |
| १७ | वैकुण्ठे साहुको छोरा      | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |
| १८ | वैकुण्ठे साहुका मतियारहरू | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |
| १९ | मञ्जूको बुबा              | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २० | मञ्जूकी आमा               | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २१ | मञ्जूको दिदी              | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २२ | मञ्जूको दाजु              | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |

५.२.३ 'निर्दोष कैदीको रहस्य' उपन्यासका पात्रहरुको औपन्यासिक भूमिकाका आधारमा वर्गीकरण

तालिका नं. ३

| क्र.सं. | पात्रको नाम       | मूलपात्रको श्रेणी | सहायक पात्रको श्रेणी | गौण पात्रको श्रेणी | कैफियत |
|---------|-------------------|-------------------|----------------------|--------------------|--------|
| १       | सविन              | ✓                 | —                    | —                  |        |
| २       | अर्चना            | ✓                 | —                    | —                  |        |
| ३       | निता              | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ४       | अर्चना            | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ५       | विरमान            | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ६       | दिलमान            | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ७       | बाबा              | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ८       | सन्देश            | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ९       | भेटु              | —                 | ✓                    | —                  |        |
| १०      | मनराज             | —                 | —                    | ✓                  |        |
| ११      | कान्छी            | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १२      | गुईठे             | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १३      | सुईठे             | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १४      | जुठे सुठे         | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १५      | भोटुकी श्रीमती    | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १६      | सन्देश            | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १७      | सविनको मामा       | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १८      | युवती             | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १९      | अपराधी            | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २०      | पुलिस १५-१६ जना   | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २१      | दिलमानका भरौटेहरू | —                 | —                    | ✓                  |        |

५.२.४ 'निर्दोष कैदीको रहस्य' उपन्यासका पात्रहरुको तालिकागत चरित्रका आधारमा वर्गीकरण

तालिका नं. ४

| क्र.सं. | पात्रको नाम | लिङ्ग  |       | स्वभाव |       | प्रवृत्ति |          | आसन्नता |          | आवद्धता |       |
|---------|-------------|--------|-------|--------|-------|-----------|----------|---------|----------|---------|-------|
|         |             | स्त्री | पुरुष | गतिशील | स्थिर | अनुकूल    | प्रतिकूल | मञ्चीय  | नेपथ्यीय | बद्ध    | मुक्त |
| १       | सविन        | —      | ✓     | ✓      | —     | ✓         | —        | ✓       | —        | ✓       | —     |
| २       | अर्चना      | ✓      | —     | ✓      | —     | ✓         | —        | ✓       | —        | ✓       | —     |
| ३       | निता        | ✓      | —     | ✓      | —     | ✓         | —        | ✓       | —        | ✓       | —     |
| ४       | अर्चना      | ✓      | —     | ✓      | —     | ✓         | —        | ✓       | —        | ✓       | —     |
| ५       | वीरमान      | —      | ✓     | ✓      | —     | —         | —        | ✓       | —        | —       | ✓     |
| ६       | दिलमान      | —      | ✓     | —      | ✓     | —         | ✓        | ✓       | —        | ✓       | —     |
| ७       | बाबा        | —      | ✓     | —      | ✓     | —         | —        | ✓       | —        | —       | ✓     |
| ८       | सन्देश      | —      | ✓     | —      | ✓     | —         | —        | ✓       | —        | —       | ✓     |
| ९       | भोटु        | —      | ✓     | —      | ✓     | —         | —        | ✓       | —        | —       | ✓     |
| १०      | मनराज       | —      | ✓     | —      | ✓     | —         | —        | ✓       | —        | —       | ✓     |

|    |                   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|-------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | कान्छी            | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| १२ | गुइँठे            | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |
| १३ | सुइँठे            | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |
| १४ | जुठे, सुठे        | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |
| १५ | भोटुकी श्रीमती    | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १६ | सविनको मामा       | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १७ | युवती             | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १८ | अपराधी            | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |
| १९ | पुलिस १५-१६ जना   | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २० | दिलमानका भरौटेहरू | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ |

५.२.५ 'युद्धले खोसेको प्रेम' उपन्यासका पात्रहरूको औपन्यासिक भूमिकाका आधारमा वर्गिकरण

तालिका नं. ५

| क्र.सं. | पात्रको नाम         | मूलपात्रको श्रेणी | सहायक पात्रको श्रेणी | गौण पात्रको श्रेणी | कैफियत |
|---------|---------------------|-------------------|----------------------|--------------------|--------|
| १       | जलन                 | ✓                 | —                    | —                  |        |
| २       | अमिसारिका           | ✓                 | —                    | —                  |        |
| ३       | जलनका बुवाआमा       | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ४       | विरेन               | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ५       | विरेनका आमा         | —                 | —                    | ✓                  |        |
| ६       | चिरफार              | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ७       | मुगाधन              | —                 | —                    | ✓                  |        |
| ८       | मानसिं              | —                 | ✓                    | —                  |        |
| ९       | टम्के               | —                 | ✓                    | —                  |        |
| १०      | नुतन                | —                 | —                    | ✓                  |        |
| ११      | क्याम्पस चिफ        | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १२      | रातमाटे कान्छी दिदी | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १३      | मतान घरे बाजे       | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १४      | मनराज बाजे          | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १५      | ज्योती              | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १६      | इन्द्रसर            | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १७      | इन्द्रसरकी श्रीमती  | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १८      | रामानन्दे कान्छा    | —                 | —                    | ✓                  |        |
| १९      | सुकमती बोजु         | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २०      | लोके                | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २१      | सुकमतीको छोरा       | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २२      | सुकमतीको छोरी       | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २३      | सुकमतीको श्रीमान    | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २४      | पुष्पाञ्जली काकी    | —                 | —                    | ✓                  |        |
| २५      | सुरेश काका          | —                 | —                    | ✓                  |        |

|    |                        |   |   |   |  |
|----|------------------------|---|---|---|--|
| २६ | खोलाघरे जेठाको छोरा    | — | — | ✓ |  |
| २७ | मिनेको भाई             | — | — | ✓ |  |
| २८ | औसेको कान्छा छोरा      | — | — | ✓ |  |
| २९ | वहादुर दाईको भाई       | — | — | ✓ |  |
| ३० | भक्तिप्रसादको भतिजा    | — | — | ✓ |  |
| ३१ | टेम्केको बुवाआमा       | — | — | ✓ |  |
| ३२ | टेम्केको दाजु          | — | — | ✓ |  |
| ३३ | टेम्केको भाई           | — | — | ✓ |  |
| ३४ | मानसिको बुवाआमा        | — | — | ✓ |  |
| ३५ | मानसिको दाजु           | — | — | ✓ |  |
| ३६ | मानसिको भाई            | — | — | ✓ |  |
| ३७ | बदला                   | — | — | ✓ |  |
| ३८ | बिजुली                 | — | — | ✓ |  |
| ३९ | मनराज बाजेका ४ छोरा    | — | — | ✓ |  |
| ४० | मनराज बाजेका २ छोरी    | — | — | ✓ |  |
| ४१ | मनराजबाजेकी श्रीमती    | — | — | ✓ |  |
| ४२ | मन्त्री                | — | — | ✓ |  |
| ४३ | राजा                   | — | — | ✓ |  |
| ४४ | माभ्रघरे जेठी          | — | — | ✓ |  |
| ४५ | माभ्रघरे जेठीकी बुहारी | — | — | ✓ |  |
| ४६ | माभ्रघरे जेठीकी नातिनी | — | — | ✓ |  |
| ४७ | केराबारी दिदी          | — | — | ✓ |  |
| ४८ | केप्टेन बाजे           | — | — | ✓ |  |
| ४९ | केप्टेन बाजेकी बुहारी  | — | — | ✓ |  |
| ५० | लाहुरेनी बोजू          | — | — | ✓ |  |
| ५१ | लाहुरेनी बोजूको छोरा   | — | — | ✓ |  |
| ५२ | मुगाधनको बुवाआमा       | — | — | ✓ |  |
| ५३ | मुगाधनको दाजु          | — | — | ✓ |  |
| ५४ | मुगाधनको भाई           | — | — | ✓ |  |
| ५५ | विरेनको बुवाआमा        | — | — | ✓ |  |
| ५६ | एयर होस्टेजहरु         | — | — | ✓ |  |
| ५७ | बोस                    | — | — | ✓ |  |
| ५८ | रमेश                   | — | — | ✓ |  |
| ५९ | रामलाल                 | — | — | ✓ |  |
| ६० | निशा                   | — | — | ✓ |  |

|    |   |   |   |   |  |
|----|---|---|---|---|--|
| ६१ | निशाकी छोरी                                   | — | — | ✓ |  |
| ६२ | रमा ठूली                                      | — | — | ✓ |  |
| ६३ | बुढो मान्छे                                   | — | — | ✓ |  |
| ६४ | चन्द्रमा                                      | — | — | ✓ |  |
| ६५ | बोजू  | — | — | ✓ |  |
| ६६ | शुशिला  | — | — | ✓ |  |
| ६७ | भक्ति दाई                                     | — | — | ✓ |  |
| ६८ | गोसवाला                                       | — | — | ✓ |  |
| ६९ | महवाला  | — | — | ✓ |  |
| ७० | चुरौटे  | — | — | ✓ |  |
| ७१ | भरियाहरु                                      | — | — | ✓ |  |
| ७२ | प्रहरी जवानहरु                                | — | — | ✓ |  |
| ७३ | प्रहरी हवलदार                                 | — | — | ✓ |  |
| ७४ | गाउँलेहरु                                     | — | — | ✓ |  |
| ७५ | माओवादीहरु                                    | — | — | ✓ |  |
| ७६ | विद्यार्थीहरु                                 | — | — | ✓ |  |
| ७७ | धारामा पानी थाप्न<br>आएका ३/४ जना<br>महिलाहरु | — | — | ✓ |  |
| ७८ | अमिशारिकाका साथीहरु                           | — | — | ✓ |  |

५.२.६ 'युद्धले खोसेको प्रेम' उपन्यासमा पात्रहरूको तालिकागत चरित्रका आधार वर्गीकरण

तालिका नं. ६

| क्र.सं. | पात्रको नाम | लिंग   |       | स्वभाव |       | प्रवृत्ति |          | आसन्नता |          | आवृद्धता |       |
|---------|-------------|--------|-------|--------|-------|-----------|----------|---------|----------|----------|-------|
|         |             | स्त्री | पुरुष | गतिशील | स्थिर | अनुकूल    | प्रतिकूल | मञ्चीय  | नेपथ्यीय | बद्ध     | मुक्त |
| १       | जलन         | -      | ✓     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓        | -     |
| २       | अमिसारिका   | ✓      | -     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | ✓        | -     |
| ३       | जलनको बुवा  | -      | ✓     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | -        | ✓     |
| ४       | जलनकी आमा   | ✓      | -     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | -        | ✓     |
| ५       | विरेन       | -      | ✓     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | -        | ✓     |
| ६       | विरेनका आमा | ✓      | -     | -      | ✓     | ✓         | -        | -       | ✓        | -        | ✓     |
| ७       | चिरफार      | -      | ✓     | ✓      | -     | ✓         | -        | ✓       | -        | -        | ✓     |
| ८       | मुगाधन      | -      | ✓     | ✓      | -     | ✓         | -        | -       | ✓        | -        | ✓     |
| ९       | मानसिं      | -      | ✓     | -      | ✓     | -         | ✓        | ✓       | -        | ✓        | -     |

|    |                     |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | टेम्के              | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - |
| ११ | नुतन                | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १२ | क्याम्पस चिफ        | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| १३ | रातमाटे कान्छी दिदी | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १४ | मतान घरे बाजे       | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| १५ | मनराज बाजे          | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १६ | ज्योती              | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| १७ | इन्द्रसर            | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| १८ | इन्द्रसरकी श्रीमती  | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| १९ | रामानन्दे कान्छा    | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २० | सुकमती बोजु         | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| २१ | लोके                | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २२ | सुकमतीको छोरा       | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २३ | सुकमतीको छोरी       | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २४ | सुकमतीको श्रीमान    | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |

|    |                     |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५ | पुष्पाञ्जली काकी    | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| २६ | सुरेश काका          | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| २७ | खोलाघरे जेठाको छोरा | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| २८ | मिनेको भाई          | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| २९ | औंसेको कान्छा छोरा  | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ३० | वहादुर दाईको भाई    | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ३१ | भक्तिप्रसादको भतिजा | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ३२ | टेम्केको बुवा       | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ३३ | टेम्केको आमा        | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ३४ | टेम्केको दाजु       | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ३५ | टेम्केको भाई        | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ३६ | मानसिको बुवा        | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ३७ | मानसिकी आमा         | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ३८ | मानसिको दाजु        | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ३९ | मानसिको भाई         | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |

|    |                        |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४० | बदला                   | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ४१ | बिजुली                 | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ४२ | मनराज बाजेका ४ छोरा    | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४३ | मनराज बाजेका २ छोरी    | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४४ | मनराजबाजेकी श्रीमती    | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४५ | मन्त्री                | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४६ | राजा                   | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४७ | माभ्रघरे जेठी          | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४८ | माभ्रघरे जेठीकी बुहारी | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ४९ | माभ्रघरे जेठीकी नातिनी | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५० | केराबारी दिदी          | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५१ | केप्टेन बाजे           | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५२ | केप्टेन बाजेकी बुहारी  | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५३ | लाहुरेनी बोजू          | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५४ | लाहुरेनी बोजूको छोरा   | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |

|    |                |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|----------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५५ | मुगाधनको बुवा  | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५६ | मुगाधनकी आमा   | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५७ | मुगाधनको दाजु  | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५८ | मुगाधनको भाई   | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ५९ | विरेनको बुवा   | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ६० | विरेनकी आमा    | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ६१ | एयर होस्टेजहरु | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ६२ | बोस            | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ६३ | रमेश           | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ६४ | रामलाल         | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ६५ | निशा           | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ६६ | निशाकी छोरी    | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ६७ | रमा ठूली       | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ६८ | बुढो मान्छे    | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ६९ | चन्द्रमा       | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |

|    |  |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|--|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७० | बोजू                                       | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ७१ | शुशिला                                     | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७२ | भक्ति दाई                                  | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७३ | गोसवाला                                    | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७४ | महवाला                                     | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७५ | चुरौटे                                     | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७६ | भरियाहरु                                   | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७७ | प्रहरी जवानहरु                             | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७८ | प्रहरी हवलदार                              | - | ✓ | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ७९ | गाउँलेहरु                                  | - | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ८० | माओवादीहरु                                 | - | - | ✓ | - | - | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ८१ | विद्यार्थीहरु                              | - | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |
| ८२ | धारामा पानी थाप्न आएका<br>३/४ जना महिलाहरु | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | ✓ | - | - | ✓ |
| ८३ | अमिशारिकाका साथीहरु                        | ✓ | - | - | ✓ | ✓ | - | - | ✓ | - | ✓ |

## ५.३ तालिकामा प्रस्तुत 'आवेग' उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरूको चरित्र विश्लेषण

प्रस्तुत आवेग उपन्यासमा औपन्यासिक कार्यगत भूमिकाका आधारमा हेर्दा १८ जना पात्रहरू लगायत छिमेकी र बैकुण्ठेका मतियारहरू रहेका छन् । जसमा १० जना र बैकुण्ठेका मतियारहरू पुरुष पात्रहरूका रूपमा रहेका छन् भने ८ जना नारी पात्रहरू रहेका छन् । छिमेकीहरू भने नारी तथा पुरुष छयासमिस अवस्थामा रहेका छन् । सहायक पात्र लिला र गौण पात्र बैकुण्ठे साहु, उसको छोरो र बैकुण्ठे साहुका मतियारहरू असत्, अरूलाई थिचोमिचो गर्ने, सामन्ती पात्र हुन भने अन्य सबै पात्रहरू सत्, निस्वार्थी, निर्दोष तथा आदर्श पात्रहरू हुन् । पात्र संख्याका दृष्टिले आवेग उपन्यासलाई बहुपात्रीय उपन्यास भन्नु पर्ने हुन्छ । यस उपन्यासमा स्थिर र गतिशील गरी दुई किसिमका पात्रहरू समाविष्ट रहेका छन् । जसले मानव समाजका यथार्थ मानवीय पात्रको प्रतिनिधित्व गरेको छ । तहगत रूपमा हेर्दा मुख्य, सहायक र गौण गरी तीनै तहका पात्रहरू पाउन सकिन्छ । दिनेश र मञ्जुको प्रेम कहानीलाई मुख्य कथानक बनाइएको प्रस्तुत उपन्यास आवेगमा प्रयुक्त पात्रहरू दिनेश र मञ्जु प्रमुख पात्रका रूपमा आएका छन् भने कथानकलाई गति दिने सन्दर्भमा प्रयोग भएका बाजेबोजू, रञ्जन, रञ्जना, रामु, तुलसा, दिलसा गरि ६ जना सहायक पात्रका रूपमा आएका छन् । त्यसैगरी अन्य सबै पात्रहरू लिला, शोभा, बैकुण्ठे साहु, बैकुण्ठको छोरो, बैकुण्ठेका मतियारहरू, दिनेशका बुबा-आमा, दिदी, दाजु, मञ्जुका बुबा-आमा, छिमेकीहरू गौण पात्रका रूपमा प्रयोग भएका छन् । उपन्यासमा पात्रहरूको उपस्थिति, भूमिका महत्वको विश्लेषण यस प्रकार गरिएको छ ।

### ५.३.१ प्रमुख पात्रहरू

#### (क) दिनेश

दिनेश यस उपन्यासको प्रमुख पात्र हो । उपन्यासको कथावस्तु दिनेशकै सेरोफेरोमा घुमेको छ । ऊ ताप्लेजुङ्गको फावाखोलमा एक गरिब परिवारमा जन्मेको व्यक्ति हो । ऊ नियती ठगे पनि, भाग्यले उपेक्षा गरे पनि आफ्नो कर्मको रेखा आफैँ कोर्छु भन्ने मान्यताका साथ बुबा, आमा, दिदी र दाजु प्राकृतिक प्रकोपलाई सुम्पेर

पैतृक सम्पत्ति पनि त्यागेर आफु अर्को ठाउँमा श्रम गरि जीवन निर्वाह गर्छ । त्यति मात्र नभई आफ्नो भविष्य आफै निर्माण गर्न भालुचोक आई डेरा बसेर पढ्न थाल्छ । त्यस्तै पिडा बोकेकी अर्की पात्र मञ्जुसँग कुवामा पानी भर्न जाँदा भेट हुन्छ । मञ्जु र दिनेश एक अर्कामा आकर्षित हुन्छन् । दिनेशलाई प्रेमको अनौठो अनुभूति बढ्न थाल्छ । मञ्जुको क्रियाकलाप हेर्दा दिनेशलाई पहिलाकी साथी शोभाको सम्झना आउँछ । ऊ मञ्जुलाई जीवन साथी बनाउने योजनामा अधि लम्किन्छ । सफलताको नजिक-नजिक पुग्नै लाग्दा अपरिपक्व स्थितिमा प्रेमको डोरी आवेगमा नै चुडिएको छ । कृतिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा दिनेशको उपस्थिति अन्य पात्रको तुलनामा अधिक नै देखा पर्दछ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उनको भूमिका कथानकको विकाससँगै जोडिएर आएको छ । यसरी कृतिगत कार्यका दृष्टिले उपन्यासमा दिनेशले गरेको कार्य अन्य पात्रको भन्दा बढी महत्वपूर्ण छ । उसकै कार्यश्रृङ्खलासँग अन्य पात्रहरूको कृतिगत कार्य पनि जोडिएको हुँदा यस उपन्यासमा दिनेश नै केन्द्रिय पात्रको रूपमा देखा परेको छ ।

लिङ्गका आधारमा दिनेश पुरुष पात्र हो । 'दिनेश' नामैले पनि पुरुष जनाउँछ । यस उपन्यासमा ऊ बाल्यकालमै आफ्ना बुबा, आमा, दिदी, दाजु प्रकृतिको प्रकोपमा परी गुमाउन विवश एक्लो, टुहुरो र अनाथ व्यक्तिका रूपमा बाँचेको पात्र हो । आफ्नो भविष्य उज्ज्वल बनाउन पढ्न चाहने दिनेश बाजेबजूको घरमा डेरा बसी अमरपुर मा.वि. मा कक्षा ८ मा भर्ना हुन्छ । एकै घरमा बस्दा मञ्जुसँग चिनजान हुन्छ । उनीहरूलाई मायाको डोरीले कस्तै थाल्छ र अन्त्यमा विवाह गर्ने निष्कर्षसम्म पुग्छन् । गाउँघर, इष्टमित्र, मेलापात, हाटबजार आदिमा सरिक हुन चाहने दिनेश अरु सबैको विश्वास पात्र हुन्छ । ऊ लिलाको ईष्यापात्र हुन्छ । बाटो खन्दा ल्याङ्बामा अविश्रमणीय सहयोग गर्ने रामु र शोभामध्ये रामुसँग भेट हुँदा आभार प्रकट गर्ने दिनेश एक कृतज्ञ पात्र हो । दिनेश कविता, गीत, मुक्तक आदि अत्यन्तै मन पराउँछ । विविध साहित्यिक कार्यक्रममा भाग लिन्छ । ऊ रञ्जन दाई दुर्घटनामा पर्दा रञ्जना दिदीलाई माइतघर तावाखोला रञ्जना दिदीको आग्रहमा पुऱ्याउन गएको छ । ऊ समाजमा सुख दुःखमा सहयोग गर्ने अत्यन्तै सहयोगी तथा मिलसार पात्र हो ।

अर्को कुरा, दिनेशलाई रञ्जनाले भाइ मानेकी छे । संवादको माध्यमबाट उसको पुरुष परिचय यसरी देखाइएको छ- “निकैबेर गफ गरे पश्चात रञ्जना बोल्छे, भाइ हाम्रो साइनो सम्बन्ध नलाग्ने रहेछ । जे भए पनि हामी राई समुदायका हौं । आजदेखि हामी दिदी-भाइ दाजुको नातामा बाँधिऔं ल भाई, हामी पनि एउटा यात्री हौं, देशी हौं ।”<sup>३८</sup> यसबाट पनि ऊ पुरुष पात्र नै हो भन्ने कुरा दुई मत छैन ।

स्वभावका आधारमा उसलाई स्थिर स्वभावको पात्र मान्न सकिन्छ । उसले सुरुदेखि अन्त्यसम्मै उही र उस्तै जीवनशैली अपनाएर एउटै विचारधारामा बग्ने र जस्तै परिस्थितिमा पनि स्वभावमा परिवर्तन देखाएको छैन ।

प्रवृत्तिका आधारमा दिनेश मञ्जुको प्रेमलाई सहर्ष स्विकार्ने अनुकूल पात्र हो । मञ्जुसँग उनको वैवाहिक कार्यक्रम पारिवारिक सहमतिमा नै टुङ्गो लाग्नु, एक अर्काको अभावमा दुबै दुःखी हुनु जस्ता घटनाक्रमबाटै दिनेशको चरित्रमा प्रवृत्तिगत अनुकूलत देखा पर्दछ । यस कुरामा दिनेश एउटा डायरी र कलम हातमा लिएर मायाको भाव खुसीको लहर यसरी पोच्छे-

भुले पनि तिमीले यो प्रेमलाई म त भुल्ने छैन

हजारौं बसन्त आए पनि , यो मन तिमी बिना फुल्ने छैन ।

पवित्र मन्दिरमा खाएको कसम तोडेर गए पनि

तिमीले छोडेर गएको बाचाहरू म भुल्ने छैन ।

तिम्रो चोखो प्रेममा हजारौं धोका खाए पनि

जिन्दगी भरी तिमीले दिएको धोका बिसर्ने छैन ।

तिमीले मलाई हाँसी हाँसी छलेर गए पनि

म त छलेर हिड्ने छैन ।

---

<sup>३८</sup> के.पि राई, आवेग, न्यू पाथिभरा छापाखाना, भापा, २०५९, पृष्ठ, ४५ ।

सधैभरी संभरीरहने छु तिमीलाई म

कहिल्यै पनि म भुल्ने छैन ।<sup>३९</sup>

माथिको उद्धरणबाट पनि दिनेशको चरित्रमा देखा परेको अनुकूल प्रवृत्ति स्पष्ट हुन आउँछ ।

आसन्नताका आधारमा उपन्यासका सम्पूर्ण परिच्छेदमा भएको उपस्थितिले गर्दा दिनेश पूर्ण रूपमा मञ्जीय सत् पात्र हो ।

आबद्धताको आधारमा दिनेश यस उपन्यासको बद्ध पात्र हो । उपन्यासको सम्पूर्ण कथावस्तु उसकै सेरोफरोबाट विकास भएको छ ।

(ख) मञ्जु

व्यक्तिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा दिनेशपछि दोस्रो स्थानमा मञ्जुको नाम आउँछ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उनको भूमिका कथानकको विकाससँगै प्रत्यक्ष रूपले दिनेशसँग जोडिएर आएको छ । यसर्थ मञ्जुलाई पनि यस उपन्यासको मूल पात्र अन्तर्गत राख्न सकिन्छ ।

मञ्जु नामैले पनि स्त्री पात्र हुन भन्ने कुरा प्रष्ट हुन्छ । यस उपन्यासमा दिनेशकी प्रेमिका रूपमा मञ्जुको उपस्थिति देखाइएको छ । मञ्जुको वाह्य व्यक्तित्व र अकर्षणलाई दिनेश पात्रको माध्यमबाट यसरी वर्णन गरेका छन्—

“साधारण कपडा पहिरिएकी, लामोभन्दा लामो हैन छोटो पनि हैन ठिक्कको केश । कालो छरितो शरीर ।”<sup>४०</sup> मञ्जुका आमाबुबा तथा सम्पूर्ण घर परिवारलाई पहिरोले बगाएपछि एकलै बाँच्न सफल पात्र हो । मञ्जु बाजेबजूको एकमात्र उत्तराधिकारीका रूपमा बसेको बेला दिनेशसँग भेट, चिनजान र मायाप्रीति सुरु हुन्छ । किशोर अवस्थामा प्रेमको बन्धनमा बाँधिएकी मञ्जु आकर्षक व्यक्तित्व भएकी पात्र

<sup>३९</sup> पूर्ववत्, २०५९, पृष्ठ, ५ ।

<sup>४०</sup> पूर्ववत्, २०५९, , पृष्ठ, २९ ।

हो । मञ्जु, तुलसा र दिलसाको सहयोगमा प्रेमपूर्ण जीवन बिताउँदै आएकी सत् पात्र हो । उ दिनेशलाई बारम्बार सम्झन्छे । हरबखत दिनेशलाई माया गर्ने मञ्जु मानिसलाई जब दुःख आई पछे तब मृत्यु पनि प्यारो लाग्छ भने भैँ मञ्जु दिनेशको लागि मर्न चाहन्छे । एकदिन मञ्जु स्कूल नगई फोटो हेदैँ दिनेशसँग आफुलाई दाज्छे । दिनेशलाई बोलाउछे, फोटो चुम्छे, डायरीका पानामा दिनेशको तस्विर टाँस्छे अनि तल आफ्नो मनको भावना पोच्छे । मञ्जु प्रेमको पोखरीमा पौडिन चाहन्छे । यस कुरालाई मञ्जुले आफ्नो डायरीमा यसरी व्यक्त गरेकी छे—

“हृदय सुकाउने घाम होइन तिमी

शरदको चाँदनी बनि बसी देउ

प्रेमको शिशिर होइन तिमी

घाटी रसाउने अमृत बनिदेउ ।”<sup>४१</sup>

मञ्जुको शारीरिक तथा मानसिक अवस्था पनि अपरिपक्व रहेको कारण पनि मञ्जु दिनेशप्रति एकोहोरो सानोतिनो कुरामा आकर्षित भएकी छे । जुन कुरा मञ्जुले दिनेशलाई लेखेको चिठीमा उल्लेख छ —

पत्र लेखेँ हजुरको नाम उच्चारण गरेर । तर जे होस्, जसरी स्विकारी दिनु होला । तपाईंको लागि यो पत्र मान्य नहोला । यो मेरो हृदयको प्रथम विष्फोट हो । मायाको नाममा हजुरको हृदयमा जमाउनुहोस् । यति मात्रै होइन जबसम्म यो संसार रहन्छ तबसम्म म तपाईंको निमित्त प्रेमि जोडि हाजिर रहने छु ।

यदि यो पत्र स्विकार भएन भने म मृत्युको डोरीमा अनि कालको मुखमा अवश्य पर्नेछु । थाहा छ तिमीलाई म कति माया गर्छु भनेर ।

दिनेश जब देखे तिम्रो नजर तब यो दुःखी कुमुदिनी मञ्जु पटक- पटक मुर्छा पर्छे ।

---

<sup>४१</sup> पूर्ववत्, २०५९, पृष्ठ, २१ ।

दिनेश मलाई पग्लि नसम्भ म पागल होइन, सत्य सत्य हैन । म त तिमीसँग जीवनभरी सँगै जिउन पाउँछु भनेर यो पत्र लेखेकी हुँ ।

तिम्रो हृदयको भयाल ढोका घच्चचाउन सफल भएकी छु । सफल बनेकी छु, एक याचक भनेर दिनेश यो माया भनेको जन्म-जन्मसम्मको लागि अंशवण्डा नहुने माया गास्दै छु, एउटा मायाको फूलको गुच्छा भनेर अवश्य प्रेममय प्यार पाउ । तिमीसँगै जीउने बाचासँगै भरे वा भोली दुवै एकैसाथ बसेर मनका बह भनुँला यो मेरो कल्पना शमीरमा नबिलाओस् ।<sup>४२</sup>

यसरी उपन्यासमा मञ्जुको सम्पूर्ण व्यवहारलाई हेर्दा ऊ सत् पात्र हो । उपन्यासको मूल कथ्य विषयमा सुरुदेखि अन्त्यसम्म महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेकाले बद्ध पात्रका रूपमा उपस्थित छ । मञ्जुका यी विविध कार्यको मूल्याङ्कन गर्दा ऊ गतिशील पात्र हो । आकर्षक चेहरा, जीउडाल भएकी, सामान्य लेखपढ भएकी साक्षर, भावनामा बग्ने, अरूको कुरा सुन्ने, शंकालु, धैर्य गर्न नसक्ने मञ्जीय पात्र हो ।

### ५.३.२ सहायक पात्रहरू

#### (क) बाजेबोजू

बाजेबोजू आवेग उपन्यासका प्रमुख सहायक पात्र हुन् । उनीहरू पाँचथर जिल्लाको भालुचोक भन्ने ठाउँमा बस्छन् । उनीहरूका छोराछोरी कोही पनि छैनन् । उनीहरू एक अनाथ टुहुरी मञ्जुलाई सहायता दिई आफ्नो उत्तराधिकारी सम्भन्ने एक परोपकारी पात्र हुन् । मञ्जुको दिनेशसँगको माया प्रितिलाई तोड्नेभन्दा पनि जोड्ने पक्षमा देखिएका सत् पात्र हुन् । “एकदिन खाना खाने बेलामा मञ्जुले बाजेबोजूलाई खाना दिएर आफु चाँही नखाई बसिरहेकी थिई । बोजुले खा तँ पनि किन नखाकि भनि प्रश्न गर्दा धेरैबेर पश्चात् मञ्जुले एकछिनमा खान्छु नी भन्दछे । बाजेबोजूले फिदिमबाट ल्याएको सुकुटी मासु थियो, त्यही सुकुटी पकाएकी थिई मञ्जुले । तिहुन भने पनि तरकारी, अचार भने पनि एउटै सुकुटी थियो खानामा । मञ्जुले दिनेशलाई पनि त्यही

<sup>४२</sup> पूर्ववत्, २०५९, पृष्ठ, १५ ।

खाना खाई । जब दिनेशले खाना खान थाल्यो अनि मात्र मञ्जु बसी खान । यस कुरालाई बाजेबोजूहरू ठट्ट्यौली पारामा मुखामुख गर्दै यसो भन्छन्-हाम्रो छोरीले ज्वाइँ त यहि छानी सकेकी जस्तो छ ।”३९यसरी मञ्जु र दिनेशको सुन्दर प्रेमलाई विवाहमा परिणत गराउन चाहने उनीहरू अनुकूल चरित्र हुन् । किशोर अवस्थाका मञ्जु र दिनेशलाई सहि मार्गदर्शन गराउने सत् पात्रका रूपमा उपस्थित भएका छन् । बाजेबोजू दिनेश र मञ्जुको सुन्दर जोडीलाई स्वागत गर्ने हस्यौली ठट्ट्यौली गर्न पनि पछि नहट्ने पात्र हुन् ।

### (ख) तुलसा

तुलसा यस आवेग उपन्यासकी एक सहयोगी सत् नारी पात्र हो । उसको घर पाँचथर भालुचोक-२ हो । तुलसा हँसिलो, बोलक्कड स्वभावकी छे । तुलसा मञ्जु र दिनेशको प्रेम जीवनलाई सहजता प्रदान गर्न महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गर्ने निर्दोष चरित्र हो । उसले मञ्जु र दिनेशको चिठी आदान प्रदान गर्ने, डुल्ल, घुम्न जाँदा साथी बनिदिने, सुख दुःखमा साथ दिने तथा हाट बजार जाँदा पनि सँगै जाने जस्ता सहयोगी र भरपर्दो साथीको रूपमा काम गरेको देखिन्छ ।

### (ग) दिलसा

दिलसा यस आवेग उपन्यासकी एक सहयोगी सत् नारी पात्र हो । उसको घर पनि भालुचोक -२, पाँचथर नै हो । ऊ रञ्जन र रञ्जनाकी छोरी हो । ऊ मञ्जुकी बालसखा पात्र हो । ऊ मञ्जुसँगै हाटबजार, मेलापात जाने निर्दोष र चञ्चल प्रकृतिकी यस उपन्यासकी नारी पात्र हो ।

### (घ) रञ्जन

रञ्जनको घर भालुचोक-२, पाँचथर हो । उ रञ्जनाको श्रीमान तथा दिलसाको बुबा हो । रञ्जन यस उपन्यासको एक सत् परुष पात्र हो । ऊ यस उपन्यासको कथानकसँग सकारात्मक, नायक नायिकाको भलो चिन्ताउने अनुकूल पात्र हो । रञ्जन सडकमा काम गर्ने कामदार एवं निर्दोष सहयोगी पात्र हो । ऊ हँसिलो स्वभावको छ ।

रञ्जनलाई दिनेशले एक कुशल भिनाजु मानेको छ । उसको सडकमा काम गर्दागर्दै टुङ्गाले थिचेर अकालमा मृत्यु भएको छ । यो दुर्घटना उपन्यासलाई दुःखान्त बनाउने एक कारक पनि हो ।

#### (ड) रञ्जना

रञ्जना यस उपन्यासकी एक सत् स्त्री पात्र हो । रञ्जनकी श्रीमती, दिलसाकी आमा तथा नायक दिनेशलाई भाइटीका लगाइ भाइवरण गर्ने दिदीको रूपमा रहेको देखिन्छे । दिनेशलाई माया ममता दिने, सधैं भलो चिताउने सकारात्मक पात्र हो । ऊ रञ्जनको मृत्युपछि भाइ मानेको दिनेशसँग माइत गएकी छे । यहि क्रममा लिलाले षडयन्त्र गरी मञ्जुलाई दिनेश र रञ्जनाको सम्बन्ध देखाउँदै मञ्जु र दिनेशको सुन्दर सपना भताभुङ्ग पारेको छ । यसरी यस उपन्यासमा रञ्जना एक निर्दोष पात्रलाई असत् पात्रले दोषी बनाई उपन्यास दुःखान्तमा ल्याएर टुङ्गाइएको छ ।

#### (च) रामु

रामु यस उपन्यासको सहायक सत् पात्र हो । लिङ्गका आधारमा ऊ पुरुष पात्र हो । ऊ दिनेशको सुख दुःखको साथी हो । रामु निम्न वर्गको ग्रामीण क्षेत्रमा बसोबास गर्ने युवक हो । ऊ बिहान बेलुकाको हात मुख जोर्न ल्याइवामा काम गर्न आएको हुन्छ । दिनेशको परिवारलाई पहिरोले लगेपछि बाटो खन्दा परिचित रामु दिनेशको अविश्रमणीय पात्र हो । लामो समयसम्म छुट्टिदा दुबैलाई असजिलो महसुस भएको छ । लामो समय पश्चात भेट हुँदा दुबै एक अर्कामा अँगालो मारेर रुँदा टुक्रिएको मुटु जोडिए भै भएको देखिन्छ । रामु निःस्वार्थी, अनुकूल, परोपकारी, विश्वासिलो पात्रका रूपमा उपस्थित भएको देखिन्छ । रामुले तल्लो वर्गको शोषित पीडित नेपाली ग्रामीण जनताको प्रतिनिधित्व गरेको छ ।

#### (छ) लिला

लिला यस उपन्यासको सहायक पात्र हो । असत् प्रवृत्तिको लिला यस उपन्यासको गुप्त खलनायक हो । उसको शारीरिक तथा वाह्य व्यक्तित्व दिनेशका

माध्यमबाट यसरी बताइएको छ – “सेतो सेतो कालो कालो अग्लोभन्दा अग्लो पनि होइन होचो पनि होइन ठिक्कको व्यक्ति दिनेशको अगाडी ठिङ्ग उभियो । दिनेश सोच्छ निकै सत् व्यक्ति हो यो ।”<sup>४३</sup> यस उपन्यासमा लिला दिनेशको साथीको रूपमा देखा परेको छ । ऊ कुराले ठिक्क पार्ने भित्रभित्रै मुर्मुरिएर बस्ने, दिनेश र मञ्जुको प्रेममा इर्ष्याले जल्ने स्वार्थी पात्र हो । ऊ अरूको ववार्दिमा रमाउने दुष्ट पात्र हो । साथीहरूसँग हिड्ने, राम्ररी नखुल्ने, विचार आदान प्रदान नगर्ने, भित्रभित्रै अरूको कुभलो चाहने, गल्ती नै नगरी दण्ड दिन चाहने लिला एक कुख्यात बदमास, फटाहा पात्रको रूपमा देखा परेको छ । लिलाकै कारण मञ्जु र दिनेशको सुन्दर जीवन भताभुङ्ग भएको छ । मञ्जुलाई मरणका लागि उकास्ने र दिनेशको जीवन ववार्द पार्ने कार्यका आधारमा ऊ महाअपराधी पात्रका रूपमा रहेको छ ।

### ५.३.३ गौण पात्रहरू

आवेग उपन्यास एक बहुपात्रिय उपन्यास हो । उपन्यासमा चर्चामा आएका तर प्रत्यक्ष रूपमा देखा नपर्ने पात्रलाई गौण पात्रका रूपमा लिइएको छ । यस उपन्यासमा गौण पात्रहरू पनि सशक्त छन् । दिनेशका बुबा, आमा, दिदी, दाजु, शोभा, मञ्जुका बुबा, आमा, बैकुण्ठे साहु, बैकुण्ठे साहुको छोरो गरी १० जना तथा बैकुण्ठे साहुका मतियारहरू र छिमेकीहरू गौण पात्रका रूपमा आएका छन् । दिनेशका बुबा, आमा, दिदी, दाजु, मञ्जुका बुबा, आमा, शोभा तथा छिमेकीहरू यस उपन्यासका सत् पात्र हुन् । निर्दोष शोभा तथा दिनेशका बुबा, आमा, दिदी र दाजु बैकुण्ठे साहुको मनपरि सहन बाध्य छन् । छिमेकीहरू पनि बैकुण्ठे साहुको अन्याय सहन विवश कमजोर पात्र हुन् ।

शोभा उपन्यासमा बारम्बार चर्चामा आउने सत् पात्र हो । दिनेशलाई माया गर्ने, ल्याइबामा बाटो खन्दा हरेक कुरामा साथ दिने शोभा रामुका लागि भाग्य निर्माता समेत हो । उसले रामुको ववार्द भएको घर जग्गालाई हडकडबाट पैसा पठाई उकासी

<sup>४३</sup> पूर्ववत्, २०५९, पृष्ठ, १ ।

दिने काम गरेकी छे । शोभा यस उपन्यासमा निस्वार्थी, समाजसेवी भावना भएकी, अरूको मर्म बुझ्ने, सहयोगी नारी पात्र मान्न सकिन्छ ।

बैकुण्ठे साहु, बैकुण्ठे साहुको छोरो र उसका मतियारहरू यस उपन्यासका गौण असत् पात्र हुन । अरूलाई थिचोमिचो तथा अन्याय गर्ने, अरूको मर्म नबुझ्ने, अरूलाई दुःख दिने, शोषण तथा सामन्ती दलका पात्रका रूपमा रहेका छन् । उनीहरू अर्कालाई दःख दिएर आनन्द लिन्छन् । यी पात्रहरू हाम्रो समाजमा रहेका शोषक, सामन्तहरूको प्रतिनिधी पात्र हुन् ।

#### ५.४ तालिकामा प्रस्तुत निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरूको चरित्र विश्लेषण

प्रस्तुत निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा औपन्यासिक कार्यगत भूमिकाका आधारमा हेर्दा २० जना पात्रहरू लगायत पुलिसहरू १५-१६ जना, दिलमानका भरौटेहरू रहेका छन् । जसमा १३ जना र दिनमानका भरौटेहरू, १५-१६ जना पुलिसहरू पुरुष पात्रहरूका रूपमा रहेका छन् भने ७ जना नारी पात्रहरू रहेका छन् । यस उपन्यासमा प्रमुख पात्र २ जना रहेका छन् । ७ जना सहायक पात्र र अन्य सबै पात्रहरू गौण रहेका छन् । सहायक पात्र दिलमान तथा गौण पात्रहरू दिलमानका भरौटेहरू, गुईठे, जुठे, सुठे, सुईठे आदि अरूलाई थिचोमिचो गर्ने, सामन्ति असत् पात्र हुन् भने अन्य सबै पात्रहरू सत्, निस्वार्थी, निर्दोष तथा आदर्श पात्रहरू हुन् । पात्र संख्याका दृष्टिले निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासलाई बहुपात्रीय उपन्यास भन्नु पर्ने हुन्छ । यस उपन्यासमा स्थिर र गतिशील गरी दुई किसिमका पात्रहरू समाविष्ट रहेका छन् । जसले मानव समाजका यथार्थ मानवीय पात्रको प्रतिनिधित्व गरेको छ । तहगत रूपमा हेर्दा मुख्य, सहायक र गौण गरी तीनै तहका पात्रहरू पाउन सकिन्छ । उपन्यासमा प्रयोग भएका प्रमुख र सहायक पात्र मञ्चीय छन् भने गौण पात्रहरू नेपथ्यीय छन् । सविन र अर्चनाले निर्दोष कैदीको छुटकाराका लागि गरेको काम कर्तव्यलाई कथानक बनाइएको यस निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासमा सविन र अर्चना प्रमुख पात्र रहेका छन् । त्यसैगरी नीता, वीरमान, वीरमानको बाबा, अर्चना (सविनकी

बहिनी), सन्देश, भोटु, दिलमान आदि सहायक पात्र हुन भने दिलराज, मनराज बाजे, कान्छी, गुइँठे, माने, युवती, एम्बुलेन्स ड्राइभर, दिलमानका मतियारहरू, पुलिसहरू आदि गौण पात्रहरू हुन् । भूमिकाको आधारमा पात्रहरूको चर्चा निम्न अनुसार गरिएको छ ।

#### ५.४.१ प्रमुख पात्र

##### (क) सविन

कृतिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा सविनको उपस्थिति अन्य पात्रको तुलनामा अधिक नै देखा पर्दछ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उसको भूमिका कथानकको विकाससँगै जोडिएर आएको छ । यसरी कृतिगत कार्यका दृष्टिले उपन्यासमा सविनले गरेको कार्य अन्य पात्रहरूको भन्दा बढी महत्वपूर्ण र निर्णायक पनि छ । उसकै कार्यश्रृंखलासँग अन्य पात्रहरूको कार्य पनि जोडिएको हुँदा यस उपन्यासमा सविन नै केन्द्रिय पात्रको रूपमा देखा परेको छ । उसकै चरित्रगत केन्द्रियतामा निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यासको सुरुवात र अन्त्य भएको हुँदा पनि सविनलाई यस उपन्यासको मूल पात्रको श्रेणीभित्र राख्न सकिन्छ ।

लिङ्गका आधारमा सविन पुरुष पात्र हो । सविन नामैले पनि पुरुष जनाउँछ । यस उपन्यासमा सविन निताको जेठो छोरा हो । ऊ एक मध्यम वर्गीय परिवारमा हुर्केको हुन्छ । सविनको बाबु रिटायर्ड लाहुरे हो । उसको घरमा बुबा, आमा, भाई वीरमान, बहिनी अर्चना, छोरा मानेको भोटु र सविन गरी जम्मा पाँच जनाको एक सानो सुखी परिवार भए पनि उसले उपन्यासभरी गरिवी, दुःख, अन्याय, शोषण, मानसिक कुण्ठा र बदलाको भावनाबाट पिरोलिनु परेको छ । ऊ स्वयम् लाहुरे भएर पनि समाजमा लाहुरेको जुन स्थान छ ऊ त्यहाँ पुग्न सकेको छैन । पेन्सन प्राप्त बाबु बेपत्ता भएपछि यस परिवारको मुख्य आर्थिक स्रोत नै सुक्छ । भाई पनि बेपत्ता भएपछि सविनको साथ पनि टुट्छ । बेपत्ता बुबा र भाइको खोजी गर्ने दायित्व उसको काँधमा आउँछ । साहुको ऋण तिर्न नसक्दा घर जग्गा नै साहुको कब्जामा पर्दछ । ऋण तिरी घर जग्गा निखन्ने विचारले भोटु र सविन दुबै जना लाहुर जान्छन् । लाहुरबाट पैसा

लिएर फर्किदा घर अस्तव्यस्त पाउँछ । आमा र बहिनी बसाइँ सरेको कुरा त्यहाँ पुग्दा मात्र थाहा पाउँछ । सविनले अब बेपत्ता बुबा, भाइ, आमा र बहिनी सबैको खोजी गर्नुपर्ने अवस्था आएको देखिन्छ । सविन आफ्नो नाम परिवर्तन गरी विभिन्न ठाउँहरू चार्हाछ । त्यस समयमा उसले जिन्दगीका विभिन्न आरोह अवरोह पार गर्दछ । ऊ विर्तामोड गई खाते जस्तो भएर सडकमा हिड्छ । घरको पेट्टी तथा सडक पेट्टीतिर सुत्छ । यस्तो अवस्थामा सविनलाई सन्देशले भेट्छ र घरमा लिएर जान्छ । सविन सन्देशको विश्वास पात्र बनी गाडीचालक बनेर दिलमान, बुबा र वीरमानको पत्तो लगाउँछ । त्यस समयमा उसले दिलमानको काम धन्दा पनि पत्ता लगाउँछ । भाइ वीरमानसँग भेट हुँदा दाइ सविनमाथि दुर्व्यवहार गर्छ । उक्त दुर्व्यवहार सहेर पनि सविनले आमा र बहिनी पनि पत्ता लगाउँछ । सविनले कसैको साथ पाएको छैन । ऊ सधैं एकलो देखिन्छ । उसकी प्रेमीका अर्चनाले मात्र अप्रत्यक्ष रूपमा सधैं साथ दिइरहेकी हुन्छे । ऊ हरेक कारणवश जेलमा पर्छ । अर्चनाको एकलो प्रयास भएपछि जेलबाट मुक्ति पाएको छ ।

चरित्रगत प्रवृत्तिका दृष्टिले सविन अनुकूल पात्र हो । घर परिवारलाई सम्हाल्नु, सबै घरव्यवहार सम्हाल्नु, समाजमा कसैलाई थिचोमिचो गर्नुहुँदैन भन्ने भावना हुनु, भोटुको नागरिकता नहुनु र भोटुलाई आफ्नो भाइ वीरमानको नागरिकता दिएर इन्डियन लाहुरे बनाउनु, अन्यायको विरुद्धमा ज्यानै दिएर लड्नु र दोषीलाई कानुनको कठघारामा उभ्याएर निर्दोषीलाई न्याय दिलाउने एक साहसी पात्र पनि हो । सविन एक कुशल प्रेमी पनि हो । उसले मामाघर माखुजा जाँदा अर्चनासँग प्रेम सम्बन्ध गाँसेको छ । उसले अर्चनाको प्रेम प्रस्तावलाई सम्झाई बुझाई गरेर मात्रै स्विकारेको छ । जुन सविन र अर्चनाको वार्तालापद्वारा स्पष्ट भएको छ :

हेर अर्चना म गरिब छु, अनि गरिब चाहान्छु तर आत्मा गरिब चाहन्न मेरो लागि अहिले त्यस्तो कुरा सोचन सकिदैन ।

बिचैमा अर्चना बोल्छे, सविन कृपया म तपाईंलाई माया गर्न थालिसँके र म तपाईंलाई माया गर्छु ।

हेर अर्चना ! तिमी सानै छौ, कस्तो कुरा गरेकी .....

सविन सम्झाउँछ .....

हेर्नुहोस व्यवहारमा सानो ठुलो कहिल्यै हुदैन अनि म पनि सानी छैन । देख्नु भो म होची छु ।

हेर अर्चना म गरिब छु अनि गरिब चाहन्छु .....

आखिर गरिब भए भए .....तर मेरो बाबा पनि हुनुहुन्न, त्यसैले म यस्तो कुरा चाहान्न ।

सविन के माया गर्नेलाई माया दिनु पाप हो ? यदि माया गर्नेलाई माया नदिनु धर्म हो ?' हो भने भन्नुहोस् .....

अर्चना म माया गर्दिन भनेको होइन .....तर .....

तर के सविन अर्चना बोल्छे ।

हेर्नुहोस्, सविन तपाईंको त बाबा मात्र हुनुहुन्न रहेछ । मेरो न त बाबा आमा न कोहि आफन्त.....। मलाई माया नगर्नुहोस् सविन जानुहोस् .....आज मलाई थाहा भयो मेरो जीन्दगी एउटा एकलो जीवन कैदी रहेछ.....जहाँ वन पाखा र हरियो चउरसँग लुकामारी खेल्ने त्यो भन्दा टाढा त मेरो बालुवाको घर रहेछ.....भन्दै घोप्टो परेर रोई अर्चना.....।

यो शब्दले सविनको भित्री आत्मा रोएछ ऊ पनि रुन थाल्यो कता कता अर्चनाप्रति माया अङ्कुराउन थाल्यो.....। अर्चना बोल्छे “सविन यो संसारमा हाँस्दा पो सबैसामु हाँस्न सकिन्छ, रुँदा त केवल एकलै, तर तपाईं किन रुनु भएको ? हाँस्नुहोस् खित्का छोडेर ।

अर्चना त्यसो नभन अर्चना म पनि तिमीलाई माया गर्छु भन्दै दुबै अंगालोमा बाँधिए ।<sup>४४</sup>

यसरी उसको कार्यको आधारमा मूल्याङ्कन गर्दा गतिशील पात्र हो । दिलमानको बदला लिन खोज्ने सविन एक वर्गीय पात्र हो । उपन्यासको सम्पूर्ण कथावस्तु उसकै आधारले अधि बढेको हुनाले ऊ मञ्चीय पुरुष पात्र हो । उपन्यासबाट छुटाउन नमिल्ने भएकाले बद्ध पात्रका रूपमा प्रस्तुत भएको छ । यस उपन्यासमा सविनको भूमिका ज्यादै महत्वपूर्ण रहेको छ ।

### (ख) अर्चना

कृतिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा सविनपछि दोश्रो स्थानमा अर्चनाको नाम आउँछ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उनको भूमिका कथानकको विकाससँगै प्रत्यक्ष रूपले सविनसँग जोडिएर आएको छ । यसर्थ अर्चनालाई पनि यस उपन्यासको मूल पात्र अन्तर्गत राख्न सकिन्छ ।

अर्चना नामैले पनि स्त्री पात्र हुन् भन्ने कुरा प्रष्ट हुन्छ । यस उपन्यासमा देखा परेकी अर्चना दिलमानकी जेठी श्रीमतीपट्टीकी छोरी हो । सविनकी सुरुमा प्रेमिका र अन्त्यमा विवाहिता पत्नीका रूपमा अर्चनाको उपस्थिति भएको छ । अर्चना आफ्नो आमाको मृत्युपश्चात मावलमा बस्दै आएकी छे । उसको बाह्य व्यक्तित्वको परिचयको क्रममा सविनको विचारलाई वा कुरालाई यसरी अधि सार्न सकिन्छ –

“कलेटी परेका ओठ, बदामी लजालु आँखा, लज्जालु स्वभाव, मधुर बोलीमा जादु, हरेक हेराइमा मोहनी त्यसै त्यसै लट्ट पार्ने सविनलाई त्यसै त्यसै सोचन बाध्य तुल्यायो ।”<sup>४५</sup> अर्चनाको शारीरिक अवस्था पनि परिपक्व नै रहेको देखिन्छ । जसका कारण सविन अर्चनाप्रति विकर्षित नभई आकर्षित भएको देखिन्छ । जुन कुरा सविनले घाँस काट्न जाँदा यसरी कल्पना गरेको छ, साच्चै अमिसारीकाको रूप रङ्ग कति राम्रो ईश्वरले पनि तिमीलाई साह्रै फुर्सदको समयमा बनाएको रहेछ, भन्दै सोच्छ । ऊ

<sup>४४</sup> के.पि. राई, निर्दोष कैदीको रहस्य, शुसिल स्क्रिन प्रिन्टिन प्रेस, भापा, २०६१, पृष्ठ, १८ ।

<sup>४५</sup> पूर्ववत् २०६१, पृष्ठ, १७ ।

सानैदेखि अन्याय, अत्याचार र दमनको विरुद्धमा लाग्छे । विद्रोही स्वभावकी अर्चना गरिब, निमुखा, सोझा, सज्जन जनताप्रति सहानुभूति व्यक्त गर्दै सहयोग गर्छे । एक राती निताका घरमा अपरिचित युवतीका रूपमा आउँछे । निताले छोरी चेली एकलै यसरी रातीको समयमा हिड्नु हुदैन । फेरि यो राक्षसको गाउँ हो यदि त्यो राक्षसले भेटेको भए तिम्रो शरीर क्षत विक्षत बनाउँथ्यो भनि एकलै नहिड्न आग्रह गर्छिन । त्यो युवती (अर्चना) भन्छे— हेर्नुहोस ! आमा त्यस्तो राक्षसलाई मार्न भनि हिडेकी हुँ म भनि टाउकोमा बाँधि रहेको गाम्चा फुकाएर एउटा लामो छुरी निकाली मलाई थाहा छ आमा यो गाउँमा कसले कसरी दुःख दिन्छ र कसलाई राक्षस भनिन्छ , उसैलाई आज अन्तिम टिकट कटाउन आएकी हुँ मलाई आशिर्वाद दिनुहोस् भन्छे । निताका सबै दुखेसा, गुनासाहरू भन्न लगाई सुन्छे । छोरा छोरी सबै सोध्छे र त्यही मध्यरातमा त्यो युवती बाहिरिन्छे । ऊ आफ्नो बाबु (दिलमान) को विद्रोही बनेर कारबाही समेत गर्न पछि हट्दैन । अर्चनाले नीता र उनकी छोरी अर्चनाको पनि इज्जत तथा अस्तित्व जोगाई दिएकी छिन् । जुन कुरा यसरी प्रष्ट भएको छ – समय रातको दश एघार बजेको थियो । अर्चना गुन्डी ओछ्याएर पढ्दै थिई भने आमा चाँही भित्तातिर फर्केर निदाइ रहेकी थिइन ।

अचानक बाहिरबाट ढोका ढकढकिन्छ, अर्चना उठेर एक हातमा कुपी बोकेर ढोका खोल्छे ...। बाहिर एक जना अर्धबैसे लोग्नेमान्छे भित्र पस्छ । धारिलो खुकुरी हातमा बोकेको मुखमा पट्टि बाँधेर.....। अर्चना अडिई । ममि म ..मी.....! त्यस अज्ञात मान्छेले अर्चनाको मुख थुनिदियो र बत्ती निभायो । फेरि एउटा चर्को स्वर निकालेर कराई अर्चना...। आमा ब्युभिन् छोरी स्वाँ-स्वाँ गर्दै थिई .....आमाले अगुल्टो भिकिन र त्यहि अगुल्टाले हिकार्इन् । त्यसपछि त्यो मान्छे अर्चनाकी आमातिर अघि बढिरहेको थियो...अर्चना बचाउ भनि कराइरहेकी थिई, त्यतिकैमा एक जना अज्ञात स्त्री (अर्चना) प्रवेश गरी टर्चलाइट बाली, लाइट बाल्न साथ त्यो कुख्यात अपराधी लोग्ने माल्छे भाग्नको लागि ढोका तर्फ बढ्यो .....त्यतिकैमा....त्यस स्त्री युवतीले खुकुरी प्रहार गरी टाउकोमा प्रहार गरेको खुकुरी त्यस अपराधीको देब्रे हातमा लाग्यो

त्यहि भूईमा खस्यो.....तर मान्छे फरार भयो ।<sup>४६</sup> ती युवतीले त्यो भूईमा खसेको हात नीतालाई राख्न दिइन । निताले राख्न नमान्दा ती युवतीले सम्झाउदै भनिन—“यो उसको पाप र अपराधको चिनो हो, त्यसैले कुनै दिन समाजको कानूनको अगाडि जिम्मा दिनुपर्छ ।”<sup>४७</sup> भनि त्यहाँबाट अर्चना बाटो लाग्छन् ।

समय बित्दै जान्छ । एक दिन ती युवती नीताको घरमा आई नीता र अर्चनालाई नासोको रूपमा राख्न दिएको अपराधीको छिनेको हात लिएर लिएर आउनु भन्दै एउटा ठेगाना दिन्छे । अर्चनाले दिएको उक्त ठेगानामा आमा छोरी समयमा नै पुग्छन् । केही समयपछि अर्चना आइपुग्छे । दाजु इन्स्पेक्टरलाई नीताको परिवारलाई न्याय दिलाउन आग्रह गर्छे । कैद गरिएका कति कैदीहरू निर्दोष छन् । उनीहरूको रहस्य बुझेर निकालियोस् र स्वतन्त्र जीवनको लागि एउटा निर्दोष कैदीको रहस्य उपनाम दिनुपर्छ भन्ने अर्चनाको मान्यता रहेको छ । दोषी र निर्दोषी छुट्याउने क्रममा नीताको परिवार निर्दोष र दिलमान दोषी ठहर्छ । दिलमान दोषी नै हो भनि सावित हुन्छ । उसको देब्रे हात हुदैन तर पनि दिलमान आफु दोषी भएको स्विकार्दैन । अर्चनाले दिलमानको सुकेको देब्रे हात उपहार स्वरूप भनि दिन्छे र दिलमान अपराधी ठहरिन्छ । सविनको बाबा र वीरमान दिलमानको पञ्जाबाट मुक्त हुन्छन् । सविन पनि निर्दोष हुन्छ र जेलमुक्त हुन्छ । दिलमान जेल जान्छ । सविन जेल मुक्त भएपछि सविन र अर्चनाको प्रेम नितालाई थाहा हुन्छ । कारागार अगाडि दिलमानको सामु सविनले अर्चनालाई सिउँदोमा सिन्दुर लगाइदिन्छ । अर्चनाको दाजु इन्स्पेक्टर सन्देशले पनि बहिनी ज्वाई ग्रहण गरी गरी आशिर्वाद दिन्छ ।

यसरी अर्चनाले अन्यायको विरुद्ध ठूलो संघर्ष गरेकी छे । ऊ एक साहसी तथा दृढ विश्वास भएकी नारी पात्र हो । ऊ बाबुको विद्रोही बनेर बाबुलाई कारवाही गर्न समेत पछि परेकी छैन । नीता उनकी छोरी अर्चनाको अस्तित्व बाचाइदिने तथा नीता र उनकी छोरीलाई न्याय दिलाईदिने अनुकूल पात्र हो । सविनलाई हृदयदेखि माया गर्ने अर्चना लामो समयको विछोडमा कति पनि विचलित नभई एकनासको भूमिका निर्वाह

<sup>४६</sup> पूर्ववत् २०६१, पृष्ठ, २५ ।

<sup>४७</sup> पूर्ववत् २०६१, पृष्ठ, ३६ ।

गर्ने स्थिर चरित्र हो । आफ्नो बाबुको शोषक सामन्ती चरित्रको विरुद्धमा सुरुदेखि अन्त्यसम्म सक्रिय रही शोषित, पीडीत नीताको परिवारलाई न्याय दिलाई आफ्नो प्रेमी सविनलाई प्राप्त गरेर छोडेकी छे । उपन्यासमा उसको अत्यन्त ठूलो भूमिका रहेको छ । त्यसकारण ऊ यस उपन्यासकी प्रमुख, सत्, बद्ध र मञ्चीय पात्र हो ।

#### ५.४.२ सहायक पात्र

##### (क) नीता

कृतिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा हेर्दा उपन्यासमा नीताको उपस्थिति पनि महत्वपूर्ण देखिन्छ । औपन्यासिक कार्य श्रृङ्खलाका आधारमा हेर्दा उपन्यासका नायक नायिकासँग नीताको कार्यगत भूमिका अप्रत्यक्ष रूपमा सम्बन्धित रहेको पाउन सकिन्छ । तसर्थ नीतालाई यस उपन्यासमा सहायक पात्रको रूपमा लिएर चरित्र विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

एक साधारण इन्डियन लाहुरेकी श्रीमती, सविन, वीरमान, अर्चना तथा पालिएको केटा भोटुकी आमाका रूपमा परिचित रहेकी नीता यस उपन्यासकी एक सक्रिय सहायक पात्र हो । उनी पति लाहुरबाट आएपछि केही समय छोराछारी सहित मधेशतिर बसेको पाइन्छ । केहि समयको अन्तरालपछि फेरि पहाड नै आएर केही समय सपरिवार सुखले बाँचेको पाइन्छ । साहुको कुदृष्टि परि उनका श्रीमान अपहरणमा पर्दछन् । श्रीमान सहित उनको पेन्सन पनि अपहरणमा पर्दा नीतालाई अत्यन्तै दुःख परेको देखिन्छ । पतिको बेपत्ताको पिर हुँदाहुँदै उनलाई छोरा वीरमानको पनि बेपत्ताको व्यथा थपिएको छ । उनी सत्य न्यायमा विश्वास गर्ने, छोरा सविनलाई अन्याय नगर्न र नसहन प्रेरणा दिने एक सत् पात्र हो भन्ने कुरा सविनलाई आमाले सम्झाउने क्रममा यसरी भनेकी छिन्— “गरीब र निमुखाहरूको खून र पसिना तैले कहिल्यै चुस्ने छैनस, साँचो र सत्य कुराको चाबी बोक्नेछस, सबभन्दा राम्रो फुल हो ।”<sup>४५</sup> उनले छोराहरू र पति नभएका बेला राक्षसी प्रवृत्तिको दिलमानबाट धेरै गाली र बेइज्जति खप्नुपरेको देखिन्छ । दिलमानले हप्काई धप्काई गरेर सबै घर जग्गा पनि

<sup>४५</sup> पूर्ववत् २०६१, पृष्ठ, ४६ ।

हडपेको छ । साहुले जग्गा हडपेको एक दुई वर्षपछि नीता त्यहाँबाट अर्को ठाउँमा कसैले थाहा नपाइ अलि सुरक्षित ठाउँमा बसाइँ सरेकी छिन् । आफ्नो हैसियत सानो भएकाले ठूलाबडासँग सिगौरि खेलनु हुँदैन भन्ने मान्यता उनीमा रहेको छ । अत्यन्तै दुःख सहेर छोराछोरी हुर्काएकी, छोरालाई र भोटुलाई धन कमाउन लाहुर पठाएकी नीता दिलमानको बलात्कारको सिकार बन्न पुगिछन् तर अर्चनाको सहयोगमा आफ्नो अस्मिता बचाउन सफल भएकी छिन् । आफुले जति दुःख सहेर पनि अनाथ भोटुप्रति आमाको माया ममता दर्साउने नीता आफ्नो छोराको नागरिकता दिई लाहुर पठाउँछिन् ।

यस प्रकार नीता यस उपन्यासमा सहनशील, धैर्य, दृढ, आत्मविश्वासी, दयाकी खानी, असल आमाका रूपमा परिचित पात्र हुन् । स्वभावका आधारमा स्थिर तथा प्रवृत्तिका आधारमा अनुकूल पात्र हो ।

#### (ख) अर्चना (सविनकी बहिनी)

अर्चना यस उपन्यासको नायक सविनकी बहिनी हो । ऊ नीताकी छोरी एवं बाल पात्र हो । उसमा बाबाप्रतिको जिज्ञासा अबोध अवस्थादेखि नै देखिन्छ । उनी बाबाको फोटो हेर्दै यो फोटो कसको हो भनि प्रश्न गर्छिन् । अर्चना दोहाय्याइ-दोहोय्याइ ममिलाई तोते बोलीबाट सोधिरहने स्वभावकी छे । निद्राबाट व्युक्तिँदा पनि बाबा आइपुग्नु भयो, भन्दै व्युक्तिने अर्चना बाबाको पर्खाइमा बसेकी देखिन्छ । अर्चना सविन लाहुर गएदेखि आमासँगै बसी हरेक दुःख कष्ट खप्दै आएकी एक सामान्य बाल पात्र हो । ऊ सानैदेखि अत्यन्त जिज्ञासु स्वभाव भएकी सत् पात्र हो । स्वभावका आधारमा ऊ स्थिर एवं अनुकूल पात्र हो ।

#### (ग) बाबा

बाबा नायक सविन, वीरमान र अर्चनाको बाबा हो भने नीताको पति हो । ऊ यस उपन्यासको कम सक्रिय पुरुष पात्र हो । ऊ पेन्सन प्राप्त लाहुरे भइकनपनि दिलमानको कब्जाबाट उम्कन नसक्ने एक निरिह पात्र हो । उसमा घर परिवारको कुनै चिन्ता पनि रहेको देखिँदैन । अरूको बहकाउमा लागेर घर परिवार नै विसर्ने ऊ एक

कमजोर चरित्र हो । ऋण तिर्न नसकेपछि, पेन्सन नै अरुलाई बुझाउने, घर परिवार बिसने, आफुमाथीको अन्याय विरुद्ध आवाज निकाल्न नसक्ने ऊ स्थिर पात्र हो । त्यसकारण उसले जीवनभरि निर्दोष कैदीको रूपमा बस्नु परेकाले उसको जीवन दयनीय देखिन्छ । ऊ अरूको सहयोगबाट बाहिर निस्कन सफल भएको पात्र हो । यसरी बाबा यस उपन्यासको स्थिर, कमजोर मानसिकता भएको, न्याय अन्याय छुट्याउन नसक्ने निरिह पात्रका रूपमा उपस्थित भएको देखिन्छ ।

### (घ) वीरमान

वीरमान यस उपन्यासको नायक सविनको भाइ र अर्चनाको दाई तथा नीताको कान्छो छोरा समेत हो । ऊ दिनमानको लहैलहैमा लागि मधेश जान्छ । जुन कुरा घरमा कसैलाई पनि भन्दैन । आफ्नो घर, आमा, दाइ र बहिनीको वास्ता नै नगरी वीरमान दिलमानको भरौटे बनि कुकार्यमा संलग्न हुन्छ । चोरी, डकैती, गुण्डागर्दी, हत्या, बलात्कार, अबैध सामानहरूको कारोबार जस्तै: चरेस, गाँजा, मानव खप्पर आदि कार्यमा लागेको हुन्छ । वीरमान आफ्नो दाइ सविनलाई भेट्दा मरणासन्न हुने गरी पिट्छ । सविनले आफु वीरमानको दाजु भएको बताई अनेक अनुनय विनय गरी सम्झाउँदा पनि सच्चा देशभक्त भएको दर्शाउँछ । उपन्यासको अन्त्यतिर ऊ पनि निर्दोष कैदीको रूपमा रहेको पाईन्छ । उपन्यासको अन्त्यमा नायिका अर्चनाले दिलमानको कुकृत्य पर्दाफास गरेपछि मुक्ति पाउँछ । त्यसपछि बल्ल परिवारप्रतिको दृष्टिकोणमा परिवर्तन आउँछ । यसरी वीरमान यस उपन्यासमा एक गतिशील पुरुष पात्र हो ।

### (ङ) दिलमान

दिलमान यस उपन्यासको असत् पात्र हो । उपन्यासको सुरुदेखि अन्तिमसम्म अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन, हत्या, हिंसा, बलात्कार जस्ता अपराधिक कार्यमा संलग्न दिलमान यस उपन्यासको प्रमुख खलनायक हो । उसले नीताको परिवारलाई हुनसम्मको चोट पुऱ्याएको छ । नीताको श्रीमान पेन्सन प्राप्त लाहुरेलाई पनि दिलमानले उसको कब्जाबाट उम्कन दिएको छैन । नीताको कान्छा छोरा वीरमानलाई

पनि दिलमानले भरौटे बनाई कुकार्यमा संलग्न गराएको छ । दिलमान आफ्नै छोरा सन्देशलाई पनि मार्न मान्छे लगाउने एक जघन्य अपराधी हो । सन्देश एक सच्चा प्रहरी इन्सपेक्टर हो । ऊ अपराधीक क्रियाकलापहरूलाई नियन्त्रण गर्ने पक्षमा लागेको देखिन्छ । सविन (नाम परिवर्तन गरिएर रकम) ले दिलमानलाई किन मार्ने भन्ने प्रसङ्गमा दिलमान यसो भन्छ—“त्यो कानूनको कुरा गर्छ, मेरो धन्दा थाहा पायो भने मलाई नै डाका बनाउन बेर लगाउदैन । त्यस्तोलाई छोरो भनेर पनि कसरी भन्नु ? जुन छोरा बाबालाई नै मास्न चाहन्छ भने उसको सिङ्ग पहिला भाच्नु राम्रो होइन र रकम ?” ४९

यसरी यस उपन्यासको दुःख, पीडाको कारक दिलमान जस्तोसुकै हण्डर र ठक्कर खाए पनि अलिकति पनि विचलित नभइकन आफ्ना कुत्सित योजना अघि बढाउने स्थिर पात्र हो । गाउँलेहरूलाई आफ्नो इसारामा नचाउने, छिमेकी नीताको पतिलाई सुरुमा सहयोगी भावना राख्ने र पछि सर्वश्व लुट्ने, नीताको पति लाहुरे र उसको छोरालाई घरमै कैद गर्ने, दिलमान एक राक्षसी प्रवृत्तिको देखिन्छ । आफ्नो छोरा कानूनको बाटोमा हिड्ने एक सच्चा प्रहरी इन्सपेक्टर भए पनि ऊबाट जोगिएर अबैध धन्दा गर्ने एक अपराधी हो । ऊ स्वयं छोरा मानेको सन्देशलाई मार्न षड्यन्त्र गर्ने दिलमान कठोर हृदय भएको निच अनि पिपासु पात्रको रूपमा प्रस्तुत भएको छ ।

### (च) सन्देश

सन्देश यस उपन्यासको उत्तरार्द्धतिर देखा परेको पुरुष पात्र हो । ऊ एक सच्चा देशभक्त, न्यायप्रेमी, प्रहरी इन्सपेक्टर हो । यस उपन्यासमा ऊ दिलमानको जेठीपट्टिको छोरो र नायिका अर्चनाको दाजु हो । कानूनलाई सही रूपमा पालन गर्न रुचाउने सन्देश असहाय, बेसहारा जीवन बिताएका व्यक्तिलाई सहयोग गर्छ । सबैप्रति सकारात्मक धारणा राख्ने ऊ आफ्ना बाबुको मनको धमिलो बाढी बुझ्न सक्दैन । प्रहरी अफिसर भएर आफ्नो कार्य क्षेत्रमा भएको तस्करी नबुझ्नु उसका कमजोरी हुन् । उसले आफ्नै बाबु दिलमानको कालोधन्दाका बारेमा जानकारी दिन आएको सविन

४९ ऐजन ।

परिवन्दले जेलमा परेको बारेमा बुझेपछि उसलाई छुटकारा दिएर बाबुलाई कैद गराएको छ । सन्देशले आफ्नी एक मात्र बहिनीलाई सविनलाई सुम्पेर ज्वाँड मानेको छ । उसले बाबु छोराको कुनै नाताको वास्ता नगरी कानुनको पालना र कार्यान्वयन गरेर अपराधी भनेको अपराधी नै हो भनेर बाबुलाई जेल राखेको छ । त्यसैले ऊ एक कानुनको पक्षधर रहेको देखिन्छ । त्यसैले सन्देश यस उपन्यासको एक अनुकूल, सत्, स्थिर चरित्र हो ।

### (छ) भोटु

भोटु यस उपन्यासको सहायक पुरुष पात्र हो । भोटु सविनको भाइ एवं साथी हो नीताले मानेको छोरो हो । ऊ नीताको परिवारको एक सदस्यका रूपमा रहेको छ । पाहुना भएर सविनको मावल माखुजा गएका बेला एक युवतीसँग अनैतिक सम्बन्ध राखी जिम्मा लिने भोटु एक सामान्य पात्र हो । ऊ नीताको विश्वास पात्र हो । नीतालाई दिलमानले एउटा कागजमा जबरजस्ती सही छाप गराएको कुरा नीताले भोटुलाई मात्रै भनेकी छे । उसलाई विश्वास गरेर नीताले आफ्नो छोरा दिलमानको नागरीकता दिएर इन्डिया लाहुर पठाउछे । ऊ इन्डियन लाहुरे पनि हो । भोटु यस उपन्यासमा सबैको विश्वास पात्र बनेको छ । त्यसैले ऊ यस उपन्यासको सहायक, अनुकूल, स्थिर एवं सत् पात्र हो ।

### ५.४.३ गौण पात्रहरू

निर्दोष कैदीको रहस्य उपन्यास एक बहुपात्रीय उपन्यास हो । उपन्यासमा चर्चामा आएका तर प्रत्यक्ष रूपमा देखा नपर्ने पात्रलाई गौण पात्रका रूपमा लिइएको छ । यस उपन्यासमा गौण पात्रहरू पनि सशक्त छन् । मनराज बाजे, दिलराज, कान्छी, पुलिसहरूले पक्रेर ल्याएको एक अपराधी, एम्बुलेन्स ड्राइभर, सुइँठे, गुइँठे, भोटुकी श्रीमती, जुठे, सुठे गरी १० जना लगायत १५-१६ जना पुलिस र दिलमानका भरैटेहरू गौण पात्रका रूपमा आएका छन् । मनराज बाजे, दिलराज, कान्छी, एम्बुलेन्स ड्राइभर, यस उपन्यासका सत् पात्र हुन् । निर्दोष मनराज बाजे, कान्छी, दिलमानको मनपरि,

अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन सहन बाध्य पात्रहरू हुन् । यिनीहरू दिलमानको अन्याय सहन विवश कमजोर पात्र हुन् ।

यस उपन्यासमा मनराज बाजे गाउँका एक असल ब्राहमण हुन् । उसमा सामाजिक भावना रहेको छ । मनराज बाजेलाई पनि दिलमानको स्वभाव मन पर्दैन । दिलराज सविनको साथी हो । कान्छी नीताकी असल, सहयोगी छिमेकी हो । उपन्यासमा एक पटक देखा परेकी कान्छीको खासै भूमिका छैन । भोटुकी श्रीमती केही दिन नीतासँगै बसेर केही दिन पछाडी माइत गई बसेकी पात्र हो । गुइँठे, सुइँठे, जुठे, सुठे, दिलमान कहाँ काम गर्ने प्रतिकूल चरित्र हुन् । उनीहरू दिलमानको अधि पछि हिड्छन् । उनीहरू आफ्नो हैसियत बुझ्न चाहदैन । अर्काको लहैलहैमा लागेर दिलमानले जे अह्वायो त्यही गर्ने, जे भन्यो त्यही मान्ने अरूलाई दुःख दिने बदमासी पात्र हुन् । दिलमान बसाइँ गएपछि उनीहरूको खासै भूमिका छैन । पुलिसहरू एक अपराधीलाई हतकडी लगाएर पक्रेर ल्याउने र कानूनको कठघारामा उभ्याउने देशका कर्मठ योद्धाहरू हुन । एम्बुलेन्स चालक एक इमान्दार ड्राइभर हो । उसले सविनले एम्बुलेन्स जता लैजाउ भने पनि लगेको छ । त्यसैले ऊ अनुकूल पात्र हो । दिलमानका भरौटेहरू दिलमानलाई अबैध सामान ओसार-पसार गर्न सहयोग गर्ने पात्रहरू हुन् । उनीहरू अर्कालाई दुःख दिएर आनन्द लिन्छन् । यी पात्रहरू हाम्रो समाजमा रहेका शोषक, सामन्तहरूको प्रतिनिधी पात्र हुन् । यिनीहरू यस उपन्यासका प्रतिकूल चरित्रका पात्रहरू हुन् ।

**५.५ तालिकामा प्रस्तुत 'युद्धले खोसेको प्रेम' उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरूको चरित्रको विश्लेषण**

प्रस्तुत युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासमा औपन्यासिक कार्यगत भूमिकाका आधारमा हेर्दा ६९ जना पात्रहरू लगायत गोसवालाको समूह, महवालाको समूह, चुरौटेको समूह, भरियाहरू, गाउँलेहरू, प्रहरी जवानहरू, प्रहरी हवलदारहरू, सेनाहरू, माओवादी कार्यकर्ताहरू, विद्यार्थीहरू, विदेशिएका नेपालीहरू, धारामा पानी थाप्न आएका ३-४ जना महिलाहरू, नूतनको विहेमा आएका पाहुनाहरू, अमिसारिका

साथीहरू आदि रहेका छन् । जसमा ३० जना र गोसवालाको समूह, महवालाको समूह, चुरौटेको समूह, भरियाहरू, प्रहरी हवल्दारहरू, प्रहरी जवानहरू, सेनाहरू, विदेशिएका लेपालीहरू पुरुष पात्रहरूका रूपमा रहेका छन् भने ३९ जना नारी पात्रहरू लगायत धारामा पानी थाप्न आएका ३-४ जना महिलाहरू र अमिसारिकाका साथीहरू रहेका छन् । यस उपन्यासमा विद्यार्थीहरू, माओवादीहरू, गाउँलेहरू, छिमेकीहरू बिहेमा उपस्थित पाहुनाहरू चाँहि पुरुष तथा नारी छ्यासमिस पात्रहरू रहेका छन् । यस उपन्यासमा जलन र अमिसारिका २ जना प्रमुख पात्र रहेका छन् । ६ जना सहायक पात्र र अन्य सबै पात्रहरू गौण रहेका छन् । सहायक पात्र टेम्के र मानसिं असत् पात्रहरू हुन भने अन्य सत् पात्रहरू हुन् । पात्र संख्याका दृष्टिले युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासलाई बहुपात्रीय उपन्यास भन्नु पर्ने हुन्छ । यस उपन्यासमा स्थिर र गतिशील गरी दुई किसिमका पात्रहरू समाविष्ट रहेका छन् । जसले मानव समाजका यथार्थ मानवीय पात्रको प्रतिनिधित्व गरेको छ । तहगत रूपमा हेर्दा मुख्य, सहायक र गौण गरी तीनै तहका पात्रहरू पाउन सकिन्छ । उपन्यासमा प्रयोग भएका प्रमुख र सहायक पात्र मञ्चीय छन् भने गौण पात्रहरू नेपथ्यीय छन् ।

यस उपन्यासले नेपालको १० वर्षे जनयुद्धको पृष्ठभूमीमा भूमिकाको आधारमा तयार गरिएको एक चरित्रप्रधान उपन्यास हो । यस उपन्यासमा धेरै पात्रहरू प्रयोग गरिएको छ । हत्या, हिंसा, आतङ्क, स्वार्थी समाजको यथार्थ चित्रण गर्ने लक्ष्य अनुसार उपन्यासमा विविध प्रवृत्तिका पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । पात्रहरूको चर्चा निम्न अनुसार गरिएको गर्न सकिन्छ ।

### ५.५.१ प्रमुख पात्र

#### (क) जलन

कृतिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा जलनको उपस्थिति अन्य पात्रको तुलनामा अधिक नै देखा पर्दछ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उसको भूमिका कथानकको विकाससँगै जोडिएर आएको छ । यसरी कृतिगत कार्यका दृष्टिले उपन्यासमा जलनले गरेको कार्य अन्य पात्रहरूको भन्दा बढी महत्वपूर्ण र निर्णायक

पनि छ । उसकै कार्यश्रृङ्खलासँग अन्य पात्रहरूको कार्य पनि जोडिएको हुँदा यस उपन्यासमा जलन नै केन्द्रिय पात्रको रूपमा देखा परेको छ । उसकै चरित्रगत केन्द्रियतामा युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासको सुरुवात र अन्त्य भएको हुँदा पनि जलनलाई यस उपन्यासको मूल पात्रको श्रेणीभित्र राख्न सकिन्छ ।

लिङ्गका आधारमा जलन पुरुष पात्र हो । जलन नामैले पनि पुरुष जनाउँछ । यस उपन्यासमा जलन अमरपुर निवासी एक सामान्य परिवारमा जन्मे हुर्केको शिक्षित युवक हो । उसको घरमा आमा, बाबु र जलन एकलो छोरा मात्र देखिएको छ । विरेनको एकदमै मिल्ने साथी पनि हो । ऊ विरेनभन्दा ५ वर्ष जेठो छ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म सकारात्मक ढङ्गले अघि बढेकाले ऊ एक इमान्दार, परोपकारी, समाजसेवी, निस्वार्थी एवं सच्चा प्रेमी पात्र हो । ऊ भावनाका डुब्न मन पराउने पात्र पनि हो । ऊ आफ्नो अडान कहिल्यै नछोड्ने स्थिर एवं अनुकूल पात्र हो । जीवन चेतनाका आधारमा आधुनिक सोच विचार भएको नयाँ पुस्ताको प्रतिनिधी पात्र हो । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म ऊ मञ्चीय पात्रका रूपमा देखा परेको छ । जलन उपन्यासको कथावस्तुबाट कुनै क्षण पनि छुट्टिएको छैन । उसका मातापिताको समाजसेवी र परोपकारी भावनाबाट प्रभावित भई ऊ भाडापखालाको औषधी खोज्न साथी विरेनसँग ताप्लेजुङ्गको थुकिमाको लेकसम्म गएको छ । त्यहाँबाट विभिन्न औषधीमूलक जडीबुटी ल्याएर भाडापखालाका बिरामीलाई गाउँमा निःशुल्क बाँडेको छ । वर्षेनी गाउँमा परिवारका सबै सदस्य नै मर्ने गरी लाग्ने भाडापखालाले कतिका काख रितिएका छन्, कतिको सिउँदो पुछिएको छ, त कति बेसहारा बनेका छन् । ऊक्त औषधीबाट त्यो गाउँको महामारी नै नियन्त्रण भएको छ । गाउँघरमा फोहोर व्यवस्थापन गर्नुपर्छ, चर्पी बनाउनुपर्छ, चर्पीमा दिसापिसाब गर्नुपर्छ, खुला रूपमा दिशा पिसाब गर्नु हुदैन, स्वास्थ्य चौकी बनाउनुपर्छ भन्ने सकारात्मक सोच भएको व्यक्ति हो । ऊ गाउँघरका केटाकेटीलाई स्कूल पढाउन जनचेतना जगाउने काम गर्छ । उसले केटाकेटीलाई बिना पैसा ट्युसन पढाउँछ । उक्त कार्यले गर्दा उसलाई गाउँलेहरूले औषधी रूचाउँछन् । ऊ समाजमा एक प्रतिष्ठित व्यक्ति नै कहलाएको छ । क्याम्पस पढ्दादेखि नै अमिसारिकालाई पवित्र माया गर्ने ऊ आदर्श प्रेमीका रूपमा परिचित छ ।

जलन उपन्यास सुरू हुनुभन्दा अघिदेखि नै प्रेम सम्बन्धमा बाँधिएको देखिन्छ । ऊ अमिसारिकालाई हृदयदेखी नै सच्चा प्रेम गर्छ । अमिसारिकाको सुन्दरता, इमान्दारिता, सामाजिक भावना, निःस्वार्थीपनलाई ऊ हृदयदेखि नै सम्मान गर्ने गर्छ । हर सुख दुःखमा ऊ अमिसारिकालाई सम्झन्छ । ऊ माओवादीको सकारात्मक कार्यमा संलग्न चोर, डाका, फटाहा व्यक्तिको घुसपैठ पठक्कै मन पराउँदैन । जलनलाई माओवादीहरूले सहयोग गर्न आग्रह गर्छन । जलनले पनि माओवादीको सकारात्मक कार्यका लागि सहयोग गर्ने आश्वासन दिएको छ । एक दिन गाउँका जुवाडे, जड्याहा तथा सामाजिक विकृतिका कारक दादा, भ्याप्ले, कुण्डले आदिलाई भाटे कारवाही गर्न सबै गाउँलेहरूलाई बोलाइएको हुन्छ । त्यस समयमा गाउँका सोभा-सादा दशैंको अवसरमा तास खेल्न बसेका व्यक्तिहरूलाई माओवादीहरूले चुट्टा जलनलाई असह्य भएको छ । जलनले फेरि गल्ली नदोहोच्याउने सर्तमा उनीहरूलाई चुट्टन छोड्न र घर पठाइदिन आग्रह गरेको छ । यसबाट पनि जलनमा मानवीय भावना स्पष्ट देख्न सकिन्छ । जलनले टेम्केलाई पक्रिन जाँदा पनि हुन सक्ने क्षतिबाट बचाउन आफु पनि सँगै गएको छ । टेम्केलाई पक्रिन्दा टेम्के फुत्किनलाई पेस्तोल चलाउन आट्टा पेस्तोलको निशानातिर टेम्केकी आमा भएकी र जलनले पेस्तोलको निशाना आकाशतिर फर्काइ टेम्केकी आमालाई गाली लाग्नबाट बचाएको छ । जलन टेम्के र मानसिं जस्ता गलत व्यक्तिको इसाराले उठाएका समस्याप्रति चिन्तित छ । जलन त्यस्ता व्यक्तिहरूलाई कानुनी कारवाही गरी पिडीतलाई सान्त्वना दिन चाहन्छ । ऊ युद्धकालिन समयमा माओवादीको अपहरणमा २० दिनसम्म बुबा-आमा, अमिसारिका तथा गाउँलेहरूबाट सम्पर्कविहिन भएको छ । जलन सुराकीको आरोपमा अपहरित भएको छ । पछि छानविन पश्चात २० दिन पछाडि सुराकी नभएको ठहरिएपछि सकुशल रिहा गरिएको छ । फेरि पनि ऊ पटक-पटक माओवादी अपहरणबाट बच्न बाँसघारी, काभ्राको रूख र घरमा लुकेर बस्छ ।

ऊ गरीबीको कारण आर्थिक अवस्था सुधार गर्न, गाउँमा विद्यालय खोल्ने इच्छा पूरा गर्न विदेश (मलेसिया) जान्छ । मलेसियामा उसले दलालले ठगेर बेहाल भएका नेपालीहरूप्रति दया देखाएको मात्रै छैन आफुले सक्ने सहयोग पनि गरेको छ,

मलेसियामा रहेका नेपालीहरूलाई जलनले यसरी सहयोग गरेको छ, –जलन जुरुक्क उठेर अलि माथिको भनौँ माथ्लो एक सिढी चढेर त्यहाँको दृश्यको अवलोकन गर्छ । त्यहाँ त आम नेपाली दाजुभाइहरू देख्छ, एक पटक आँखा मिच्छ । राम्ररी हेर्छ नेपालीहरू नै हुन्, अझ नियाल्छ । केही चिसो सिमेन्टमा डङ्ग लडेका छन्, कोही अडेस लागेर बसेका छन् । कोही बोल्न सक्दैनन् । जलन त्यही पुग्छ उनीहरूकै नजिक । एक जना युवक हेर्दा नेपाली नै हो, उ त भन मने लागेको देखेपछि उसलाई विस्तारै उठाउँछ र काखमा टाउको राख्छ । अब जलनलाई हृदयदेखि नै माया लागेर आउँछ - हे ईश्वर तिमि कस्तो छौ ? भन त यी हामी नेपालीहरूको भाग्यको लागि के पागल त भएको छैनौ हँ ? भनेर सोच्छ ।

अब त जलनलाई ती सबै नेपाली दाजुभाइहरूले घेर्न लागे । उनीहरू पनि नेपालबाट आफ्नै दलाल दाजुभाइबाट नब्बे हजार तिरेर जलन जस्तै आफैले आफैलाई बेचेर आएका रहेछन् , त्यहाँ पुगेर बेपत्ता भइ भोकभाकै हिडिरहेको, कोही एघार दिन भयो केही खाएकै छैन भन्दै थिए भने कोही हप्ता दिन .....।

जलन उठेर जान्छ, सबै पछि पछि आउँछन् । जलनले साथीसँग भएको र आफूसँग भएको चाउचाउ र चिउरा लागि सबैलाई बाँडी दिन्छन् ।<sup>५०</sup> जलनले मलेसिया गएर एक कम्पनीमा काम गर्न थाल्छ । कम्पनी राम्रै परेकोले कमाइ पनि राम्रो हुन्छ । उसलाई भण्डै तीन लाखको चिठ्ठा परेको छ । उसले त्यसरी कमाएको पैसा घरमा पठाई स्कूल बनाउन खर्च गरेको छ । यसरी हेर्दा ऊ भाग्यमानी अनि समाजसेवी भावनाको देखिन्छ ।

तीन महिना नबित्तै जलनको कम्पनीमा आगलागी भएको छ । मालिक भाग्छ र सबै कामदारहरू तितरवितर हुँदा जलन विरामी भएकाले एकलै रहेको छ । पैसाको नाममा आर. एम. २५० मात्र बाँकी रहे तापनि ऊ अलिकति पनि नआतिने धैर्यशील पात्र हो । मलेसियाका विभिन्न ठाउँमा गई काम गरे पनि काम अनुसारको दाम

---

<sup>५०</sup> के.पि. राई, युद्धले खोसेको प्रेम, लेखक स्वयम्, .....२०६४, पृष्ठ, ७७ ।

नपाएपछि, चाहिँ जलनलाई नेपाल फर्कने मनसाय पलाएको छ । त्यसपछि एक व्यक्तिको सहयोगबाट नेपाल फर्किएको छ ।

नेपालमा माओवादीको अनिश्चित कालिन बन्द, हट्टाल जारी नै रहेको हुन्छ । बन्दका कारण स्कूल पनि बन्द हुने भएकाले अमिसारिका पनि गाउँ जाने निर्णय गरेकाले जलन आफ्नी प्रेमीका अमिसारिकालाई माथी गाउँसम्म पुऱ्याउन जाँदा छुट्टने बेलामा तल लालसेना र माथी गाउँतिरबाट शाही सेना आइरहेका हुन्छन् । एक्कासी दुबैतिरबाट गोली पड्केपछि निर्दोष प्रेमको पुजारी जलन दाहोरो भिडन्तमा परि प्रेमिकासँग ज्यान गुमाउँछ । जलनले ज्यान गुमाएपछि दुबै तर्फका कमाण्डरबाट माफी माग्दा ऊ निर्दोष, इमान्दार, कर्तव्यपरायण, समाजसेवी एवं परोपकारी पात्रका रूपमा देखिन्छ ।

यसरी जलन चरित्रगत प्रवृत्तिका दृष्टिले अनुकूल पात्र हो । आफ्नो जीवनका हरेक निर्णयहरू स्वतन्त्र रूपमा गर्ने जलनलाई एक गतिशील पात्रको रूपमा लिन सकिन्छ । हरेक निर्णयहरूमा आफ्ना स्वतन्त्र विचारहरूलाई सम्प्रेषण गर्ने जलन आफ्नी प्रेमिका अमिसारिकाको बाह्य तथा आन्तरिक सुन्दरताबाट आकर्षित भएको छ । जीवनको अधिकतम समय बुबा-आमा, अमिसारिका र समाजसेवामा बिताएको जलनको जीवन अन्तिम अवस्थामा आफ्नो प्रेममय जीवन नौकालाई युद्धका कारण अमिसारिकामा नै समर्पित गराएर ऊ यस संसारबाट बिदा भएको छ । तसर्थ ऊ गतिशील पात्र हो । यस उपन्यासमा जलनको भूमिका ज्यादै नै महत्वपूर्ण रहेको छ ।

### (ख) अमिसारिका

कृतिगत कार्य वा भूमिकाका आधारमा जलनपछि दोश्रो स्थानमा अमिसारिकाको नाम आउँछ । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै उनको भूमिका कथानकको विकाससँगै प्रत्यक्ष रूपले जलनसँग जोडिएर आएको छ । यसर्थ अमिसारिकालाई पनि यस उपन्यासमा प्रमुख पात्रको रूपमा लिन सकिन्छ ।

अमिसारिका लिङ्गका आधारमा स्त्री पात्र हुन । यहाँ नामैले पनि स्त्री पात्र हुन भन्ने कुरा प्रष्ट हुन्छ । अमिसारिकाको यस उपन्यासमा एक शिक्षित युवती तथा

जलनकी प्रेमिकाका रूपमा उपस्थिति देखाइएको छ । पेशाका हिसाबले ऊ एक लगनशील शिक्षिका समेत हो । क्याम्पस पढ्दादेखि नै जलनको प्रेम बन्धनमा बाँधिएकी छे । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म चर्चामा आएको मञ्चीय पात्र हो । ऊ निडर, स्वतन्त्र, स्वभिमानी, समाजसेवी एवं सुशील नारी हो । हृदयदेखि नै जलनलाई सच्चा प्रेम गर्ने अमिसारिका एक सच्चा प्रेमी हो । जुन कुरा अमिसारिकाले जलनलाई लेखेको चिठीमा उल्लेख भएको छ । यस चिठीको एक अंशमा उल्लेख छ—

जलन ! जुन दिन हाम्रो भेट भएको थियो, त्यही दिनदेखि युगौं युगसम्मको लागि जीवन जीउने हाम्रो प्रण भयो त्यही दिनदेखि किन-किन भन-भन तपाईंमा एकदम नजिक बन्न चाहन्छु यो मन । सबैसामु हासे बोले पनि एकपछि अर्को गर्दै भुलिंदो रहेछ । तर यो प्रेमको सागरमा हाम फालेपछि मोतीको कुनै ज्योतिले लट्ट पादो रहेछ । मोहनीले भन-भन तान्दो रहेछ । “प्रेमको मुस्कान कति महँगो र कति सरल ? कति सरस मायालु भावहरू, म केवल विहोसिन्छु, न्याय खोज्छु उही तपाईंको समिप रहेर । तपाईंले हाँसी हाँसी भन्नुहुन्छ एक कोमल आत्माबाट चञ्चली किन तिमी के को न्याय खोज्दैछौ ? अन्यायलय तिमी आफै हो र म । अनि तिमीलाई भावनात्मक सन्देशले न्याय दिइरहेछु कि म तिम्रै निमित्त न हुँ भएन !” हो जलन यहि शब्दले मेरो आत्मा कसिलो बनेर आउँछ, यही शब्दले त म मेरो जीन्दगीको हरेक पथहरूमा पाइला चाल्ने गोरेटो बनेको छ । धन्य छ, जलन मेरो राज, बेहोसबाट भताभुङ्ग बनेर यही शब्द ओकल्दै छ कि हरेक साँझ बिहान मेरै जलनको बारेमा केही सोच्छु र केही लेच्छु, आत्मिय मेरै डायरी भरी भरी ।

जलन ! कसैको लागि भार भन्दछन् तर म जीन्दगी के हो भनेर परिभाषा नै त जान्दिन तर पनि सफल यो जन्मको तारिफ गर्छु र ‘जीन्दगी के हो भनेर’ घिसारिदिन्छु, जुन तपाईंले अपनाउनु भएको थियो, त्यही बाटो हिडिरहेछु र हिडिरहनेछु । त्यसको लागि पथप्रदर्शक चाहीं तपाईं नै हुनुहुन्छ । मेरा बाबु-आमा, भाइलाई छोडेर गए पनि ‘जलन’ छोड्न सकिदैन । आत्माको जलन ‘तन मनको जलन’

म त्यो तपाईकै गाउँ भएर जानेछु । एक दिन पाहुना बनाएर राख्नुहोस् नचिनेको गाउँ जादैछु पुग्नको लागि साथ दिनुस् । बस् धन्य सम्झने छु ।<sup>५१</sup>

यसरी हृदयदेखि नै जलनलाई सच्चा प्रेम गर्ने एक आदर्श प्रेमीका भएकाले जलनको घरमा जस्तोसुकै समस्या पर्दा सहयोग र सल्लाह दिने जलनको सच्चा सल्लाहकारको रूपमा देखिन्छे । ऊ आफ्नो सुन्दरताको गलत प्रयोग नगर्ने सच्चा पात्र हो । ऊ जलन विदेश जाने भएपछि आफ्नो जागीर जलनकै गाउँतिर सारी जलनका बुबा-आमालाई सहयोग गर्ने असल छोरीका रूपमा देखा पर्दछे ।

अमिसारिका चरित्रगत दृष्टिले यस उपन्यासमा सुरुदेखि अन्त्यसम्म नै अनुकूल तथा स्थिर पात्र हो । ऊ समाजसेवी हो, उसले आफ्नो पेशालाई इमान्दारीताका साथ अंगालेकी छे । ऊ बालबच्चाहरूको भविष्यमा नकारात्मक असर परेको हेर्न नचाहने शिक्षिका पात्र पनि हो । जुन बदला (माओवादी नाम) ले अमिसारिकालाई उनीहरूको पार्टीमा लग्न आग्रह गर्दा अमिसारिका भन्छिन—“हेर्नुहोस् तपाईले मलाई नफकाए पनि हुन्छ । सुन्दरताको वर्णन गरिदिनु भयो धन्यवाद ! त्यसमा केहि छैन । तपाईको अनुहारको भाव बुझिसकेकी छु । म भनेको बच्चा बच्चीहरूको भविष्यको सिंगो संसार हुँ । जहाँ उनीहरूलाई सुन्दर शान्त भविष्यको लागि तपस्या गरेर लीन भएकी छु । त्यसैले त्यहीबाट सहयोग हुन सक्छ भने केहि गरौंला तर तपाईहरू जस्तो बन्दुक बोकेर हिड्न असमर्थ छु । म आन्दोलनको छातीमा संरक्षणको फुल रोपेर शान्तिको माला पहिच्याउन चाहने नारी हुँ । मेरो सुन्दर अनुहार लगेर कुनै प्रहरी परपुरुषलाई फसाउन चाहन्न ।”<sup>५२</sup>

अमिसारिका जलनलाई अपहरण गरी दुःख दिएकोमा एकदमै मर्माहत छे । बीस दिन पछाडि रातको ११ बजे जलन घर पुग्दा अमिसारिका अत्यन्तै खुशी व्यक्त गर्ने पात्र हो । ऊ युद्धका निहुँमा शाहीसेना र जनसेनाको दोहोरो भिडन्तमा परी जीवन गुमाएका प्रति ज्यादै संवेदनशील देखिन्छे । जीवनका हर आरोह अवरोहमा जलनको

<sup>५१</sup> पूर्ववत्, २०६४, पृष्ठ, १० ।

<sup>५२</sup> पूर्ववत्, २०६४, पृष्ठ, ५० ।

साथ पाएकी अमिसारिकाले जलनलाई साथीको बिहेको निम्तामा जाँदा पनि सँगै लिएर गएकी छे । जलनको प्रेमको गोलीले आफ्नो शरीर छियाछिया बनाएकी उसको प्रेम युद्धले खोस्छकी भन्ने ठान्दै ऊ चाडै विवाह बन्धमा बाँधिन चाहन्छे । माओवादीको अनिश्चितकालिन बन्द, हडतालका कारण स्कूल बन्द हुने भएकाले अमिसारिका पनि गाउँ जाने निर्णय गर्छिन । उसको प्रेमी पनि आफ्नी प्रेमीका अमिसारिकालाई साथी गाउँसम्म पुऱ्याउन जाँदा छुट्ने बेलामा तल लालसेना र साथी गाउँतिरबाट शाही सेना आइरहेका हुन्छन् । एक्कासी दुबैतिरबाट गोली पड्केपछि निर्दोष प्रेमकी पुजारी अमिसारिकाको दाहोरो भिडन्तमा परि प्रेमीसँग जीवनलिला समाप्त गर्छे । केटा र केटीको पवित्र प्रेमप्रति शड्का गरी नराम्रो ठान्ने नेपाली समाजमा ऊ एक आदर्श नेपाली नारीका रूपमा देखा परेकी छे ।

यसरी हेर्दा अमिसारिकाले यस उपन्यासमा ठूलो भूमिका निर्वाह गरेकी छे । ऊ सामाजिक उपन्यास लेखनका हिसाबले अनुकूल पात्र हो । जीवन चेतनाका आधारमा आधुनिक विचारशैलीकी प्रतिनिधी पात्र हो । ऊ यस उपन्यासमा स्थिर, सत्, अनुकूल, समाजसेवी, कर्तव्यपरायण तथा आदर्श नारीका रूपमा देखा परेकी छे ।

## ५.५.२ सहायक पात्रहरू

### (क) विरेन

विरेन यस उपन्यासको एक सहायक पुरुष पात्र हो । ऊ जलनको हितैषी मित्र हो । ऊ उपन्यासको सुरुदेखि नै जलनसँगै देखा परेको छ । ऊ जलनभन्दा पाँच वर्ष कान्छो छ । उ जलनको हितैषी मित्र, उमेरमा भाइ र कक्षा १० मा अध्ययनरत विद्यार्थी हो । अन्तिम परिच्छेद बीसमा ऊ सैनिक कमाण्डर भएर देखा परेको छ । जलनसँगै भाडापखालाको औषधी खोज्न जाने, ऊ सँगै ट्युसन पढि एस. एल. सी. पास गर्ने विरेन यसपछि गायब भएको छ । उसको कतै पनि चर्चा नभई उपन्यासको अन्तिम परिच्छेदमा सैनिक कमाण्डरका रूपमा रहस्यमय ढंगले देखा परेको छ । उपन्यासको अन्त्य गराउन उसको ठूलो भूमिका रहेको देखिन्छ । यसरी विरेन यस

उपन्यासमा सत्, अनुकूल, इमान्दार, कर्तव्यनिष्ठ, गतिशील पात्रका रूपमा देखा परेको छ ।

### (ख) चिरफार

चिरफार यस उपन्यासको अर्को सहायक पुरुष पात्र हो । नेपाली समाजको संरचनामा आमूल राजनीतिक परिवर्तन ल्याउन हिडेको एक जनसेना हो । निष्ठावान राजनीतिक कार्यकर्ता समेत हो । ऊ कसैलाई जबरजस्ती आफ्नो संगठनमा नहोम्ने, अपहरण गरी ल्याएका मानिसहरूको सहजै चित्त बुझाउने, अरूलाई नबिभाउने एक सच्चा र महान नेता हो । ऊ आफ्नो उद्देश्यमा दृढ साहसी पात्रका रूपमा देखा परेको छ । भूलवश गल्ती भएमा क्षमा याचना गर्ने ऊ नायक जलनको मन जित्न सफल भएको छ । ऊ आफ्नो राजनीतिक सिद्धान्तप्रति प्रतिबद्ध आदर्श राजनेता हो । ऊ जलनले गलत ठहर्‍याएका मानसिंह र टेम्केजस्ता समाजका हानिकारक व्यक्तिको गल्ती पत्ता लगाइ आवश्यक कारबाही गराउन सफल भएको छ । निर्दोष जलन र अमिसारिकाको ज्यान गएपछि उनीहरूसँगै माफी माग्ने चिरफार उपन्यासको धेरै परिच्छेदमा सक्रिय रूपमा देखा परेको छ । चिरफार यस उपन्यासको मञ्चीय, बद्ध, अनुकूल, कर्तव्यपरायण एवं सत् पात्रका रूपमा उपस्थित गराइएको छ ।

### (ग) जलनका बुबाआमा

यस उपन्यासमा जलनका बुबाआमा सहयोगी सत् पात्रका रूपमा देखा परेका छन् । उनीहरू जलनलाई परोपकार र समाज सेवाको बाटो देखाउने महान विचारधारा भएका अनुकूल पात्र हुन् । उनीहरूको एक मात्र छोरा जलन रहेको छ । उनीहरू जलनलाई औधी माया गर्छन् । जलनलाई माओवादी कार्यकर्ताहरूले जलनलाई अपहरण गरेर लैजादा उनीहरू अत्यन्तै मर्माहत भएका थिए । उपन्यासको सुरुदेखि अन्त्यसम्म उही प्रवृत्तिमा देखा परेका उनीहरू स्थिर पात्र हुन् । अन्याय, अत्याचारलाई नसहने, कर्तव्यप्रति सचेत सामाजिक सत् पात्रका प्रतिनिधी पात्र हुन् । उपन्यासमा उनीहरूको महत्वपूर्ण भूमिका रहेकाले मञ्चीय पात्र हुन् ।

### (घ) मानसिं र टेम्के

मानसिं र टेम्के यस उपन्यासका जाली, स्वार्थी, दुष्ट, प्रवृत्तिका असत् पात्र हुन् । उनीहरू जुन राजनीतिक व्यवस्था बलियो छ, त्यतातिर लागि अरूलाई सताउने अवसरवादी तथा शक्तिका पूजारी प्रवृत्तिका रूपमा रहेका देखिन्छन् । ईर्ष्या, द्वेष, भाव राखी काम गर्ने, अरूलाई धोका दिने प्रवृत्तिका प्रतिनिधी पात्र हुन । जलनले ताप्लेजुङ्गको थुकिमा लेकबाट औषधी खोजेर ल्याएर समाजमा बाड्दा ईर्ष्याले जली प्रहरीमा भुटो आरोप लगाई पक्राउन खोज्ने असत् पात्र हुन । गाउँमा माओवादी शक्तिशाली हुँदा त्यतै प्रवेश गरी गाउँघरमा मुखमा पट्टि बाँधेर पार्टीको सहयोगको लागि भनेर चन्द्रा मार्ग र आफ्नै प्रयोजनका लागि खर्च गर्ने, गाउँ घरमा आतङ्क मच्चाउने उनीहरू यस उपन्यासका प्रतिकूल पात्र हुन । आफुलाई मन नपरेको व्यक्तिलाई भाटे कारबाही गराउने, पर्याप्त पैसा उठाइ फरार हुने जस्ता घृणित र आपराधिक क्रियाकलापमा संलग्न यी पात्रहरू मञ्चीय, बद्ध, स्थिर एवं असत् पात्रहरूका रूपमा रहेका छन् ।

### ५.५.३ गौण पात्रहरू

यस उपन्यासमा थुप्रै गौण पात्रहरू रहेका छन् । हरेक घटनामा गौण पात्रहरूले भूमिका निभाएका छन् । यस उपन्यासमा मतानघरे बाजे भाडापखालाले परिवारका सबै सदस्य गुमाइ एक्लो जीवन बिताएका बृद्ध, अरूको भलो चिन्ताउने, परोपकारी एक सत् पात्र हुन । उमेरले ऊ असी पचहत्तर वर्षको रहेको छ । रातमाटे कान्छी दिदी जलनकी छिमेकी सत् पात्र हुन । उसको चिठी पुऱ्याउने एउटा मात्र काम रहेको छ । सुकमती आमै बाढी पहिरोमा सबै परिवार गुमाइ जाँड रक्सीको भट्टी गरी जीवन गुजारा गर्ने निरिह एवं असहाय पात्र हो । लौके उसको खास नाम मिलन हो । ऊ माओवादी भएको आरोपमा शाहीसेनाले ज्यान लिएको व्यक्ति हो । पुष्पाञ्जली काकी फोनवाला व्यापारी हो । ऊ हँसिली, फुर्तिली तथा ठट्ट्यौली पात्र पनि हो । सुरेश काका पुष्पाञ्जली काकीको श्रीमान हो । भक्ति दाइ माओवादी भएको आरोपमा शाहीसेनाद्वारा गिरफ्तार भएको व्यक्तिको रूपमा रहेको देखिन्छ ।

मुगाधन, रमेश, रामलाल वैदेशिक रोजगारमा जलनसँगै विदेशिएका नेपाली हुन । मुगाधन जलनको अभिन्न मित्र उसले जलनलाई जेलबाट छुटाई नेपाल पठाउने अत्यन्त महत्वपूर्ण सहयोगी काम गरेको छ । रमेश र रामलाल जलनसँगै मलेसियामा थुनामा पर्दछन् । नूतन अमिसारिका र जलनकी छिमेकी एवं हितैषी साथी हो । ऊ जलन र अमिसारिकाको प्रेममा सहयोगी पात्र हो । क्याम्पस चिफ विद्वान्, विवेकी कर्तव्यपरायण, व्यक्ति हो । उसको नाम आकाश रहेको छ । उसलाई नूतनले माइती मानेकी छे । चन्द्रमा यस उपन्यासमा विगत एक वर्षअघिबाट हराएकी क्याम्पस चिफकी प्रेमीका हुन्छे । उसलाई नूतनले काठमाण्डौंमा भेट्टाएर ल्याएकी छे । नूतनको बिहेमा चन्द्रमा र क्याम्पस चिफको पुनःमिलन भएको छ ।

महवाला ताप्लेजुङ्गको तोक्मे डाँडामा मह बेचेर, गोसवाला मासु बेचेर, चुरौटे चुरा बेचेर, भरिया भारी बोकेर मतान घरे बाजेको घरमा बास बस्ने परदेशीहरू हुन । प्रहरी जवानहरू, प्रहरी हवलदारहरू र सेनाहरू सरकारी राष्ट्र सेवकहरू हुन । इन्द्र सर प्राथमिक विद्यालयको एक असल शिक्षक हो । ज्योति इन्द्र सरकी एक मात्र छोरी हो । ऊ चञ्चले स्वभावकी सानी फुच्चि छे । खोलाघरे जेठाको छोरा, मिनेको भाइ, औंसेको कान्छा छोरा, बहादुर दाइको भाइ र भक्तिप्रसादको भतिजोहरू चाहिँ नायक जलनका छिमेकीहरू हुन । उनीहरू गाउँमा कसैलाई केही नभन्ने निर्दोष पात्रहरू हुन । उनीहरू दशैंको समयमा रमाइलोको लागि सिकुवामा तास खेलिरहेको समयमा माओवादीहरूको भाटे कारबाहीमा परेका पात्रहरू हुन् । विद्यार्थीहरू मा.वि तथा नि.मा. वि.का छन् । उनीहरू माओवादी अपहरणमा परेर विभिन्न ठाउँमा पुगेका तथा विद्यालय गई पढ्न पाउने आफ्नो नैसर्गीक हक अधिकारबाट वञ्चित भएका पात्रहरू हुन । बदला र बिजुली माओवादीमा प्रवेश गरेका युवतीहरू हुन । बदला बिजुलीभन्दा बोलैली तथा माओवादी पार्टीको बारेमा धेरै जानेकी बुभुकेकी छे । उसले अमिसारिकालाई पनि पार्टीमा प्रवेश गरी सहयोग गर्न आग्रह गरेकी छे । निशा एक अधबैसे महिला हो । ऊ जंगलमा बाखा चराउन गएकी छोरी जंगलमा नै मृत अवस्थामा फेला परेका दिनदेखि बहुलाएकी छे । निशाकी छोरी जंगलमा न आर्मीले न माओवादीले कसले हो मारेको मृत अवस्थामा फेला परेकी पात्र हो । रमा ठूली बहुलाएकी महिलाकी छिमेकी हो ।

बुढी बोजू पनि बहुलाएकी महिलाकी छिमेकी हो । उनको आँखाको वल्लो छेउ, पल्लो छेउ कुनामा र मुखको वरिपरि चाउरी परेको छ । बुढो मान्छे जलन र अमिसारिका नूतनको बिहेमा जाँदा बाटोमा भेट भएको पात्र हो । उसका दुई छोराहरू रहेका छन् । दुबै छोराहरूले घरबार बसालेका छैनन् । जेठो छोरा सेनामा भर्ती भएको निकै वर्ष भएता पनि मय्यो या बाँचेको छ पत्ता नभएको पात्र हो । कान्छो छोरा पनि केहि वर्षअघि माओवादीमा गएको छ । ऊ पनि तीन महिनाबाट बेखबर रहेको पात्र हो । उसको उमेर साठी वर्ष जतिको रहेको देखिन्छ । धारामा पानी थाप्न आएका तीन-चार जना महिलाहरू पनि रहेका छन् । बोस जलनको कम्पनी मालिक हो । सुशिला, मनराज बाजे, मनराज बाजेका चार छोरा, दुई छोरी, श्रीमती, सुकमतीका छोरा, छोरी, श्रीमान, मुगाधनका बाबु, आमा, दाजु, भाइ, विरेनको बाबु, इन्द्र सरकी श्रीमती, रामानन्दे कान्छा, टेम्के र मानसिंका बाबु, आमा, दाजु, भाइ, मन्त्रि, राजा, माझघरे जेठी, माझघरे जेठीकी नातिनी, बुहारी, केराबारी दिदी, क्याप्टेन बाजेको बुहारी, लाहुरेनी बोजू, उसको छोरा, एयर होस्टेजहरू, अमिसारिकालाई लिन आएका उसका साथीहरू चर्चामा मात्रै आएका छन् तर खास भूमिकामा नदेखिएका पात्रहरू हुन् ।

यसरी औपन्यासिक कार्यगत भूमिकाका आधारमा हेर्दा यस उपन्यासलाई पात्र-बहुल उपन्यास भन्नु पर्ने हुन्छ । यस उपन्यासमा स्थिर र गतिशील गरी दुई किसिमका पात्रहरू समाविष्ट रहेका छन् । जसले मानव समाजका यथार्थ मानवीय पात्रको प्रतिनिधित्व गरेको छ ।

## ५.६ निष्कर्ष

पात्रको चारित्रिक प्रवृत्तिगत दृष्टिले हेर्दा आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य र युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासका पात्रहरू परिवर्तनशील-अपरिवर्तनशील, स्थिर-गतिशील, बद्ध-मुक्त सबै प्रवृत्तिका देखा पर्दछन् । यी प्रवृत्तिका मानिसहरू वास्तविक संसारमा पाइने हुँदा तिनै मानिसका चारित्रिक अध्ययनबाट उपन्यासकार राईले मञ्जु र दिनेश, सविन र अर्चना, जलन र अमिसारिका आदि पात्र उपन्यासहरूमा सृजना गरेका छन् । औपन्यासिक पात्रको चारित्रिक विश्लेषण गर्ने प्रणालीलाई अंगाली सामाजिक यथार्थता र मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाई उपन्यासकार राईले नेपाली उपन्यासको पात्रविधानलाई थप मलजल गर्ने काम गरेका छन् । जे होस् औपन्यासिक पात्रविधानको प्रसङ्गमा आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य र युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासहरू सफल उपन्यास हुन् ।



## छैठौं परिच्छेद

### निष्कर्ष तथा उपसंहार

वि.सं.२०३८ साल मंसिर २८ गते पाँचथरको भालुचोकमा जन्मिएका के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' ले प्रारम्भिक शिक्षा घरदेखि सुरु गरे । उनले औपचारिक शिक्षा १० कक्षासम्मको मात्र लिए पनि औनौपचारिक शिक्षाका माध्यमबाट भने उनको शैक्षिक स्तरमाथि नै रहेको छ । उनले जीवनमा नोकरी, कृषि, व्यापार-व्यावसाय र वैदेशिक रोजगार रहेर आर्थिक उपार्जन र आयआर्जन गरेका छन् । उनको साहित्य सिर्जना कार्य पनि यी पेशा व्यावसाय सँगसँगै अधि बढेको देखिन्छ । सिर्जना र लेखन क्षेत्रमा उनले आफ्नो सम्पूर्ण समय दिन नपाए पनि जीवनको प्रमुख अभिरूचीको क्षेत्र साहित्य सिर्जना नै रहेको देखिन्छ ।

उनले आफ्नो पेशा व्यावसायसँगै सामाजिक जीवनबाट सिकेका, जानेका, भोगेका र छोटै उमेरमा अनुभव बटुलेर साहित्य सिर्जना र समाजसेवाका क्षेत्रमा धेरै महत्वपूर्ण योगदान दिएका छन्, समय अर्पेका छन् । 'सिर्जन शिरीष'ले साहित्य सिर्जना, समाजसेवा, विभिन्न साहित्यकार तथा विद्वानका कृति अध्ययन गरी सादा जीवन बिताउन चाहन्छन् । उनले विद्यार्थी जीवनदेखि नै साहित्य क्षेत्रमा आकर्षित भएर विभिन्न भित्ते पत्रिका र हवाई पत्रिकामा आफ्ना लेख रचनाहरू प्रकाशित गराएका छन् ।

के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष' बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व हुन् । उनले कविता, गजल, मुक्तक, कथा आदि विधामा कलम चलाएका छन् । कविता विधाका माध्यमबाट साहित्यिक फाँटमा उदाएका राईले विविध विधामा कलम चलाए तापनि उपन्यास विधामा विशेष रूपमा आकर्षित भई तीन वटा सामाजिक परिवेशका उपन्यास लेखेका छन् । उपन्यास लेखनमा उनको कलम साहित्यकार रूपनारायण सिंहको भ्रमर (१९९३), रूद्रराज पाण्डेको रूपमती (१९९१), लिलाबहादुर क्षेत्रीको बसाइँ (२०१४), गोविन्दबहादुर गोठालेको पल्लो घरको भ्याल (२०१६), विजय मल्ल को अनुराधा (२०१८), विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको तीन घुम्ती (२०२५), लैनसिंह

वाङ्मेलको मुलुक बाहिर (२००४), नारायण वाग्लेको पल्पसा क्याफे, प्रदिप नेपालको देउमाइको किनार, खगेन्द्र संग्रौलाको आमाको छटपटी, कृष्ण धारावासीको राधा आदिबाट विशेष प्रभावित भएको पाइन्छ। विभिन्न पत्रपत्रिकामा लेख रचना प्रकाशित गर्दै आएका राईका पुस्तकाकार कृतिहरू आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) रहेका छन्। उपन्यास लेखनका क्षेत्रमा विशेष दखल हासिल गरेका राईले हालसम्म तीन वटा उपन्यास सिर्जना गरि आफुलाई एक सफल उपन्यासकारको रूपमा उभ्याउन सफल भएका छन्। युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) लेखनपछि भने उनको उपन्यास लेखनको क्रममा भने पूर्णविराम लागेको देखिन्छ। त्यसयता उनी विभिन्न पारिवारिक भ्रमेला, सामाजिक कार्यमा बढी सक्रिय भएको पाइन्छ। उनले पत्रपत्रिकामा फुटकर लेख, रचना, गीत, मुक्तक र कथा जस्ता विधामा कलम चलाइरहेको भेटिन्छ।

‘सिर्जन शिरीष’ को प्रथम प्रकाशित उपन्यास आवेग समाजप्रतिको पहिलो दृष्टिकोण हो। यस उपन्यासमा प्रयोग गरिएका पात्र दिनेश, मञ्जु, दिलसा, रञ्जना, शोभाका माध्यमबाट समाजका किशोर किशोरीहरूको दिनचर्या, सोचाई, बुझाई र काम गराईलाई नजिकबाट नियाल्ने प्रयास गरिएको छ। उनीहरूका सकारात्मक र नकारात्मक दुबै भावनालाई केही मात्रामा नियाल्न सफल भएको यो कृतिमा प्राकृतिक प्रकोप, सामाजिक विकृति आदिले अनाथ र टुहुरा बनेका बालबालिकाहरूमा अपरिपक्व सोचाइ, निर्णय गराई र कर्मले निम्त्याएको वियोग र वेदना मुखरित भएको पाइन्छ। बाढी, पहिरो, भू-क्षयका कारण आमा बुबा गुमाई अनाथ र टुहुरा भएका बालबालिकाहरूमाथी उपन्यासमा प्रयोग गरिएको पात्र बैकुण्ठे साहुजस्ता सामन्ती वर्गले मौकाको फाइदा उठाई धन सम्पत्ती जफत गरेर बेहाल भएको व्यथा प्रस्तुत गरिएको छ। यस उपन्यासमा रामु, शोभा जस्ता अनाथ र टुहुरा बालबालिकाले बाल्यकालबाटै सामान्य शिक्षा आर्जनबाट वञ्चित भई कुल्ली काम गर्नु परेको र उनीहरू जस्तै बालबालिकाले उनीहरूलाई सहयोग गरेको देखाइएको छ। किशोर अवस्थामा अरू बालबालिकालाई सबैले राम्रो भनेको, माया गरेको तर आफुहरूलाई भने कसैले वास्ता नगरेको अवस्थामा बाल मस्तिष्कमा बदलाको भावना प्रतिबिम्बित

भएको हुन्छ । उनीहरूले मौका पाउनसाथ अनावश्यक सल्लाह दिई मञ्जु र दिनेशको सुन्दर प्रेम जोडीको बन्धन टुटाइदिन सफल हुन्छन् । त्यसैले अरू सबै जना रूँदा उपन्यासमा प्रयुक्त कुख्यात बदमास पात्र लिला जस्ता हाँस्ने गर्दछन् ।

यसरी यो उपन्यास समाजका सूक्ष्म मानसिकता र विषयवस्तुको उठान गरि लेखिएको वियोगान्त उपन्यास हो । यस उपन्यासमा सामाजिक विषयवस्तु उठान गरी बालमनोविज्ञानको प्रयोग गरिएको छ । यस उपन्यासका माध्यमबाट हेर्दा उपन्यसकार के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'मा सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार, पवित्र प्रेमको उपासना, पात्रको मनोविश्लेषण, सरल भाषाशैलीको प्रयोग जस्ता प्रवृत्तिहरू पाइन्छन् । यस उपन्यासमा प्रमुख, सहायक, गौण, स्त्री, पुरुष, गतिशील, स्थिर, मञ्चीय, नेपथ्यीय, बद्ध, मुक्त जस्ता भूमिका निर्वाह गर्ने पात्रहरू प्रयोग गरिएको छ ।

'सिर्जन शिरीष' को दोस्रो औपन्यासिक कृति निर्दोष कैदीको रहस्यमा सविन, अर्चना जस्ता समाजका गरीब तथा निमुखा श्रमजीवी वर्ग प्रमुख पात्रका रूपमा रहेका छन् । उपन्यासमा प्रयुक्त पात्र दिलमान जस्ता धनी र सामन्ती वर्गले गरीबलाई शोषण, उत्पीडन र शासन गरेको, गरीबले पसिना बगाएको श्रमको उचित मूल्य नदिई श्रम शोषण गरी मुनाफा खाएर बसेका छन् भन्ने ग्रामीण क्षेत्रको यथार्थ वस्तुस्थिति प्रस्तुत गरिएको छ । ग्रामीण समाजमा देखिने गरेको वर्ग विभेद, धनी वर्गको शासन र शोषणलाई सूक्ष्म रूपमा केलाउँदै यस उपन्यासमा गरीब वर्गलाई सकारात्मक र धनी वर्गलाई नकारात्मक पात्र पक्षका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । उपन्यासमा धनी वर्गले सोझा, सीधा र निमुखा जनतालाई आफ्नो कब्जामा लिएका छन् । गरीब वर्गलाई धन, धाक र रवाफका प्रभावले थिच्ची मनपरि गर्ने सामन्ती प्रवृत्तिको अन्त्य हुने कुरा उपन्यासमा प्रस्तुत गरिएको छ । यस्ता प्रवृत्तिको घर समाज सबैतिर विरोध हुने र गरिने आदर्शवादी दृष्टिकोण यस कृतिमा रहेको पाइन्छ । उपन्यासको प्रयुक्त सविन, अर्चना, नीता, सन्देश, भोटु, बाबा (नीताको श्रीमान) जस्ता सत् पात्रले सुरुमा जस्तोसुकै दुःख पीडा भोग्नु परे पनि अन्त्यमा सफलता पाएको र सुरुमा दिलमान जस्ता असत् पात्रले जस्तो सुकै सुखसयल र मोजमस्ति गरे पनि अन्त्यमा असफलता पाएको देखाइएको छ । यस उपन्यासमार्फत आदर्शवादी समाज निर्माणका लागि सत्

पात्रको जीत र असत् पात्रको हार भएको देखाउन खोजिएको छ । राईको यो एक संयोगान्त उपन्यास हो । यसरी यस उपन्यासका माध्यमबाट उपन्यासकार के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'मा सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार, सामाजिक असमानता र विकृतिको विरोध, तराई, पहाड र भारतीय परिवेशको चित्रण, पात्रको मनोविश्लेषण, प्रकृति चित्रण, सरल भाषाशैलीको प्रयोग जस्ता प्रवृत्तिहरू पाउन सकिन्छ । यस उपन्यासमा प्रमुख, सहायक, गौण, स्त्री, पुरुष, गतिशील, स्थिर, मञ्चीय, नेपथ्यीय, बद्ध, मुक्त जस्ता भूमिका निर्वाह गर्ने पात्रहरू प्रयोग गरिएको छ ।

त्यसैगरी 'सिर्जन शिरीष'को तेस्रो औपन्यासिक कृति युद्धले खोसेको प्रेम घटना र चरित्र मिश्रित उपन्यास हो । यस कृतिमा दश वर्षे महान् जनयुद्धमा तत्कालीन शाही नेपाली सेना र नेकपा माओवादीको जनमुक्ति सेनाबीचको द्वन्द्वले निम्त्याएको करुण कहानी प्रस्तुत गरिएको छ । सर्वसाधारण जनता शाही सेना र जनसेनाको दोहोरो मारमा पर्दा खासगरी गाउँ बस्तीबाट उपन्यासमा प्रयुक्त पात्र जलन, मुगाधन, रमेश, रामलाल जस्ता युवावर्गहरू सहर तथा विदेश पलायन भएको, जलनका बाबु-आमा, मतानघरे बाजे, बुढी बोजू, बाजे जस्ता वृद्धवृद्धा, निशाकी छोरी, स्कूले विद्यार्थीहरू जस्ता बालबालिकाहरूको जीवन कष्टकर बनेको, अनाथ, टुहुरा र विधवाको संख्या दैनिक बढेको उल्लेख गर्दै समाजका टेम्के र मानसिं जस्ता शोषक र सामन्त वर्गहरू नै उक्त जनयुद्धमा संलग्न भई जनकारवाहीबाट बचेको र उल्टै सर्वसाधारण जनतालाई चन्दा माग र खोलाघरे जेठाको छोरा, बहादुर दाइको छोरा, मिनेको भाइ, औंसे कान्छाको छोरा जस्ता पात्रहरूलाई भाटे कारवाही गरी दुःख दिएको यथार्थ चित्रण गरिएको छ । टेम्के र मानसिं जस्ता असत् पात्रहरूले जबरजस्ती चन्दा असुली र पैसाको पोको बोकी फरार हुने ती शोषक वर्गका प्रतिनिधिहरू आफ्नो वर्गीय चरित्रअनुसारको अवसरवादी चरित्र देखाएर जनयुद्धभित्र घुसेर पनि आफ्नो कालोधन्दा र शोषक प्रवृत्तिलाई निरन्तरता दिन सफल भएको, क्रान्तिको उपहास गरी पवित्र प्रेमका पूजारी जलन र अमिसारीकाको प्रेम रथ युद्धको वाणले पल्टाइदिएको तथ्य उजागर गरेको छ । यसरी यस उपन्यासमा माओवादी जनयुद्धमा गलत प्रवृत्तिका मानिसहरूको अस्वभाविक प्रवेश गराई लडाकु र कार्यकर्ताको संख्या वृद्धि गरेको र

राजसंस्था तथा तत्कालीन सरकारले शान्ति सुरक्षा, अमन चयन कायम र जनताको जीउ धनको सुरक्षा गर्ने नाममा नेपाली सेनाको परिचालन गरिदा जनता दोहोरो मारमा परी हत्या, हिंसा बढेको, जनताले शान्तिको स्वास फेर्न नपाएको, आफ्नो उद्योग व्यावसाय र कृषि कर्म गर्न नपाएको यथार्थ प्रस्तुत गरिएको छ । उनले यो उपन्यासमार्फत व्यक्ति, समाज र राष्ट्रलाई राजनीतिक द्वन्द्वको छिटो अन्त्य र दिगो शान्तिको कामना गरेका छन् । यसरी यो उपन्यास राईको दोस्रो वियोगान्त उपन्यास हो । यस उपन्यासका माध्यमबाट उपन्यासकार के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष'मा सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार, सामाजिक विकृति र असमानताको विरोध, जनयुद्धको चित्रण र शान्तिको कामना, प्रकृति चित्रण, सरल भाषाशैलीको प्रयोग, चरित्र चित्रणमा जोड जस्ता औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू पाइन्छन् । यस उपन्यासमा प्रमुख, सहायक, गौण, स्त्री, पुरुष, गतिशील, स्थिर, मञ्चीय, नेपथ्यीय, बद्ध, मुक्त जस्ता भूमिका निर्वाह गर्ने धेरै पात्रहरू प्रयोग गरिएका छन् ।

यसरी के.पि.राई 'सिर्जन शिरीष' ले रचना गरेका **आवेग (२०५९)**, **निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१)** र **युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४)** उपन्यासमा सामाजिक विषयवस्तुको प्रयोग गरी त्यसलाई यथार्थपरक ढंगले प्रस्तुत गरेका छन् । उनले प्राकृतिक प्रकोपमा परेर घरबार र अभिभावकविहीन भई बाँचेका दिनेश र मञ्जू जस्ता किशोर किशोरीले भोग्नु परेका दुःख पीडा र उनीहरूले आवेगमा गरेका निर्णय, सामाजिक विकृति र विसंगतिको आधार, सामन्ती क्रियाकलाप, बलात्कार, हत्या, हिंसा तथा राजनीतिक द्वन्द्वले निम्त्याएको सामाजिक, दुरावस्थाको चित्रण आफ्ना कृतिमा गरेका छन् । यसरी हेर्दा उनले उपन्यास लेखनमा कुनै नौलो आयाम दिन सकेका छैनन् । पुरानै मूल्य, मान्यतामा र प्रवृत्तिमा आधारित भइ सामाजिक यथार्थवादको चित्रण गर्न सफल भएका छन् । यसरी राईलाई नेपाली उपन्यास लेखन परम्परामा मध्यम स्तरका उपन्यासकारका रूपमा चिनाउन सकिन्छ ।

**आवेग (२०५९)**, **निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१)** र **युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४)** उपन्यासहरूका श्रष्टा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' नेपाली उपन्यास साहित्यका एक सफल उपन्यासकार हुन् । उनका उपन्यासहरूले कुनै नौलो आयाम नदिए पनि पुरानै

औपन्यासिक प्रवृत्ति, लेखन र विचारलाई ग्रहण गर्दै नेपाली उपन्यास परम्परालाई मौलाउनमा ठूलो मद्दत पुऱ्याएका छन् । सामाजिक यथार्थता र मनोविश्लेषणका आधारमा पात्रको चारित्रिक विश्लेषण गर्नमा उनका उपन्यासहरू सक्षम छन् । मान्छेका अनेक भाव, ग्रन्थी, वैचारिक मान्यता तथा सामाजिक मान्यताहरू हुन्छन् र तिनलाई राईका पात्रहरूले सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक ढङ्गबाट राम्ररी चिनाएका छन् । यसै पक्षलाई विशेष महत्व दिई प्रस्तुत शोधपत्रले राईका तीन वटै उपन्यासका पात्रविधानलाई औपन्यासिक पक्षको रूपमा प्रस्तुत गरेर हेरिएको छ ।

यस शोधपत्रमा आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासका पात्रविधान अन्तर्गत पात्र चयन, पात्रको चारित्रिक वर्गीकरणको आधार जस्तै: औपन्यासिक भूमिकाको आधार, लिङ्गगत आधार, स्वभावगत आधार, प्रवृत्तिगत आधार तथा कृतिगत आसन्नता र आवद्धताको आधार आदिका साथै उपन्यासमा प्रयोग भएका सम्पूर्ण पात्रहरूको चारित्रिक विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ । यस पात्रविधानबाट उपन्यासकारले उपस्थित गराएका पात्रहरूले मानव चरित्रलाई कुन हदसम्म प्रतिनिधित्व गर्न सकेका छन् र ती मानव प्रतिनिधि पात्रहरू आजको सन्दर्भमा कुन हदसम्म स्वीकार्य र विश्वसनीय छन् भन्ने कुरोलाई यस शोधपत्रले स्पष्ट पार्न खोजेको छ ।

आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासका मूल तथा केन्द्रिय, सहायक र गौण औपन्यासिक भूमिकालाई अँगाल्ने पात्रहरूमध्ये मूल पात्रहरूको भूमिका महत्वपूर्ण रहेको छ । उनीहरूकै चारित्रिक विशेषता तथा कर्म अनुसार भोग्नु परेको फलका कारणबाट उपन्यासको मूल शीर्षकको नामाकरण गरिएको हुँदा शीर्षकको सार्थकता भल्किएको छ । औपन्यासिक मूल शीर्षकलाई उपन्यासका प्रमुख पात्रहरूको कृतिगत भूमिकाले अभि सार्थकता प्रदान गरेको छ ।

पात्रको चारित्रिक प्रवृत्तिगत दृष्टिले हेर्दा उपन्यासका पात्रहरू परिवर्तनशील-अपरिवर्तनशील, स्थिर-गतिशील, बद्ध-मुक्त सबै प्रवृत्तिका देखा पर्दछन् । यी प्रवृत्तिका

मानिसहरू वास्तविक संसारमा पाइने हुँदा तिनै मानिसका चारित्रिक अध्ययनबाट उपन्यासकार राईले मञ्जु र दिनेश, सविन र अर्चना, जलन र अमिसारिका आदि पात्र उपन्यासहरूमा सृजना गरेका छन् । औपन्यासिक पात्रको चारित्रिक विश्लेषण गर्ने प्रणालीलाई अंगाली सामाजिक यथार्थता र मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाई उपन्यासकार राईले नेपाली उपन्यासको पात्रविधानलाई थप मलजल गर्ने काम गरेका छन् । जे होस् औपन्यासिक पात्रविधानको प्रसङ्गमा आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१) र युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासहरू सफल उपन्यास हो भनी ठोकुवा गर्न सकिन्छ ।



## जिज्ञासु शोधकर्ताका लागि केही सम्भावित शोधशीर्षकहरू

के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' नेपाली साहित्यका फाँटमा खास गरेर उपन्यास विधामा ख्याति कमाउन सफल भएका छन् । उनका सम्बन्धमा जिज्ञासु शोधकर्ताहरूलाई निम्न शोध शीर्षकहरू संभावित देखिन्छन् ।

१. सामाजिक उपन्यासकारका रूपमा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का उपन्यासहरूको विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
२. परिवेश चित्रणका दृष्टिले के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का रचनाहरूको अध्ययन ।

## शोधसार

### शोधपत्रको शीर्षक

के. पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को उपन्यासमा पात्रविधान ।

### शोधपत्रको प्रयोजन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस इलाम, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय, नेपाली विभाग अन्तर्गत नेपाली विषयको स्नातककोत्तर तह, दोस्रो वर्षको दशौँ पत्रको प्रयोजनको लागि प्रस्तुत ।

### शोध निर्देशक

उप-प्राध्यापक श्री रामप्रसाद गुरागाई, नेपाली विभाग, प्रमुख इलाम ।

शोधार्थी : रामकला कार्की

शैक्षिक सत्र : २०६५/०६७

प्रस्तुत मिति : २०७१-०६-०८

शोधशीर्षक : के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' को उपन्यासमा पात्रविधान रहेको छ ।

२०३८ साल मंसिर २८ गते जन्मिएका के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष' २०५९ सालमा आवेग शीर्षकको उपन्यासबाट नेपाली उपन्यास साहित्यमा कलम चलाउन सुरु गरेका हुन् । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'ले हालसम्ममा तीन वटा उपन्यासहरू क्रमशः आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१), युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) प्रकाशित गरेका छन् । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का यी तीन वटै औपन्यासिक कृतिहरूमा पात्रविधानको अध्ययन यस शोधपत्रमा गरिएको छ ।

उपन्यासकार के. पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का आवेग (२०५९), निर्दोष कैदीको रहस्य (२०६१), युद्धले खोसेको प्रेम (२०६४) उपन्यासमा पात्रविधानको अध्ययन गर्ने क्रममा यस शोधपत्रलाई जम्मा ६ परिच्छेदमा बाँडी परिशिष्ट पनि समावेश गरिएको छ ।

प्रस्तुत शोधपत्रको पहिलो परिच्छेदमा शोधपरिचय मूल शीर्षक राखिएको छ । त्यसका उपशीर्षकहरूमा क्रमशः शोधपत्रको शीर्षक, शोधकार्यको प्रयोजन, विषय परिचय, समस्याकथन, शोधपत्रको उद्देश्य, पूर्वकार्यको समीक्षा, शोधकार्यको औचित्य,

महत्व र उपयोगिता, प्राक्कल्पना, अध्ययनको सीमाङ्कन, सामग्री सङ्कलन विधि, शोधविधि र शोधपत्रको रूपरेखा रहेका छन् ।

यस शोधपत्रको दोस्रो परिच्छेदमा साहित्यकार के. पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको संक्षिप्त अध्ययन मूल शीर्षक राखिएको छ । यसका उपशीर्षकहरूमा पृष्ठभूमि, वंशपरम्परा, जन्म र जन्मस्थान, बाल्यकाल र शिक्षादीक्षा, पारिवारिक स्थिति, पेशा व्यावसाय, व्यक्तित्वका अन्य पक्षहरू अन्तर्गतका पक्षहरू राखिएका छन् । जसमा शारीरिक व्यक्तित्व, स्वभाव र रूची, साहित्यक व्यक्तित्व र साहित्येतर व्यक्तित्वको समावेश गरिएको छ । यसै परिच्छेदमा पुस्तकाकार कृतिहरू उपशीर्षक पनि राखिएको छ ।

यस शोधपत्रको तेस्रो परिच्छेदमा उपन्यासको सौद्धान्तिक मान्यता र परम्परा मूल शीर्षक राखिएको छ । यसका उपशीर्षकहरूमा उपन्यासको उद्भव, परिभाषा, विधागत स्वरूप, उपन्यासको आधारभूत तत्वहरू समावेश गरिएका छन् । उपन्यासको आधारभूत तत्वहरू उपशीर्षक अन्तर्गत कथावस्तु, चरित्रचित्रण, परिवेश, भाषाशैली, द्वन्द्व, दृष्टिविन्दु, कौतूहल, उद्देश्य, कथोपकथन वा संवाद समावेश गरिएको छ । उपन्यासको वर्गीकरण उपशीर्षक अन्तर्गत कथानकको आधारमा वर्गीकरण, जसमा घटना प्रधान उपन्यास, चरित्र प्रधान उपन्यास, घटना र चरित्र मिश्रित उपन्यास र प्रणय प्रधान उपन्यास रहेका छन् । शैलीका आधारमा वर्गीकरण, जसमा वर्णनात्मक उपन्यास, आत्मकथात्मक उपन्यास, पत्रात्मक उपन्यास, डायरी उपन्यास, चेतन प्रवाह शैलीका उपन्यास रहेका छन् । विषयवस्तुको स्रोतका आधारमा उपन्यासको वर्गीकरण, साहसिक तथा जासुसी उपन्यास, पौराणिक तथा मिथकीय उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, समाजिक उपन्यास, आञ्चलिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, विज्ञानमूलक उपन्यास, जीवनीमूलक उपन्यास रहेका छन् । यसै परिच्छेदमा अर्को उपशीर्षक उपन्यासको महत्व, नेपाली उपन्यासको विकासक्रम र धारागत प्रवृत्तिहरू समावेश गरिएको छ । नेपाली उपन्यासको विकासक्रम अन्तर्गत प्राथमिक काल, माध्यमिक काल र आधुनिक काल राखिएको छ । आधुनिक काल अन्तर्गत आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा, स्वच्छन्दतावादी धारा, सामाजिक यथार्थवादी धारा, ऐतिहासिक

यथार्थवादी धारा, अतियथार्थवादी धारा, आलोचनात्मक यथार्थवादी धारा, नारीवादी धारा, प्रकृतवादी धारा, मनोविश्लेषणवादी धारा, अस्तित्ववादी धारा, प्रगतिवादी धारा, मिथकीय धारा उपशीर्षक राखिएको छ ।

यस शोधपत्रको चौथो परिच्छेदमा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन, प्रवृत्ति, योगदान र उपन्यासकारिता शीर्षक राखिएको छ । यस शीर्षकमा आमुख, साहित्य लेखनमा प्रेरणा र प्रभाव, साहित्य लेखनको थालनी, के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्य यात्राको चरण विभाजन उपशीर्षकहरू रहेका छन् । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को साहित्य यात्राको चरण विभाजन उपशीर्षक अन्तर्गत पूर्वार्द्ध चरण र उत्तरार्द्ध चरण उपशीर्षक समावेश गरिएका छन् । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का प्रवृत्तिहरू उपशीर्षक अन्तर्गत समाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार, सामाजिक विकृति र असमानताको विरोध, पात्रको विद्रोहीपन, तराई, पहाड र भारतीय परिवेशको चित्रण, जनयुद्धको चित्रण र शान्तिको कामना, पवित्र प्रेमको उपासना, पात्रको मनोविश्लेषण, चरित्र चित्रणमा जोड, संयोगान्त तथा वियोगान्त उपन्यास लेख्ने उपन्यासकार, प्रकृति चित्रण, सरल भाषाशैलीको प्रयोग राखिएको छ । यस शीर्षकमा नेपाली साहित्यमा के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को योगदान, के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासकारिता उपशीर्षक पनि समावेश गरिएको छ । के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासकारिता अन्तर्गत विषयवस्तुको प्रयोग, पात्र विधान, परिवेश विधान, भाषाशैली, आयामको प्रयोग, शीर्षक विधान, उपन्यासको केन्द्रिय कथ्य, पात्रको मनोविश्लेषण उपशीर्षक रहेका छन् ।

यस शोधपत्रको पाँचौं परिच्छेदमा उपन्यासकार के.पि. राईको उपन्यासमा पात्रविधान शीर्षक राखिएको छ । यस शीर्षकमा पात्र र तिनको चरित्र, चरित्रको वर्गीकरणका आधारमा: औपन्यासिक भूमिकाका वा कार्य, लिङ्ग, स्वभाव, प्रवृत्ति, आसन्नता, आवद्धता उपशीर्षक रहेका छन् । माथि वर्णित प्रमुख आधारहरूलाई तालिकीकरण गरी के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'का आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य, युद्धले खोसेको प्रेम उपन्यासका पात्रहरू र तिनका चरित्रलाई सोही आधारमा वर्गीकरण गरेर अध्ययन गरिएको छ । तालिकामा प्रस्तुत आवेग, निर्दोष कैदीको रहस्य, युद्धले खोसेको

प्रेम उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरूको चरित्र विश्लेषण उपशीर्षकहरू समावेश गरिएका छन् ।

छैटौँ परिच्छेदमा निष्कर्ष तथा उपसंहार शीर्षक दिएर अधिल्ला परिच्छेदहरूमा अध्ययन र विश्लेषण गरिएको विषयवस्तु र सामग्रीलाई सारांशको रूपमा समावेश गरिएको छ । त्यस पछि सम्भावित शोधशीर्षकहरू समावेश गरिएका छन् । सन्दर्भग्रन्थ सूची शीर्षकमा यो शोधपत्र तयार पार्ने क्रममा प्रयोग गरिएका पाठ्यपुस्तकहरूको सूची राखिएको छ ।

यस शोधपत्रको अन्तिम खण्डमा परिशिष्ट भाग राखिएको छ । यसमा (क) मा पारिवापरिक फोटो समावेश गरिएको छ । (ख) मा पाँचथर जिल्लाको नक्सा, जसमा उपन्यासकारको जन्मस्थानमा गाडा मसि गरिएको छ ।

## सन्दर्भग्रन्थ सूची

- खतिवडा, गणेश, के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन, विश्लेषण र मूल्याङ्कन, अप्रकाशित, स्नातकोत्तर शोधपत्र, नेपाली विभाग, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम, २०६६ ।
- नेपाल, निर्मला, के.पि. राई 'सिर्जन शिरीष'को उपन्यासकारिताको अध्ययन र विश्लेषण, अप्रकाशित, स्नातकोत्तर शोधपत्र, नेपाली विभाग, महेन्द्ररत्न बहुमुखी क्याम्पस, इलाम, २०७० ।
- प्रधान, कृष्णचन्द्रसिंह, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकारहरू, ललितपुर : साभा प्रकाशन, २०६१ ।
- बराल, कृष्णहरि, एटम नेत्र, उपन्यास सिद्धान्त र नेपाली उपन्यास, ललितपुर : साभा प्रकाशन, २०६६ ।
- बस्नेत, कृष्णबहादुर, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकारहरू, काठमाण्डौं: दीक्षान्त पुस्तक भण्डार, २०५९ ।
- राई, इन्द्रबहादुर, नेपाली उपन्यासका आधारहरू, ललितपुर : साभा प्रकाशन, २०६७ ।
- राई, के.पि., आवेग, भाषा, विर्तामोड : न्यू पाथिभरा छापाखाना, २०५९ ।
- राई, के.पि., निर्दोष कैदीको रहस्य, भाषा, चारपाने : शुसिल स्क्रिन प्रिन्टिङ प्रेस, २०६१ ।
- राई, के.पि., युद्धले खोसेको प्रेम ..लेखक स्वयम्, २०६४ ।
- सुवेदी, राजेन्द्र, नेपाली उपन्यास: परम्परा र प्रवृत्ति, ललितपुर : साभा प्रकाशन, (२०६४) ।